

**TEXT PROBLEM
WITHIN THE
BOOK ONLY**

UNIVERSAL
LIBRARY

OU_182473

UNIVERSAL
LIBRARY

OUP—707—25-4-81—10,000.

OSMANIA UNIVERSITY LIBRARY

Call No. H82
C53D
Accession No. H3079
Author चिंजीत
Title दादी मां जागी - 1956.

This book should be returned on or before the date last marked below

दादी मां जागी

चिरंजीत

नव साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली-१

प्रथमावृत्ति

१९५६

Checked 1969

मूल्य तीन रुपया

Checked 1969

प्रकाशक : लोक प्रकाशन, नई दिल्ली

मुद्रक : दीपक प्रिंटिंग प्रेस, गली हकीम बका, चावडी बाग

श्री रामधारीसिंह 'दिनकर'

को

सादर

दो शब्द

अपने मित्र के विषय में लिखना अपने बारे में लिखने से कम कठिन नहीं है। हम तो समझते हैं कि कुछ अधिक ही है। और फिर भूमिका के दो शब्द लिखना।

लेकिन हमें प्रसन्नता है कि प्रस्तुत संग्रह मुख्यतः हास्य-रस के नाटकों का संग्रह है और इसके लेखक हैं कवि चिरंजीत। कवि के रूप में चिरंजीत सुपरिचित हैं, लेकिन रेडियो-संसार से बाहर बहुत कम लोग जानते हैं कि वह नाटककार भी हैं। यह बात तो और भी कम लोग जानते हैं कि हास्य-रस के लिखने में उन्होंने विशेष सफलता प्राप्त की है। हाँ, जो व्यक्ति रेडियो के पास बैठने के शौकीन हैं, वह 'मास्टर सिलबिल' और 'नन्हेराम' जैसे पात्रों के प्रणेता को भुलाये भी नहीं भूल सकते। 'नया नगर' नामक धारावाहिक सामाजिक रूपक तो अपने स्वस्थ और छलछलाते हास्य के लिये बहुत ही लोकप्रिय हुआ है।

चिरंजीत उन लेखकों में से नहीं हैं, जो मात्र शब्दों से हास्य पैदा करते हैं या फूहड़पन और अश्लीलता का आश्रय लेते हैं। इसके विपरीत वह ऐसी परिस्थितियों का चित्रण करते हैं, जो स्वस्थ और स्वाभाविक होते हुए भी इस प्रकार घटित होती हैं कि अनायास ही हंसी का फव्वारा फूट पड़ता है, जैसे 'साथ वाला मकान' और 'अख-बारी विज्ञापन' में। चिरंजीत के नाटक विचारों के बोझ से मुक्त और निर्द्वन्द्व हास्य से छलकते हुए होते हैं। उनका उद्देश्य स्वयं हंसना और दूसरों को हंसाना होता है। उनका लक्ष्य कोई व्यक्ति विशेष न होकर समष्टिगत कुरीतियाँ, प्रवृत्तियाँ और मूर्खताएँ होती हैं। 'दादी

माँ जागी' और 'खजाने का साँप' इस प्रवृत्ति के सबल उदाहरण हैं। पहले का लक्ष्य एक पूरा समाज और दूसरे का एक पूरा वर्ग है। पाँचवाँ नाटक 'मड़क पर' सही मानों में प्रहसन नहीं है, एक सोद्देश्य नाटक है, परन्तु इसमें भी लेखक ने प्रतिपाद्य विषय को उभारने के लिए बड़ी कुशलता से हास्य का पुट दिया है।

हिन्दी में हास्य की कमी है, स्वस्थ हास्य तो और भी विरल है, लेकिन माँग निरन्तर बढ़ती जा रही है, और भी बढ़ेगी। यन्त्र-पीड़ित इस युग में यह अनिवार्य ही नहीं, आवश्यक भी है। पर जिस प्रकार इसका अर्थ लगाया जा रहा है, वह निश्चय ही साहित्य और कला के लिए घातक है। कुछ माह पहले नई दिल्ली में एक नाटक खेला गया था। बड़ा सफल रहा। हिन्दी और अंग्रेजी, नई दिल्ली के लगभग सभी दैनिकों ने उसकी प्रशंसा की। एक अंग्रेजी दैनिक ने लिखा, "हास्य उसका उद्देश्य है। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नाटक में फूहड़ चालों का भी उपयोग किया गया है। नारियों के अधो-वस्त्रों का पूरी तरह प्रदर्शन किया गया। उनकी पके आमों से तुलना की गई। समझदार होने पर आदमी जिन शब्दों का प्रयोग करना नहीं चाहेगा, उन शब्दों का प्रयोग किया गया, लेकिन प्रेम और प्रहसन में सब कुछ चलता है, बशर्ते कि उसमें नाटक सफल हो। और नाटक सफल है।"

इस पर टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं। हमें प्रसन्नता है कि चिरंजीव के नाटक इस प्रवृत्ति के पोषक नहीं हैं। यह हिन्दी के लिए शुभ है।

इन नाटकों की एक और विशेषता की चर्चा करना असंगत न होगा। हिन्दी में नाटकों के अभाव का एक कारण यह भी है कि यहाँ बोलचाल की भाषा का प्रयोग नहीं होता। हमारा विश्वास है कि जब तक हम नाटकों में विशुद्ध साहित्यिक भाषा के प्रयोग पर जोर

देते रहेंगे, तब तक हमारे नाटक लोकप्रिय न होंगे । वही होंगे जिनकी ऊपर एक अंग्रेजी दैनिक ने प्रशंसा की है । जिस दिन हिन्दी के दो रूपों का—बोलचाल की हिन्दी तथा साहित्यिक हिन्दी का—अन्तर मिटेगा, उसी दिन हमारा नाटक-साहित्य पनपेगा । चिरंजीत की नाट्य-कला इस अन्तर को मिटाने में प्रयत्नशील है । नाटक में कल्पना और विद्वत्ता की इतनी आवश्यकता नहीं, जितनी यथार्थ, रोचकता और सहज कुतूहल की । प्रस्तुत संग्रह में इन गुणों की कमी नहीं है । हम आशा करते हैं कि इसका प्रकाशन न केवल चिरंजीत को और अधिक लिखने की प्रेरणा देगा, बल्कि इस क्षेत्र में अनेक नये लेखकों को भी जन्म देगा ।

—विष्णु प्रभाकर

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
दादी माँ जागी	... ६
खजाने का साँप	 ७३
अखबारी विज्ञापन	...१०१
साथ वाला मकान	...११७
सड़क पर	...१४५

दादी माँ जागी

पात्र-परिचय

- चौधरी रूपचन्द : दिल्ली के एक धनी-मानी ठेकेदार,
आयु ४५-४६ वर्ष ।
- दादी मां : चौधरी रूपचन्द की मां, लड़कियों की
दादी, आयु ६० वर्ष से ऊपर ।
- कमला : चौधरी रूपचन्द की सबसे बड़ी
लड़की, एक तरह से गृह-स्वामिनी,
अधिकार-सूचक मुख-मुद्रा, आयु
२६-२७ वर्ष ।
- विमला : दूसरी लड़की । प्रोफेसर, अध्ययनशील,
आयु कोई २४ वर्ष ।
- सरला : तीसरी लड़की । डाक्टर, हंसोढ़ स्वभाव,
बाल कटे हुए, आयु २२ वर्ष ।
- अमला : सबसे छोटी लड़की । नृत्य-संगीत की
शौकीन, आयु २० वर्ष ।
- कृष्णगोपाल : कमला का पति ।
- रमेशचन्द्र : विमला का होने वाला पति ।
- बब्बू : कमला का लड़का, आयु ६ वर्ष ।
- पार्वती : बब्बू की आया । आयु ३५ वर्ष ।
- सरजू : घर का नौकर ।

कवि कोमलजी, सहेलियाँ, चौकीदार इत्यादि ।

पहला दृश्य

समय प्रातः काल ७ बजे ।

स्थान—ठेकेदार चौधरी रूपचन्द की कोठी का ड्राइङ्ग रूम ।

[ड्राइङ्ग रूम की साज-सज्जा ठेकेदार-परिवार की समृद्धि और सुरुचि की सूचक है । नीचे फर्श पर बड़िया गलीचा बिछा हुआ है । गलीचे पर सोफासेट, कुर्सियाँ, तिपाइयाँ, पुस्तकों का नये डिजाइन का रैक आदि फर्नीचर करीने से सजा हुआ है । दरवाजों पर फूलदार पर्दे लटक रहे हैं । सामने वाली दीवार में एक बड़ी शीशों वाली खिड़की है, जिससे कोठी का बागीचा और टेनिस का मैदान दिखाई देता है । बाईं ओर की दीवार में दो दरवाजे । स्टेज के अग्रिम भाग-वाला दरवाजा दाई माँ के कमरे में खुलता है, और पीछे वाला रसोई और कोठी के दूसरे कमरों में । इन दोनों दरवाजों के बीचोंबीच मँटल-पीस है, जिस पर एक बड़िया रेडियो-सेट, खिलौने, फोटो, शीशा आदि सजावटी चीजें रखी हैं । मँटल-पीस के ऊपर एक बड़ी-सी घड़ी, जिसकी सूइयाँ सात का समय सूचित कर रही हैं । दाईं ओर की दीवार में स्टेज के आगे की तरफ एक दरवाजा, जो बहार के बरामदे और पोर्टिको में खुलता है । इसी दरवाजे के साथ एक छोटी-सी मेज पर टेलीफोन रखा है । दाईं और सामने वाली दीवारों के कोने में एक ज़ीना है, जो ऊपर कमला के शयनागार में जाता है । जब वहाँ उठता है, तो ड्राइङ्ग रूम की घड़ी टन-टन सात बजाती है । खिड़की से प्रातःकालीन आकाश मेघाच्छादित-सा दिखाई देता है । तेज़ हवा से ड्राइङ्ग रूम के पर्दे हिल रहे हैं । इसके साथ ही, ज़ीने के ऊपर लड़ी कमला के शयनागार के दरवाजे की ओर देखती हुई विमला, अमला और सरला के कहकहे सुनाई देते हैं । कुछ ही देर बाद

दाई माँ जागी

कमला, नाइट-सूट पहने कृष्णगोपाल को शयनागार से धकेलती है और फिर सब हंसती हुई उसे झीने पर से खींचती हुई नीचे डाइङ्ग रूम में आती हैं। तभी बाईं ओर के पिछले दरवाज़े से लड़कियों के पिता चौधरी रूपचन्द जल्दी से आते हैं।]

रूपचन्द : (आकर) अरी लड़कियो, आज सबेरे २ बेचारे कृष्ण पर क्यों धावा बोल दिया, मतलब यह कि ?

सरला : (हंसते हुए) पिता जी, सात बज गये, जीजाजी जागते ही नहीं थे।

अमला : (हंसते हुए) बड़ी मुश्किल से कमला जीजी ने सुराही का पानी उड़ेल कर जगाया।

विमला : (हंसते हुए) और जब जीजी ने बताया कि रात बिजली की कड़क के साथ बड़ी घनघोर वर्षा हुई, तो चौक कर बोले—

सरला : (कृष्ण की नकल उतारते हुए) “तो कमला, तुमने मुझे तभी जगा क्यों नहीं दिया ? तुम तो जानती ही हो कि जब बिजली कड़कती है, तो मैं सो नहीं सकता।”

(चारों लड़कियाँ फिर जोर का कहकहा लगाती हैं।)

कृष्ण : (शर्मिन्दा-सा) नहीं पिताजी, मैंने तो कहा था कि रात को...

रूपचन्द : (सोफे पर बैठते हुए) रात मैं भी नहीं सो पाया, मतलब यह कि...।

लड़कियाँ : क्यों पिता जी ?

रूपचन्द : सरला, तुमने कहा था न कि...

कृष्ण : (हंसते हुए) पिता जी, अब इसे सरला नहीं, डाक्टर साहब कहिए। अब तो यह अस्पताल में बाकायदा डाक्टर के रूप में काम कर रही हैं।

सरला : (हंसते हुए) तो जीजा जी, यदि आप मुझे डाक्टर साहब कहेंगे तो मैं आपको मुन्शी जी कहा करूंगी। (कहकहा)

कमला : (डॉक्टर) सरला !



कृष्ण : अरे भई, क्यों डांट रही हो इसे ? सरला ठीक ही तो कह रही है । विवाह से पहले इस घर में मैं मुन्शी था, विवाह के बाद भी मुन्शी हूँ, वर्ना रोज़ इतने सबेरे मुझे उठने की क्या जरूरत थी ?

कमला : (विगड़कर) तुम तो चाहते हो कि दादी माँ की तरह सदा सोये ही रहो ।

रूपचंद : (दुःखी-सा) क्या कह रही हो, बेटा ? माँ जैसी नींद भगवान किसी को न दे, मतलब यह कि पचीस वर्ष हो गये हैं माँ को अचेत पड़े। न वह ज़िन्दों में हैं, न मुर्दों में । मतलब यह कि...

सरला : पिता जी, दादी माँ को आप मुर्दा नहीं कह सकते । पचीस वर्ष से उनकी हृदय की गति ठीक है, नाड़ी ठीक है, पाचन-क्रिया ठीक है । मस्तिष्क के 'हिपोथालेमस' हिस्से पर चोट लगने से उन पर बेहोशी तारी है... ।

रूपचंद : अरे, यह डाक्टरों निदान सुनते सुनते २५ वर्ष हो गये, मतलब यह कि इस बेहोशी का कभी अन्त भी होगा ? तुमने उस दिन कहा था न की मस्तिष्क को फिर से अचानक चोट लगने से बेहोशी दूर हो जायगी ।

सरला : दिमागी बीमारियों के सभी बड़े डाक्टरों का यही मत है ।

विमला : पिता जी, कल रात में जो उपन्यास पढ़ रही थी, उसका हीरो भी इसी प्रकार...

रूपचंद : तो रात जब जब बिजली कड़की, मैं माँ के सिरहाने जाकर बैठ गया, लेकिन... मतलब यह कि

कमला : तो रात भर आप जागते रहे ?

सरला : पिता जी, आपने मुझे क्यों न बुला लिया ?

रूपचंद : बेटा, तुम्हें क्या बुलाता । मैं इसी आशा से बैठा रहा कि माँ अब भी होश में आती है, अब भी होश में आती हैं, लेकिन माँ २५ वर्षों की नींद से नहीं जागी, मतलब

यह कि.....

(दाईं ओर के दरवाज़े से बूढ़े चौकीदार का प्रवेश ।)

चौकी० : (आकर) सरकार !

कमला : क्या बात है, चौकीदार ?

चौकी० : मालकिन, स्कूल वाली नई इमारत का वह जो बेलदार है न...

कमला : हां, हां, क्या हुआ उसे ।

चौकी० : मालकिन, उसे तो कुछ नहीं हुआ, वह खबर लाया है कि रात की बरखा से नई इमारत की एक दीवार बैठ गई है ।

कमला : (चौककर) दीवार बैठ गई ? (रोष से) किशू, यह सब तुम्हारी ही गलती है । (कृष्णगोपाल सहम जाता है)

रूप० : कमला, मुझे तुम्हारी यह आदत पसन्द नहीं, मतलब यह कि हर चीज़ का दोष तुम कृष्ण के माथे मढ़ देती हो ।

कमला : पिताजी, आप हमेशा इन्हीं का पक्ष लेते हैं । कल मैंने इनसे कहा था कि ज्योंही स्कूल की इमारत तैयार हो जाय, मैंनेजिग कमेटी के हवाले कर देना । बाद में वह रहे या ढहे, हमारी बला से ।

कृष्ण० : (सहमा-सा) लेकिन कमला, इमारत का काम रात को कोई साढ़े सात बजे खत्म हुआ । उस समय मैं स्कूल की मैंनेजिग कमेटी के मैम्बरों को कहाँ से बुला कर लाता ? और फिर मुझे क्या पता था कि रात को इतने जोर की वर्षा होगी ।

कमला : (झुंझलाकर) किशू, तुम्हें तो किसी भी बात का पता नहीं रहता ।

सरला : (एकाएक घड़ी की ओर देखकर) ओह, सवा सात बज गये । मुझे तो ठीक आठ बजे अस्पताल पहुंचना है । (जाती है ।)

अमला : (एकाएक) ओह, मैं तो भूल ही गई थी । आज साढ़े आठ बजे रेडियो पर मेरा प्रोग्राम है ।

रूप० : तो बेटी, जल्दी से तैयार हो जाओ न, मतलब यह कि रेडियो-स्टेशन से गाड़ी आती ही होगी ।

अमला : अभी तैयार हो जाती हूँ ।

विमला : जीजी, आज हमारे कालेज के स्टाफ की मीटिंग है नौ बज. मैं कार ले जा सकती हूँ ?

कमला : नहीं, विमला, मैं उस टूटी हुई दीवार को अभी देखने जा रही हूँ ।

विमला : तो फिर मैं....(टेलीफोन के पास जाकर रिसीवर उठाती है, नम्बर मिलाती है और फिर धीरे से कहती है) हैलो, कौन ? रमेश ! (सुस्करा कर) मैं विमला बोल रही हूँ । क्या ? तुम्हें कोई और बात भी सूझती है ? अच्छा, सुनो, दफ्तर जाते समय इधर से होकर जाना । (टेलीफोन बन्द करके जल्दी से बाईं ओर के पिछले दरवाज़े से अन्दर जाती है ।)

कमला : किशू, तुम भी जल्दी से तैयार हो जाओ ।

किशू : (आज्ञाकारी सेवक की तरह)अच्छा । (जीने से ऊपर अपने कमरे की ओर जाता है ।)

कमला : किशू की लापरवाही के कारण दीवार दोबारा बनवानी होगी । मैं तो.....

रूपचन्द : बेटी, मैं भी तुम्हारे साथ चलूँ, मतलब यह कि...

कमला : नहीं, पिताजी, आप कष्ट न कीजिए । आसमान अभी खुला नहीं । हवा तेज होती जा रही है । हो सकता है कि बारिश फिर शुरू हो जाय । इस उम्र में अब आपको आराम करना चाहिए । ठेकेदारी के ये सब भ्रंश आप मुझ पर छोड़िये ।

रूप० : वह तो बेटी, छोड़ ही रखे है । (आइ भरकर) माँ की बीमारी के कारण, मतलब यह कि...

कमला : (अनसुनी करते हुए) चौकीदार, तू अभी तक यहीं खड़ा है ?

चौकी० : मालकिन, वह बेलदार... ।

विमला : अरे, उस की बात मैंने सुन ली । तू रसोई में जाकर सरजू से

दादी माँ जागी

कह कि जल्दी से नाश्ता तैयार कर दे । और वह आया कहाँ है ?

चौकी० : बबू को लेकर बागीचे में गई है ।

कमला : अच्छा, अच्छा ।

(चौकीदार बाईं ओर के पिछले दरवाजे से अन्दर जाता है।)

रूप० : (एकाएक उठकर) अरे, आया को तो मैं माँ के पास बैठा गया था, मतलब यह कि इस समय माँ के पास कोई नहीं । उन्हें न किसी ने दवाई पिलाई होगी, न दूध । ओह, इस घर में किसी को भी माँ की चिन्ता नहीं ।

कमला : पिताजी, यह आप क्या कह रहे हैं ? हम सभी...

रूप० : कुछ नहीं बेटी । तुम जल्दी से उस टूटी हुई दीवार को देख आओ । मैं माँ के पास जाता हूँ। (बाईं ओर के अगले दरवाजे की ओर जाते जाते रुककर) ऐं. यह भटका कैसा लगा ? (घबराकर) अरे ! यह तो सारा कमरा डोल रहा है, मतलब यह कि...

(तभी सारी कोठी के दरवाजों और खिड़कियों के बजने, भन-भनाने का शब्द सुनाई देता है । नेपथ्य में लोगों का शोर—
“भूचाल ! भूचाल !!”)

रूप० : (भयभीत-सा) राम ! राम !! राम !!!

कमला : (घबराकर) भूचाल ! ओह, इस भूचाल से कहीं स्कूल की सारी इमारत न बैठ जाय । मैंने तो उस में सीमेन्ट की जगह रेत ही रेत भरी है । पचास हजार की रकम डूब जायगी, पिताजी ।

रूप० : (भयभीत-सा) बेटी, तुम्हें रकम की पड़ी है, मतलब यह कि...
(तभी अन्दर से विमला, सरला, अमला, सरजू, चौकीदार और ऊपर जीने से कृष्णगोपाल ‘भूचाल’ ‘भूचाल’ चिल्लाते, घबराये हुए जल्दी से डाइङ्ग रूम में आते हैं ।)

कमला : (डांटकर) शोर क्यों मचा रहे हो ।

सरला : (जल्दी से) अरे, सब लोग बाहर बागीचे में भाग चलो ।

रूप० : लेकिन मां का क्या होगा ?

कमला : किशू, जाकर बब्बू को संभालो, और...

(जब सब लोग बाहर जाने के लिये दाईं ओर के दरवाजे की तरफ बढ़ते जाते हैं, तभी दादी मां के कमरे में अलमारी के जोर से गिरने और चीनी के बरतनों और शीशियों के टूटने की आवाज सुनाई देती है ।)

कमला : ऐं. यह क्या गिरा ?

कृष्ण० : लगता है, दादी मां के कमरे में...

रूप० : (घबराकर) क्या ?

(सभी हड़बड़ा कर जल्दी से बाईं ओर के अगले दरवाजे की तरफ भागते हैं ।)

रूप० : (दरवाजे से अन्दर का दृश्य देखकर बेदम-सा) हे भगवान, यह मैं क्या देख रहा हूं, मतलब यह कि.....

कमला : ओह, भूचाल के झटके से कहीं अलमारी दादी मां के ऊपर...

रूप० : (और भी बेदम-सा होकर) मां ! (जल्दी से कमरे के अन्दर जाता है । उसके पीछे घर के दूसरे लोग भी । वहीं से बातचीत सुनाई देती है ।) अरी लड़कियो, क्या देख रही हो, मतलब यह है कि अलमारी को उठाने में मेरी मदद करो न । कृष्ण, सरजू, चौकीदार, अरे सभी जोर लगाओ । कृष्ण, तुम ऊपर से उठाओ ।

(लगता है, जैसे सब मिल कर अलमारी उठा रहे हों । भूचाल के झटके रुक गये हैं । दाईं ओर के दरवाजे से बब्बू को लिए हुए आया का प्रवेश ।) अन्दर का शोर सुन कर वे दोनों भी व्यग्रता से आगे बढ़ते हैं ।)

कमला : (कमरे के अन्दर से) अलमारी को उधर कोने में लगा दो । हां, और सरकाओ ।

दादी माँ जागी

१७

रूप० : (सिसकते हुए कमरे के अन्दर से) हाय, मां तो लहलुहान हो गई हैं। सरला, बचाओ मेरी मां को।

सरला : (कमरे के अन्दर से) अमला, भाग कर मेरा बैग ले आ।

(अमला जल्दी से ड्राइङ्ग रूम में आकर बाईं ओर के पिछले दरवाजे से अन्दर चली जाती है।)

कमला : (कमरे के अन्दर से) अन्दर तो दम घुट रहा है। अरे, तुम सब अब बाहर जाओ न, यहां इतनी भीड़ क्यों लगा रखी है। (सरजू, चौकीदार और उनके पीछे पीछे कृष्णगोपाल ड्राइंग रूम में आते हैं। अमला बैग लेकर तेजी से आती है और कृष्णगोपाल से टकराती हुई, 'सौरी' कहती हुई अन्दर चली जाती है।)

सरला : (अन्दर से) सरजू, जल्दी गर्म पानी ले आ। जीजी, जब तक मैं पट्टी कलूँ, तुम जल्दी से स्टोव जला दो। एक दो इन्जक्शन लगाने होंगे, चोट सिर में ही लगी है।

(सरजू बाईं ओर के पिछले दरवाजे से अन्दर जाता है।)

रूपचंद : (कमरे के अन्दर से सिसकते हुए) हाय मां ! अब मरहम-पट्टी से क्या होगा। मां तो हमेशा के लिए... (रोता है।)

बबू : (कृष्णगोपाल से) डेडी, क्या हुआ दादी मां को ?

कृष्ण : कुछ नहीं बेटा, जा खेल। (बबू वहीं खड़ा रहता है।)

आया : लेकिन बाबू जी, अलमारी गिरी कैसे ?

चौकी० : भूचाल के झटके से।

कृष्ण : अलमारी को गिरना था, सो किसी भी बहाने से गिर पड़ी। गनीमत है कि...

(तभी सरजू बर्तन में गर्म पानी लिए हुए जल्दी से आता है और दादी मां वाले कमरे में चला जाता है।)

कृष्ण : हाँ, तो मैं कह रहा था, गनीमत है कि मेज बीच में आ जाने से अलमारी पूरी की पूरी दादी मां के ऊपर नहीं गिरी,

वर्ना...

कमला : (आकर) किशू, क्या भाषण दे रहे हो ? (चौकीदार से) अरे, बेलदार से कह दे हम एक घंटे तक आयेगे । (चौकीदार जाता है ।) सरजू, तू अन्दर क्या कर रहा है ? जा रसोई में जाकर कामकर । (सरजू ड्राइङ्ग रूम में आकर बाईं ओर के पिछले दरवाजे से अन्दर चला जाता है ।) आया, जाओ तुम भी सरजू का हाथ बटाओ । (सरजू के पीछे आया जाती है ।) सरला, मैं समझती हूँ, दादी मां को यहां ड्राइङ्ग रूम में ले आना चाहिए । अन्दर तो अलमारी का सारा सामान बिखरा पड़ा है । किशू, तुम यहां क्या कर रहे हो ?

कृष्ण : (सहम कर) खड़ा हूँ ।

कमला : (भुंक्लाकर) यह तो मैं भी देख रही हूँ । जाओ, दादी मां को उठाकर यहां ले आओ ।

(कृष्णगोपाल दादी मां के कमरे में जाता है ।)

बन्धू : (कमला के पास जाकर लाड से) मम्मी, दादी को क्या हो गया ?

कमला : कुछ नहीं बेटा, दादी मां के केवल सिर में चोट आई है ।
(कृष्णगोपाल दादी मां को उठाये हुए ड्राइङ्ग रूम में आता है । उसके पीछे सहारा देते हुए चौधरी रूपचन्द, विमला, सरला और अमला आती हैं । बेहोश दादी मां को सोफे पर लिटा दिया जाता है । उसके सिर पर पट्टी बन्धी है । चौधरी रूपचन्द सोफे के पास गलीचे पर बैठ जाता है ।)

कृष्ण : भूचाल के भटके तो बन्द हो गये !

रूप० : (सिसकते हुए) और उनके साथ ही मां की जीवन-लीला भी, मतलब यह कि ..

सरला : पिता जी, जरा धीरज से काम लीजिए । दादी मां मरी नहीं

दादी माँ जागी

है, पहले की तरह सिर्फ अचेत हैं। नाड़ी ज्यों की त्यों चल रही है, हृदय की गति भी ठीक है। (सिरिज में दवाई भरते हुए) मैं एक और इंजक्शन लगाती हूँ।

रूप० : इन इंजक्शनों से कुछ नहीं बनेगा। अरे कृष्ण, फोन करके सिविल सर्जन को बुला लो।

सरला : पिता जी, किसी को बुलाने की जरूरत नहीं। चोट सिर में लगी है और मे समझती हूँ कि इस चोट से...

रूप० : क्या ?

सरला : (एकाएक उछल कर) यह देखिये, दादी मां के होंठ फड़फड़ा रहे हैं।

कमला : (हर्ष और आश्चर्य से) और पलकें भी फड़फड़ा रही हैं।

अमला : (हर्ष और आश्चर्य से) एक हाथ भी हिला।

विमला : (हर्ष और आश्चर्य से) लो, दादी मां ने आंखें खोल दीं। (रूपचन्द पुलकित-सा उठकर देखता है। दादी मां आंखें खोल कर इधर उधर विस्मय से देखती हैं। चारों ओर खुशी की लहर दौड़ जाती है।)

सरला० : (सहर्ष) दादी मां जाग गईं। दादी मा जाग गईं।

रूप० : (गद्गद् कण्ठ से) हे भगवान्, तेरा लाख लाख धन्यवाद। तेरी लीला अपरम्पार है। आज मेरी मां का २५ वर्ष बाद दूसरा जन्म हुआ है। लड़कियो, खुशी के गीत गाओ, शहर भर में मिठाई बांटो, गरीबों के लिए सदावर्त लगाओ। कृष्ण, जल्दी से शहनाई वालों को बुलाओ।

कमला : मैं अभी सब प्रबन्ध करती हूँ, पिता जी। किशू, तुम...

सरला : विमला, दादी मां का बाजू थामो, मैं इंजक्शन लगा दूँ। अभी यह बहुत दुर्बल है।

(कमला बाजू थामती है। सरला इंजक्शन लगाती है।)

बबू : मम्मी, यह भूचाल भी बड़े काम की चीज़ है ।

कमला : (हँसते हुए) हां, बेटा, इस भूचाल ने ही तेरी परनानी को जगाया है ।

रूप० : यह भूचाल तो हमारे लिए भगवान का वरदान सिद्ध हुआ है, बेटा !

बबू : मम्मी, सवेरे डैडी को जगाने के लिये भी आप इसी भूचाल को बुला लिया करें । (कहकहा ।)

सरला : (हँसते हुए) मुंशी जी के लिये हमारी जीजी ही... (फिर कहकहा ।)

कमला : (डांटकर) सरला ।

रूप० : माँ, माँ ! (निराश होकर) अरे, यह तो बोलती नहीं, मतलब यह कि फटी-फटी आंखों से मेरी ओर देख रही है ।

सरला : पिताजी, आप इतने उतावले क्यों हो रहे हैं, दादी मां धीरे धीरे होश में आ रही है । (तनिक गर्व से) मेरी बात सही निकली न ।

रूप० : हाँ, सरला ।

कृष्ण० : डाक्टर साहब कहिये ।

रूप० : हां, डाक्टर साहब, आज मैंने तुम्हारी योग्यता का लोहा माना ।

विमला : (जल्दी से) पिताजी, सुनिये । दादी माँ के होंठ हिल रहे हैं ।

दादी : (अत्यन्त दुर्बल स्वर में) मैं कहाँ हूँ ?

रूप० : (गद्गद् होकर) माँ, तुम अपने घर में हो ।

दादी : (जैसे सुना न हो, इधर उधर देखते हुए) यह कौन-सा लोक है ? यह...यह नरकलोक तो नहीं हो सकता । नरकलोक में ऐसे सुन्दर कमरे कहाँ ? तो यह स्वर्गलोक ही है ।

रूप० : अरे, यह तो जैसे परलोक से बोल रही हैं, मतलब यह कि हमें तो पहचानती ही नहीं ।

सरला : अभी पूरी तरह होश में नहीं आईं ।

दादी : (विस्मय से) तुम सब कौन हो ? स्वर्गलोक में तुम सब कैसे पहुँच गये ?

रूप० : माँ ! माँ !!

कमला : दादी माँ !

विमला : यह स्वर्गलोक नहीं ।

अमला : मर्त्यलोक है ।

सरला : यह मर्त्यलोक के भारत देश की राजधानी दिल्ली है ।

रूप० : और माँ, तुम इस समय अपने दिल्ली वाले मकान में हो ।

दादी : मैं अपने मकान में हूँ ? झूठ, एकदम झूठ । अचरज है कि लोग स्वर्ग में भी झूठ बोलते हैं । मेरा मकान तो कच्चा है— एक कमरे का छोटा-सा । और यह भवन तो, आहा ! यह तो इन्द्र-देवता का घर जान पड़े है । सफेद संगमरमर की दीवारें, रेशम के पर्दे, मखमली आसन और इस खिड़की से देवताओं का वह नन्दन-कानन दिखाई दे रहा है ।

(चारों लड़कियाँ हँसती हैं ।)

रूप० : (डांटकर) अरी लड़कियो !

दादी : अरे, क्यों डांट रहे हो इन्हें । ये तो देवलोक की अप्सरायें हैं । आहा, कैसा रूप-रंग ! कैसी सजधज ! (लड़कियाँ फिर हँसती हैं ।)

कृष्ण० : (हँसकर) लो कमला, तुम तो अब अप्सरा हो गईं ।

कमला : (डांटकर) चुप रहो ।

रूप० : माँ, ये चारों अप्सरायें नहीं, तुम्हारी पोतियाँ हैं और मैं हूँ तुम्हारा बेटा चौधरी रूपचन्द, मतलब यह कि तुम्हारा चन्दू, चन्दू ।

दादी : (जैसे कुछ याद करते हुए) चन्दू ? मेरा चन्दू यहां कैसे आ सके है ? ऐसी अशुभ बात ! तुम मेरे चन्दू नहीं हो सकते ।

तुम्हारे बाल सफेद हो रहे हैं, तुम, तुम बूढ़े हो। मेरा चन्द्र तो बीस वर्ष का गबरू जवान है।

रूप० : मां, मैं तुम्हारा वही चन्द्र हूँ। तुम मुझे आज २५ वर्ष बाद देख रही हो, मतलब यह कि...

दादी : (चौंककर) क्या कहा ? २५ वर्ष बाद ?

रूप० : हां, मां, तुम्हें याद होगा, तुम बापू की मृत्यु का समाचार पाकर एकदम पछाड़ खाकर गिर पड़ी थीं।

दादी : (जैसे याद करते हुए) हां, याद है। मैं गिर पड़ी थी और...

रूप० : गिरने से तुम्हारे सिर में चोट लगी थी और तुम बेहोश हो गई थीं।

दादी : (एकाएक) तो क्या मैं हतभागिन मरी नहीं ?

रूप० : नहीं मां। वह चोट तुम्हारे मस्तिष्क के ऐसे स्थान पर लगी थी कि तुम पर नींद जैसी बेहोशी छा गई और वह बेहोशी २५ वर्ष तक छाई रही। आज फिर अचानक सिर में चोट लगने से तुम होश में आ गई हो, मतलब यह कि...

दादी : तो क्या मैं जीवित हूँ ?

रूप० : (प्रसन्न होकर) हां, मां।

दादी : क्या मैं २५ वर्ष बाद होश में आई हूँ ?

रूप० : (और भी प्रसन्न होकर) हां मां।

दादी : क्या इतनी लम्बी बेहोशी में भी मैं जीवित रही ?

रूप० : हां मां। बेहोशी में भी तुम बराबर खाती पीती रहीं, तुम्हारा इलाज होता रहा, इंजेक्शन, दवाइयां, सब कुछ, मतलब यह कि...

दादी : तो मैं अपने घर में हूँ ?

रूप० : हां, मां ! मतलब यह कि...

दादी : और तू मेरा चन्द्र है।

दादी मा जागी

रूप० : हां मां । और ये सब तुम्हारी...

दादी : (आंखें झपककर ध्यानपूर्वक देखते हुए) लेकिन तू कितना बदल गया है !

रूप० : अब मैं बीस वर्ष का नहीं, ४५-४६ वर्ष का हूँ, मतलब यह कि अघेड़ उम्र का आदमी हूँ । और मां, तुम भी तो अब ६२-६३ वर्ष की बुढ़िया हो ।

दादी : (हैरान-सी) क्या कह रहा है रे ?

रूप० : (हंसते हुए) कमला, अपनी दादी को जरा शीशा दिखाओ, मतलब यह कि...

(कमला मैटल-पीस से शीशा उठाकर लाती है ।)

दादी : ठहर जा रे, मैं जरा उठकर बैठ जाऊँ । (सोफे से उठने का प्रयत्न करती है ।)

सरला : नहीं दादी मां, अभी लेटे रहिए । आप अभी बहुत कमजोर हैं ।

दादी : (कुछ हिल-जुलकर) अरे हां, मेरी पीठ फोड़े की तरह दुखे है । लेकिन कमजोरी कैसी ? मैं तो अच्छी-भली हूँ । (उठकर बैठती है ।) जरा देखूँ अपनी शकल शीशे में । (शीशा लेकर निहारती है, चौंककर) हाय देया ! मैं तो सचमुच बूढ़ी हो गई हूँ । मेरे बाल तो सन की तरह सफेद हो गये, मुँह झुर्रियों से भर गया है, दांत हिलने लगे हैं और आंखें कमजोर हो गई हैं । मुझे अपना चेहरा भी अच्छी तरह सुझाई नहीं पड़े है । चन्दू, तू मेरे पास आकर बैठ । मैं अच्छी तरह तुझे निहारूँ । (रूपचन्द मां के और भी निकट हो जाता है ।) हां, तू सचमुच ही मेरा चन्दू है । तुझे पाकर आज सारे दुःख भूल गये । और हां, बहू हीरादेवी कहां हैं ?

रूप० : मां, उसका तो तीन वर्ष हुए देहान्त हो गया ।

दादी : (सिहरकर) क्या, बहू का देहान्त हो गया ! यह मैं बुढ़िया अभी तक जी रही हूँ और मेरी लछमी-सी बहू भगवान को

प्यारी हो गई । (सिसकती है ।)

रूप० : मां, जाने वाली चली गई, अब उसका शोक, मतलब यह कि...

दादी : अरे, वह सचमुच ही लछमी थी । उसके घर में पाव रखते ही तुम्हे ठेकेदार के यहां मुंशी की नौकरी मिल गई थी— ३० रुपये की । अब तुम्हे क्या मिले है ?

रूप० : मां, अब मैं किसी ठेकेदार का नौकर नहीं, मतलब यह कि श्रीरों को नौकर रखता हूं । तुम्हारे आशीर्वाद से अब मैं स्वयं बहुत बड़ा ठेकेदार बन गया हूं । हजारों लाखों कमा चुका हूँ और...

दादी : (बल्लेयाँ खेते हुए) सच !

रूप० : और दर्जनों कोठियों और मकानों का स्वामी हूं । घर में नौकर-चाकर है, कारे है, मतलब यह कि भगवान का दिया सब कुछ है ।

दादी : (गद्गद स्वर में) ओह, आज तेरे बापू होते तो...

(बाहर पोर्टिको में कार के द्वार की आवाज सुनाई देती है ।)

कमला : अमला, शायद रेडियो-स्टेशन से गाड़ी आई है ।

अमला : (चौककर उठते हुए) हां, आठ बज गये ।

रूप० : तो जाओ, बेटा, साढ़े आठ बजे तुम्हारा प्रोग्राम है ।

अमला : (जाने का उपक्रम करते हुए) दादी मां, मैं जरा...

दादी : चन्दू, यह वही कमला ही है न जो उस समय डेढ़ दो वर्ष की थी ।

रूप० : नहीं मां, कमला तो यह बैठी है । यह अमला है, तुम्हारी सबसे छोटी पोती । बी० ए० पास करके इसने नृत्य और संगीत सीखा है । आज रेडियो में, मतलब यह कि...

अमला : तो पिता जी, मैं जाती हूँ । (दाईं ओर के दरवाजे से बाहर जाती है ।)

दादी : (नाक-भों सिकोड़ कर) तो यह नाचे गावे है ?

दादी माँ जागी

रूप० : हां मां, बहुत अच्छा नाचती-गाती है हमारी अमला, मतलब यह कि बड़ी-बड़ी सभाओं और संगीत-सम्मेलनों में...

(बाहर कार के जाने की आवाज ।)

दादी : (बीच में काटकर) चन्दू तूझे यह क्या सूझी ? लड़की को नाच-गाना सिखा के क्या तू इसे...?

विमला: दादी मां, नृत्य और संगीत तो हमारी संस्कृति और सभ्यता का महत्वपूर्ण अङ्ग है ।

दादी : (चौंकर) अरे चन्दू, यह लड़की क्या बोली बोले है । कौन है यह ?

रूप० : मां, यह भी तुम्हारी पोती है, कमला से छोटी । यह एम० ए० पास है । कालिज में प्रोफ़ेसर है, मतलब यह कि...

दादी : (नाक-भौं सिकोड़ कर) क्या नौकरी करे है ?

रूप० : और हमारी यह सरला डाक्टरी पास करके अब अस्पताल में नौकर हो गई है, मतलब यह है कि...

दादी : तो यह डाक्टर है ?

कमला : (एकाएक) सरला, आज ड्यूटी पर नहीं जाओगी ?

सरला : (जल्दी से डठकर) ओह, दादी मां के होश में आने की खुशी में मैं तो भूल ही गई थी । मुझे ठीक आठ बजे अस्पताल पहुँचना था ।

दादी : (सरला की ओर देखते हुए) चन्दू, मैं पूछूँ हूँ, यह लड़की है या लड़का ?

रूप० : (हैरान-सा) मां, यह सरला है, मतलब यह कि इस सरला ने बीमारी के दौरान में तुम्हारी बहुत सेवा की है । सच पूछो तो इसने डाक्टरी पढ़ी ही तुम्हारे लिए है, मतलब यह कि...

दादी : मतलब में समझ गई, परन्तु यह बता, इसने लड़कों की तरह बाल क्यों कटवा रखे है । इसका पहनावा भी...

सरला : जीजी, मुझे देर हो गई है, मैं कार ले जाऊँ ?

कमला : कार ? किशू, उस इमारत की टूटी हुई दीवार देखने के लिये मैं तो जा न सकूंगी । तुम कार लेकर चले जाओ । रास्ते में सरला को अस्पताल में छोड़ देना ।

कृष्ण : अच्छा, आओ डाक्टर साहब ।

दादी : अरे चन्दू, यह लड़का कौन है ?

रूप० : अरे हाँ, इसका तो परिचय कराया ही नहीं ।

दादी : क्या कहा, परचा कटाया ही नहीं ? क्या यह कोई ऐसा वैसा...
(लड़कियाँ हँसती हैं ।)

रूप० : (हँसते हुए) नहीं माँ, यह कृष्णगोपाल है, कमलाका पति, मतलब यह कि पहले यह...

दादी : तेरी इस बड़ी लड़की का पति ? और यह हम सबके रहते उसके सामने मुह उधाड़े बैठी है ? हाय दैया, यह मैं क्या देख रही हूँ अपने घर में ! यह कैसा जमाना आ गया ! लड़कियों में लाज-शर्म रही ही नहीं । मैं अपने घर में तेरे बापू के सामने कभी...(कृष्णगोपाल ध्यान से बातें सुन रहा है, सरला बैग लेकर बाहर जा चुकी है ।)

कमला : किशू, तुम खड़े खड़े क्या सुन रहे हो ? सरला बाहर तुम्हारी प्रतीक्षा कर रही है ।

कृष्ण० : (घबराकर) जा रहा हूँ ।

(दाईं ओर के दरवाजे से बाहर चला जाता है । कुछ देर बाद कार के जाने की आवाज ।)

दादी : हाय दैया, यह लड़की अपने पति का नाम लेवे है । और कैसे डाँटे भी है । कलजुग, घोर कलजुग ।

कमला : दादी माँ, नाम लेने में क्या बुराई है ?

दादी : अरी, क्या कह रही है ? पति का नाम लेना पाप है, घोर पाप । चन्दू के बापू का नाम था...अरे, बता तो चन्दू ।

दादी माँ जागी ।

रूप० : बापू का नाम तो था लालचन्द, परन्तु सभी उन्हें लाल या लालू कहते थे ।

दादी : हां । कसम ले लो जो मैंने जीवन भर कभी इस रंग का नाम लिया हो ।

विमला : (हंसते हुए) लेकिन दादी मां, यदि कभी बातचीत में लाल रंग का नाम लेना अनिवार्य हो जाता, तो आप क्या कहती थी ?

दादी : कहती क्या थी, चन्दू के बापू का रंग कहकर काम चला लेती थी । (कमला और विमला हंसती हैं ।) अरी, हंस क्यों रही हो ? यही तो सच्चा पतिव्रत धर्म है । और यह कमला है कि अपने पति-देव का न केवल नाम ही लेवे है, उसे डांटे भी है ।

रूप० : मां, दर-असल बात यह है कि ये दोनों...

दादी : अरे, मैं सब समझूँ हूँ । घर में कोई बड़ी-बूढ़ी न होने से तेरी ये लड़कियां बेमुहार हो गई हैं । देख न, अभी मेरे और तेरे यहां रहते यह अपने पति के सामने मुँह उठाड़े बैठी थी । और नहीं तो पल्ला जरा नीचे कर लेती ।

कमला : (जरा तुनक कर) दादी मां, आप तो....

रूप० : कमला बेटा, माँ की बात का बरा न मानो । यह पुराने समय की है न, उस समय की जब स्त्री का सारा जीवन ही धूँघट में बीत जाता था, मतलब यह कि...

विमला : पिता जी, वह स्त्रियों की गुलामी और अज्ञान का समय था । बचपन बाप की कैद में बीता, जवानी पति की कैद में और बड़ापा बेटे की कैद में कटा । उनका अपना कोई स्वतन्त्र व्यक्तित्व ही नहीं था । आज की स्त्री पढ़-लिख कर अपने स्वतन्त्र व्यक्तित्व के महत्व और अधिकारों को समझने लगी है । समाज में बरावरी का दर्जा पाकर वह अच्छाई और बुराई के भेद को जानती है और पहचानती है अपनी शक्ति

को। पर्दा स्त्री की गुलामी और हीनता का प्रतीक था, सो आज की नारी ने उसे उतार कर फेंक दिया है।

दादी : (हैरान-सी) हाय दैया, इस लड़की की जुबान तो कैची की तरह चले है।

रूप० : (हँसते हुए) मां, अभी मैंने बताया था न कि हमारी विमला बड़ी विदुषी है। कालिज में प्रोफ़ेसर है, मतलब यह कि...

दादी : अरे, क्या परफ़ेसर परफ़ेसर लगा रखी है। हमारे समय में मजाल है कि लड़की बड़े-बूढ़ों के सामने ऊँचा बोल जाय। तेरी लड़कियों के तो लच्छन ही निराले है। यह कमला है...

रूप० : (दांत निपोरते हुए) मां, कमला तो इस घर की मालकिन है, मालकिन। हीरादेवी की मौत और तुम्हारी लम्बी बीमारी के कारण मैं तो असमय ही बूढ़ा हो गया हूँ। यह कमला ही घर की देखभाल करती है, ठेकेदारी के सारे काम को संभालती है, मतलब यह कि....

बब्बू : मम्मी, मुझे भूख लगी है।

कमला : जा आया से कह कि...

रूप० : अरे, आज बातों बातों में नाश्ते का ख्याल ही नहीं रहा। लगता है, अमला और सरला भी भूखी हो चली गईं, मतलब यह कि मां के मिलने की खुशी में.....

कमला : नाश्ता तैयार हो रहा है, पिता जी।

दादी : चन्दू, ये लड़कियाँ तो यहां बैठी हैं, रसोई में खाना कौन तैयार कर रहा है ?

रूप० : हमारा नौकर सरजू।

दादी : हाय दैया, घर में औरतों के रहते खाना मर्द बना रहा है। कैसा समय आ गया ! औरतों के काम मर्द कर रहे हैं और

मर्दों के काम औरतें कर रही हैं ।

रूप० : मां...।

दादी : चन्दू, मुझे तेरी लड़कियों के तौर-तरीके पसन्द नहीं । घर का काम-काज छोड़ कर ये बाहर नौकरियां करती है ।

रूप० : मां, आजकल तो स्त्रियां पढ़-लिखकर बाहर के सभी काम करती है ।

विमला : इसमें क्या बुराई है । नारी-जाति की हीनावस्था का मुख्य कारण उसकी आर्थिक परतंत्रता है ।

दादी : चुप रह छोकरी ! कैसे जवान लड़ाये है ! (कमला विमला को मौन रहने का आंख से इशारा करती है । विमला उठकर खिड़की की ओर चली जाती है ।)

रूप० : (जैसे बीच-बचाव करते हुए) मां, मेरा मतलब है कि विमला...(बाहर पोर्टिको में कार का हार्न सुनाई देता है ।) अरे, यह तो रमेश की कार का हार्न जान पड़ता है ।

विमला : (खिड़की से पलटकर) हां, पिता जी, हमारी अपनी कार खाली नहीं थी । मैंने रमेश को फोन पर कहा था कि दफ्तर जाते समय मुझे अपने साथ लेता जाय । नौ बजे कालिज के स्टाफ की एक आवश्यक मीटिंग है । रमेश मुझे वहां छोड़कर दफ्तर चला जायगा ।

रूप० : तो जाओ, बेटी, वह बाहर इन्तजार कर रहा होगा ।
(दाईं ओर के दरवाजे से विमला जल्दी से बाहर जाती है ।)

कमला : और पिताजी, मैं मेज पर नाश्ता लगवाती हूं ।
(बाईं ओर के पिछले दरवाजे से अन्दर चली जाती है । उसके पीछे पीछे बबू जाता है ।)

दादी : अरे चन्दू, तेरी तो चारों लड़कियां ही हैं न ।

रूप० : हां, मां ।

दादी : कोई लड़का नहीं हुआ ?

रूप० : नहीं माँ। लेकिन मेरी ये लड़कियां लड़कों जैसी ही हैं, मतलब यह कि...

दादी : हूँ। तो फिर यह रमेश कौन है, जिसके साथ विमला गई है ?

रूप० : सरकारी दफ्तर में बहुत बड़ा आफिसर है और विमला का मित्र है।

दादी : मित्र ! हाय दैया, लड़कियों की सखी-सहेलियां तो सुनी थी, अब मित्र भी होने लगे।

रूप० : नहीं माँ, मतलब यह कि रमेश और विमला वर्षों से एक दूसरे को जानते हैं। दोनों एक साथ कालिज में पढ़ते थे, मतलब यह कि...

दादी : अरे, इस पढ़ाई ने ही तेरा घर घाला है। हमारे समय में बहुत हुआ तो लड़की ने रामायण पढ़ ली, नित-नेम सीख लिया। बाकी सारा समय वह घर की देख-भाल करती, चौका-वर्तन करती, खाना बनाती, सीती-पिरोती; लेकिन तेरी कोई लड़की परफैसर है, तो कोई नचवैया-गवैया, कोई डाक्टर है तो कोई ठेकेदार। (एकाएक उठकर) न बाबा, मैं यह सब नहीं देख सकती। खैर, भगवान ने चाहा तो...

रूप० : (घिघिया कर) लेकिन माँ।

(पर्दा गिरता है।)

दूसरा दृश्य

सुबह के साढ़े आठ बजने वाले हैं ।

स्थान—चौधरी रूपचन्द की कोठी का बड़ी ड्राइंग रूम ।

[ड्राइंग रूम की बड़ी खिड़की से हरे-भरे और रंग-बिरंगे फूलों वाले बागीचे में प्रातःकालीन उजली धूप का दृश्य बड़ा ही मनोहारी जान पड़ता है । आकाश पर वर्षा के बादल इधर-उधर छितरा गये हैं । जब पर्दा उठता है, तो कमला खिड़की से बाहर निहारती हुई दिखाई देती है । कुछ देर बाद बाईं ओर के पिछले दरवाजे से आया आती है ।]

आया : (कमला के समीप पहुँच कर) मालकिन !

कमला : (पलटकर उदास स्वर में) क्या है, आया ?

आया : आप नाश्ता छोड़ कर क्यों चली आईं ?

कमला : (आहत-सी) मुझ से नहीं सुनी जाती दादी मां की ये बातें ।

आया : आपको उनकी बातों का बुरा नहीं मानना चाहिये । वे आज की दुनिया की नहीं । अभी अभी वे सरजू को डांट रही थीं ।

कमला : क्यों ?

आया : (हँसते हुए) बटवू के लिये वह बिजली के चूल्हे पर दूध गर्म कर रहा था । दादी मां बोली, “कैसा मूर्ख है, चूल्हे में उपले डाले नहीं और लगा दूध गर्म करने ।”

कमला : (हँसते हुए) हाँ, इनके समय में घर में बिजली का ऐसा उपयोग कहां होता था । (जरा रुककर) आया, मुझे तो यह देखकर बड़ा अचरज हो रहा है कि आज दादी मां २५ वर्ष

की बीमारी से उठी है और अब ऐसे चल-फिर रही है, मानो
कभी बीमार ही न हुई हों ।

आया : (हंसते हुए) पुरानी हड्डी है ।

(घड़ी साढ़े आठ बजाती है ।)

कमला : अरे, साढ़े आठ हो गये । रेडियो पर अमला का प्रोग्राम शुरू
हो गया ।

(आगे बढ़कर रेडियो-सेट का स्विच दबाती है । कुछ देर बाद
अमला का गायन सुनाई देता है ।)

गीत

हे प्राण, तुम्हारा इन्तज़ार ।
रजनी-तम मे भी खुले रहे
दृग, मन्-मंदिर के युगल द्वार ।
मृदु अंगुलियों की राह तक
जीवन-वीणा के मूक तार ।
चरणों पर अर्पित होने को
युग-युग कासंचित विकल प्यार ।
अनजाने छलक-छलक पड़ते
आसू बनने को अर्ध्यधार ।
कल्पित चरणों की आहट पा
उर-धड़कन रुकती बार बार ।
स्वागत को साँसें दौड़ बढ़े,
मुड़ आएँ पथ सूना निहार ।
हे प्राण, तुम्हारा इन्तज़ार ।

(कमला रेडियो-सेट के पास कुर्सी खींचकर अमला का गाना
सुनती है । आया ड्राइङ्ग रूम की भाड़-पोंछ में लग जाती

है । कुछ देर बाद दूसरे कमरे से रूपचन्द का स्वर सुनाई देता है ।)

रूप० : (दूर से) कमला, क्या यह अमला गा रही है, मतलब यह कि...?

कमला . (जरा ऊँचे स्वर में) हां, पिता जी ।

रूप० : (दूर से) मां, आओ तुम्हें अपनी अमला का गाना सुनवाऊं ।
(बाईं ओर के पिछले दरवाजे से रूपचन्द, दादी मां का हाथ पकड़े हुए आता है । दोनों की बातचीत गीत के ऊपर चलती रहती है ।)

दादी : (आते हुए) अरे, तेरी अमला तो रेलवे-स्टेशन पर गई हुई है ।

रूप० : मां, रेलवे-स्टेशन नहीं, रेडियो-स्टेशन, मतलब यह कि....

दादी : अरे, रेडियो-स्टेशन ही सही । मतलब यह कि वह घर में तो नहीं है ।

कमला : दादी मा, हमारी अमला रेडियो-स्टेशन पर इस समय गा रही है और उसका स्वर यहाँ सुनाई दे रहा है ।

दादी : (डांटकर) चुप रह लड़की, मुझे बनाये है । बड़ों की इज्जत करना तो ये लड़कियां जाने ही नहीं ।

रूप० : मां, कमला ठीक कह रही है । रेडियो-सेट के पास आकर जरा ध्यान से सुनो । है न अमला का ही स्वर ? मतलब यह कि...

(दादी मां सोफे पर बैठ कर ध्यान से गाना सुनने लगती है ।
रूपचन्द उसके पास गलीचे पर बैठ जाता है ।)

दादी : (कुछ देर बाद, अचरज से) अरे चन्दू, तेरी अमला तो छलावा है । इतने से डिब्बे में बैठकर गाये है ।

रूप० : (हंसते हुए) नहीं मां, अमला तो यहां से काफी दूर रेडियो-स्टेशन पर है और उसकी आवाज़ ऊपर हवा में पहुंच कर

विजली द्वारा इस सेट में सुनाई दे रही है, मतलब यह कि...

दादी : हाय दैया, यह तो कोई जादू का खेल जान पड़े है ।

कमला : दादी मां, जादू का खेल नहीं, साइंस की करामात है ।

दादी : साईं बाबा की करामात । (सब हंसते हैं ।) अरे, ही-ही क्या लगा रखी है ! (एकाएक आया की ओर संकेत करते हुए)
चन्दू, यह कौन है ?

रूप० : मां, यह पार्वती है, मतलब यह कि हमारे बब्बू की आया है ।

दादी : आया क्या ?

रूप० : यह बचपन से ही बब्बू की देख-भाल कर रही है । और जब से बब्बू बड़ा हुआ है, यह तुम्हारी सेवा, मतलब यह कि...

दादी : (हैरान सी) लेकिन बब्बू की मां यह कमला क्या करती रही है । यह तो नई बात सुनी । बच्चा जने कोई, संभाले कोई । न बाबा, मेरे सामने यह चोचले नहीं चलेंगे ।

(कमला मुंह फुलाये रेडियो-सेट बन्द करके ड्राइङ्ग रूम से जाने लगती है कि बब्बू आकर चिमट जाता है ।)

बब्बू : मम्मी ! मम्मी !!

दादी : अरी कमला, यह तेरा लड़का इस तरह मिमियाये क्यों है ? इतना बड़ा हो गया...

(टेलीफोन की घण्टी बजती है ।)

रूप० : कमला, जरा देखना किसका फोन है ?

कमला : आया, बब्बू को स्कूल के लिए तैयार कर दो । किशू गाड़ी लेकर आता है, तो...

दादी : यह लड़की अपने पति का नाम लेने से बाज नहीं आई ।

(कमला टेलीफोन की ओर जाती है और रिसीवर उठाती है । आया बब्बू को लेकर जीने से होकर ऊपर चली जाती है । दादी मां टेलीफोन की ओर इशारा करके रूपचन्द से

दादी माँ जागी

खुसर-फुसर करती है।)

कमला : (फोन पर) हेलो ! कौन ? ओह, आप । नमस्कार । क्या ? नहीं नहीं, अभी मैंने मीटिंग की कोई तारीख तो तय नहीं की, परन्तु...हां, हां, तलाक के समर्थन में प्रस्ताव पास करने के लिये मैं जल्दी ही सभा की मीटिंग बुलाऊंगी । हां, हां, इसी सप्ताह । अच्छा, नमस्कार । (टेलीफोन बन्द करती है।)

रूप० : कमला, किसका फोन था ? मतलब यह कि...

कमला : (अनमनी-सी) मिरोज शर्मा का था ।

रूप० : मां, हमारी कमला यहां की स्त्री-सभा की जनरल सेक्रेटरी है, मतलब यह कि.. हां, तो कमला, तुम्हारी सभा तलाक के समर्थन में प्रस्ताव पास कर रही है, मतलब यह कि...?

कमला : हां, पिताजी ! तलाक के बिना स्त्री-जाति का उद्धार असम्भव है । विवाह सुख के लिये है, नरक भोगने के लिये नहीं । हमारी सभा की कई सदस्याओं ने तलाक के लिये कोर्ट में अजियां भी दे दी हैं ।

दादी : (चौंककर) तो क्या स्त्रियां अपने पतियों को अब तलाक भी देने लगी हैं ? हे भगवान, यह तो सचमुच ही कलजुग आ गया । पतिव्रत धर्म को तो स्त्रियों ने ताक पर रख दिया है । लेकिन चन्दू, मैं तेरी लड़कियों को ऐसे कुमार्ग पर नहीं चलन दूंगी ।

रूप० : (हंसते हुए) नहीं मां, मेरी लड़कियां भला, मतलब यह कि कृष्णगोपाल चाहे कौंसा भी बुद्ध हो, मेरी कमला कभी उसे...

कमला : पिता जी, आप मेरी ओर से गारंटी कैसे दे सकते हैं ?

दादी : अरी, तो क्या तू भी औरों की तरह खसम बदलेगी । सुना चन्दू, तेरी ये लड़कियां तो वंश की नाक काट के ही रहेंगी ।

कमला : (गुस्से से) दादी मां ।

रूप० : (डांटकर) कमला ।

(कमला गुस्से से भरी बाईं ओर के पिछले दरवाजे पे अन्दर चली जाती है ।)

दादी : कैसी घमण्डन है !

रूप० : नहीं मां, बात दर-असल यह है कि...

दादी : अरे, रहने भी दे चन्दू ! तुमने ही इन लड़कियों को सिर पर चढा रखा है । इन लड़कियों के लच्छन देख कर मुझे तो चिन्ता होने लगी ।

रूप० : मां, चिन्ता की कोई बात नहीं । मेरी लड़कियां, मतलब यह कि...

दादी : अरे, सुन तेरी इन चारों लड़कियों में से केवल कमला की ही शादी हुई है न ?

रूप० : हां, मां ।

दादी : बाकी तीनों भी तो ब्याह के योग्य है। उनकी उम्र क्या है ?

रूप० : अमला २०-२१ वर्ष की है, सरला कोई २२-२३ वर्ष की है और विमला कोई २४ वर्ष की होगी । मतलब यह कि...

दादी : हाय दैया, इतनी बड़ी बड़ी लड़कियां घर में कुँआरी बैठा रखी है । मैं कहती हूँ, चन्दू, तेरी अकल को क्या हो गया है ?

रूप० : माँ, बात यह है कि अभी तीनों लड़कियां ब्याह करना नहीं चाहतीं । विमला पी-एच० डी० की तैयारी कर रही है, सरला आगे डाक्टरी पढन के लिए विलायत जा रही है, अमला भरत-नाट्यम् सीखने के लिए दक्षिण जाना चाहती है । जब यह चाहेगी, मैं शादी कर दूंगा । मतलब यह कि मैं बिना लड़कियों की मर्जी के शादी करने के पक्ष में नहीं, मतलब यह कि...

दादी माँ जागी

दादी : क्या कह रहा रे, चन्दू ? लड़की की शादी मां-बाप की मर्जी से होवे है ।

रूप० : मां, समय बदल गया है । लड़की को गाय की तरह एक खूँटे से खोल कर दूसरे खूँटे में बांधना उसके प्रति घोर अन्याय है, मतलब यह कि वर-घर उसकी पसन्द का होना चाहिए । यही न्याय है ।

दादी : अरे, न्याय के ठेकेदार, मेरी कोख से जन्म लेकर मुझे ही उपदेश देवे है । क्या तू जाने नहीं कि जवान लड़कियों को घर में कुँआरी बैठा रखना कितना बड़ा पाप है । मेरा ब्याह १३ वर्ष की उम्र में हो गया था । तेरी बहू १४वें वर्ष में हमारे घर आई थी ।

रूप० : मां, अब इतनी छोटी उम्र में लड़की की शादी करना जुर्म है ।

दादी : तेरी यह लड़कियां तो इतनी छोटी नहीं । अब काहे की राह देख रहा है, वर-घर ढूँढ और इनके हाथ पीले कर ।

रूप० : मां, चिन्ता न करो, सब कुछ हो जायगा, मतलब यह कि....

दादी : अरे, कब हो जायगा ? मैं कहती हूँ, घर में तीन तीन जवान कुआँरी लड़कियों के रहते तुझे कैसे नींद आती है ? मैं तो ऐसे घर में अन्न-जल भी ग्रहण न करूँ ।

रूप० : मां, ऐसी बात न कहो । भगवान की कृपा से तुम फिर घर में लौट आई हो । जैसा कहोगी, वैसा ही होगा । लेकिन लड़कियां जवान हैं, पढ़ी-लिखी हैं, सपभदार हैं, अपना भला-बुरा समझती हैं । इसलिए हमें इनकी पसन्द-नापसन्द का भी ख्याल रखना होगा, मतलब यह कि...

दादी : नहीं चन्दू, मैं यह सब नहीं मानती । मैं जरा चलने-फिरने के काबिल हो जाऊँ । महीने के अन्दर अन्दर वर-घर ढूँढ कर इन लड़कियों को बिदा कर दूंगी । और सुन ।

प० : कहो माँ ।

।दी : तू जानता है न कि बिना बेटे के आदमी की इस लोक और परलोक में गति नहीं होती ।

प० : मैं तुम्हारा मतलब नहीं समझा, मां ?

।दी : अरे, मतलब यह कि यह लड़कियां तो पराया धन हैं । इन्हें अपने-अपने घर भेजने के बाद मैं तेरा भी ब्याह रचाऊंगी और पोते का मुंह देखूंगी ।

प० : (हैरान और परेशान) क्या कह रही हो, मां ! मतलब यह कि इस उम्र में...?

।दी : अरे, मर्द कभी बूढ़ा नहीं होता । मैं तो छमछम करती चांद-सी बहू लाकर ही रहूंगी ।

प० : (हैरान और परेशान) मां !

(पर्दा गिरता है ।)

तीसरा दृश्य

झाड़ू रूम की घड़ी शाम के सात बजा रही है ।

स्थान—वही झाड़ू रूम ।

[कमरा बिजली की रोशनी से जगमगा रहा है । जब पर्दा उठता है तो विमला सोफे पर बैठी पुस्तक पढ़ने में निमग्न दिखाई देती है । उसने ऊंची चोली और सादी, परन्तु कीमती साड़ी पहन रखी है । इधर मैटल-पीस के शीशे के सामने खड़ी अमला अपने जूड़े में फूल सजा रही है और साथ साथ कोई गीत गुनगुना रही है । उसने भी ऊंची चोली और बढ़िया चमचमाती साड़ी पहन रखी है । कुछ देर बाद, दाईं ओर के दरवाजे से—बाहर से—सीटी बजाती हुई, रैकट घुमाती हुई, फुदकती हुई सरला आती है । उसने सफेद शार्ट्स, सफेद कमीज, सफेद बूट और टखनों तक सफेद जुराबें पहन रखी हैं । उसकी सीटी और पदचाप सुनकर विमला पुस्तक से सिर उठाती है और अमला पलट कर देखती है ।]

सरला : (ठिठक कर, अमला को सिर से पाँव तक निहारकर) ओह !

जालिम, आज तो तुम कत्ल किये डाल रही हो ।

अमला : (हंसकर) कत्ल तो तुम करके आई हो डाक्टर शुक्ला को ।

सरला : (कुर्सी पर बैठते हुए, हंसकर) अरी, कत्ल नहीं, उसके दिल और दिमाग का आपरेशन करके आई हूँ । बड़ा तीसमारखाँ बनता था यह डाक्टर शुक्ला । आज मैंने उसे लगातार चार बार हराया ।

अमला : (ताली बजाकर) शाबाश ।

विमल : तो फिर आज तो उसने शादी के लिए नहीं कहा होगा ?

सरला : विमला, आज उसने सिर्फ कहा ही नहीं, घुटने टेक कर विनती भी की । तुम नहीं जानती, वह कितना ढीठ है । चार बार हारा; परन्तु कोई असर नहीं हुआ । टेनिस-कोर्ट से चली, तो साथ हो लिया, परन्तु मैं ने उसे मुँह नहीं लगाया ।

विमला: (शरारत से) क्या ?

सरला : अरी साहित्य की प्रोफेसर होकर भी मुहावरा नहीं समझती । हां, तो ज्यों ही उसने शादी की बात छेड़ी, मैंने भटक कर कहा, “हारे हुए पुरुष से मैं शादी नहीं करने की ।”

कमला : (जीने से उतरते हुए) मेरी सलाह मानो, तो...

ताना : (चौंकर) ओह, जीजी ।

विमल : तो जीजी, तुम अपने कमरे में थीं ?

अमला : मैं तो समझी थी कि दादी मां को शहर की सैर कराने के लिए पिता जी और जीजा जी के साथ तुम भी गई हो ?

कमला : नहीं अमला, मेरी जाने की इच्छा नहीं हुई ।

विमला : चलो अच्छा है, अब हम खुल कर बातें तो कर सकती हैं ।

सरला : जी हां, बिल्ली के जाने पर चूहों की बन आती है । (कड़-कहा ।)

अमला : देखें, दादी मां की यह पहली सैर कैसी रहती है ।

सरला : शहर का नया रंग-ढंग देखकर शायद वे हमें धकेल कर २५ वर्ष पीछे ले जाने का इरादा छोड़ दें ।

कमला : (सोफे पर बैठते हुए) पिछले बारह घंटों में मैं दादी मां को जितना जान पाई हूँ, उससे तो ऐसी सम्भावना नहीं पैदा होती । उनके विचार केवल दकियानूसी ही नहीं, ताना-शाही भी हैं ।

अमला : (हंसते हुए) उनकी दिन भर की तानाशाही की रिपोर्ट हमें

दादी माँ जागी

आया से मिल चुकी है।

कमला : (एकाएक) आया कहां है ?

विमला : अभी-अभी बब्बू के साथ शायद बागीचे में गई है। अभी बब्बू से भी बातें हुईं। दादी मां का जागना उसे भी पसन्द नहीं आया।

सरला : (आह भरकर) अगर पता होता कि दादी मां जाग कर...

अमला : दादी मां क्या जागीं, घर में आंधी आ गई।

कमला : आंधी नहीं अमला, भूचाल कहो, भूचाल। (कहकहा।)

सरला : जीजी, मैं तो एक बात से आश्चर्य-चकित हूं। आम तौर पर मैंने देखा कि अगर कोई रोगी दो-तीन दिन बेहोश रहे, तो उसमें महीनों चलने-फिरने और करने-धरने की शक्ति नहीं आती। पर हमारी ६२-६३ वर्षीया दादी मां ने २५ वर्ष की बेहोशी से उठकर बारह घण्टों में ही सारे घर को भक-भोर कर रख दिया है।

विमला : तुम बारह घंटों की बात कह रही हो, सरला, आज सुबह तुमने देखा नहीं, ज्यों ही होश में आईं, बिल्कुल तन्दुरुस्तों की तरह बातें करने लगी।

कमला : तुम सब तो चली गईं थीं, बाद में बातों का वह तांता बंधा कि...

अमला : जीजी, मैंने सुना है कि दादी मां ने तुम्हें आज खूब डांटा।

कमला : खैर, डांटा तो उन्होंने हम सभी को। और तो और उनकी डांट से पिता जी भी नहीं बचे।

सरला : पिता जी को काहे के लिए डांटा ?

कमला : (हंसते हुए) तुम तीनों के लिए।

विमला : क्या मतलब ?

कमला : तुम तीनों की शादी जो नहीं हुई और दादी मां कुँआरी जवान

लड़कियों को घर में बैठाये रखना घोर पाप समझती है !

तीनों० : (आश्चर्य से) पाप ?

कमला : हाँ, पाप ।

सरला : पिता जी ने क्या कहा ?

कमला : वे क्या कहते । पिता जी की मातृभक्ति तो तुम सब दादी माँ की बीमारी के दौरान में देख ही चुकी हो । दादी माँ के इलाज पर उन्होंने पानी की तरह रुपया बहाया, सरला को दादी माँ की खातिर ही डाक्टरी पढ़ाई, बम्बू की आया को दादी माँ की देख-भाल पर लगा दिया, और ठेकेदारी का सारा काम मेरे सुपुर्द करके वे दादी माँ के कमरे में धूनी रमा कर बैठे रहे । ऐसा मातृभक्त पुत्र कभी माँ की आज्ञा की अवहेलना कर कर सकता है ?

तीनों० : तो ?

कमला : दादा माँ ने आज अल्टीमेटम दे दिया है कि एक महीने के अन्दर अन्दर तुम तीनों के हाथ पीले कर देगी ।

विमला : बिना हमारी मर्जी के ?

सरला : बिना हमारी इच्छा के ?

अमला : बिना हमारी पसन्द के ?

कमला : हाँ, दादी माँ विवाह-योग्य लड़कियों की पसन्द-नापसन्द और इच्छा-अनिच्छा में विश्वास नहीं रखती ।

सरला : लेकिन जीजी, पिता जी ने तो हमें कह रखा है कि...

कमला : पिता जी ने कुछ भी कह रखा हो, अब तो इस घर में दादी माँ की ही चलेगी । मुझे तो लगता है कि यदि दादी माँ की जिद जोर पकड़ गई तो पिता जी की भी इस बुढ़ापे में शादी हो जायगी ।

तीनों० : (भारी आश्चर्य से) पिता जी की शादी ? क्या कह रही हो, जीजी ?

दादी माँ जागी

कमला : मैं ठीक कह ही रही हूँ। मैंने आज किवाड़ की ओट से दादी माँ और पिता जी की सब बातें सुनीं। अपना लोक और परलोक सुधारने के लिए दादी माँ पोते का मुँह देखना चाहती हूँ।

तीनों : सच जीजी ?

कमला : हाँ, तुम तीनों को चाहिए कि इससे पहले कि दादी माँ अपनी पसन्द के लड़के ढूँढ़ कर तुम्हें यहां से धक्का दे दें...

सरला : (धींच में ही) जीजी चाहे कुछ हो जाय, मैं तो अभी शादी करूंगी नहीं। डाक्टरी की उच्च शिक्षा के लिए एक वर्ष बाद विलायत जाने का मेरा इरादा था, अब मैं सोचती हूँ कि तुरन्त यहां से भाग जाऊँ।

अमला : मैं भी इसी महीने भरत-नाट्यम् सीखने के लिये चुपचाप दक्षिण की यात्रा पर चल दूंगी।

कमला : और तुम, विमला ?

विमला : (सोचते हुए) जीजी, मैं तो यहीं रहकर पी-एच० डी० की तैयारी कर सकती हूँ।

कमला : तो फिर समझ लो, इसी महीने तुम्हारी शादी हो गई।

विमला : जबरदस्ती ?

कमला : दादी माँ घर का पाप काटने के लिये जबरदस्ती भी कर सकती है।

सरला : सुनो विमला, इससे पहले कि दादी माँ किसी ऊल-जलूल के पल्ले से तुम्हें बांध दें, तुम जल्दी से रमेश से शादी कर डालो।

विमला : वह तो तैयार है, लेकिन मैं अभी...

कमला : देखो विमला, अभी-तभी करने से अनर्थ हो जायगा। और अमला, तुम मेरी मानों तो कवि कोमलजी से...

अमला : नहीं जीजी, मैं विवाह की वेदी पर अपनी कला की बलि नहीं चढ़ाना चाहती।

सरला : और जीजी, तुमन और पिता जी ने जीवन में कुछ करने, कुछ बनने, ऊपर उठने की जो शिक्षा दी थी, वह सब व्यर्थ गई ।

कमला : हां, व्यर्थ ही समझो, सरला । मैंने कहा न, अब इस घर की मालकिन मैं नहीं, दादी मां है । यह सत्य मुझे एक ही दिन में मालूम हो गया है । वे हम सबको पराया धन समझती हैं ।

विमला : (उदास-सी) मतलब यह कि अब हम इस घर में नहीं रह सकतीं ।

कमला : हां, हो सकता है कि मुझे भी अलग गृहस्थी बसानी पड़े ।

सरला : ओह, जिस दादी मां की हमने बीमारी के दौरान में इतनी सेवा-सुश्रूषा की, वही हमें...

(तभी बाहर पोर्टिको में कार के आकर रुकने का शब्द सुनाई देता है । सभी लड़कियां जैसे एक दम चौंक कर सचेत हो जाती हैं । विमला के चहरे पर घबराहट के लक्षण ।)

अमला : (होठों पर उंगली रख कर धीरे से) वे आ गये ।

सरला : (तुनक कर) आ गये तो क्या हुआ, दादी मां कोई हौआ तो है नहीं ।

कमला : सरला, तुम जल्दी से कपड़े बदल आओ ।

अमला : हां, तुम्हें इस वेश में देखकर दादी मां फिर पूछेंगी कि यह लड़का है या लड़की ?

(कहकहा, जिसमें विमला पूरी तरह से झिमिलित नहीं होती ।)

सरला : (हंसते हुए) अब के मैं उन्हें विश्वास दिला दूंगी कि मैं दर-असल लड़की ही हूँ ।

(विमला के सिवा सब हंसती हैं । वह कुछ विचार-मग्न-सी है ।)

कमला : नहीं सरला, तुम भागकर साड़ी पहन आओ ।

सरला : (लापरवाही से) जीजी, आप भी...

दादी माँ जागी

(दाईं ओर के दरवाजे से कृष्ण गोपाल हंसता हुआ आता है।)

कृष्ण : (कृष्ण आकर हंसते हुए) यह आज बहनों का कैसा सम्मेलन हो रहा है। लगता है कोई गम्भीर विषय...

कमला : (डांटकर) किशू, तुम्हें सौ बार कहा है कि...

कृष्ण : क्या ?

कमला : खैर, दादी मां कहां रह गईं ?

कृष्ण : पिता जी के साथ बागीचे तक गई है। अभी आती हैं।

सरला : तो सैर से उनका जी नहीं भरा।

कृष्ण : नहीं, वे सैर के लिए नहीं, बागीचे में तुलसी के पौदे देखने के लिये गई हैं। कल से तुम सबसे वे सांझ समय तुलसी-पूजन करवायेंगी, ताकि...

कमला : (हंसते हुए) इन्हें जल्दी घर-घर मिले।

सरला : खैर, कल की कल देखी जायगी, पहले यह बताइये कि आज आप दादी मां को कहां-कहां घुमा लाये ?

कृष्ण : सभी जगह। चांदनी चौक, दरियागंज, इंडिया गेट, कनाट-प्लेस, सेक्रेटेरियट और...

अमला : यह आपने बहुत अच्छा किया। दादी मां को अब मालूम हो गया होगा कि २५ वर्ष में दुनिया कितनी बदल चुकी है।

कृष्ण : यह बात तो उन्हें घर में ही मालूम हो गई है। वे कह रही थीं कि...

कमला : खैर, वे क्या कह रही थी, यह तो हम बाद में सुनेंगी, पहले यह बताओ, स्कूल की इमारत का आज काम खत्म क्यों नहीं हुआ ? आज अपने दफ्तर में भी तुम...

सरला : (हंसते हुए) जवाब दीजिये, मुंशीजी।

कमला : (डांटकर) सरला ! हां तो, किशू...

कृष्ण : अभी बताता हूँ, लेकिन कमला, अब तुम मुझे दादी मां के सामने न डांटना। वे बहुत बुरा मनाती हैं।

कमला : (सव्यंग) लगता है, दादी मां को तुम्हारा बहुत खयाल है ।

कृष्ण : हां, वे आज पूछ रही थी कि कमला जैसी लड़की के साथ तुम्हारी कैसे निभती है ? मैंने झट कहा “निभती इस तरह है कि मैं सदा कमला के कहने पर चलता हूं और वह सदा अपने कहने पर चलती है ।”

(कहकहा, जिसमें विमला सम्मिलित नहीं होती । वह सोच रही है ।)

अमला : (हंसते हुए) जीजा जी, आज की सैर कैसी रही ?

कृष्ण : कुछ न पूछो, अमला । दादी मां ने शहर को एकदम बदला हुआ पाया । ऊंची ऊंची इमारतों को देखकर बोलीं—“आस-मान नीचे न गिर पड़ें, शायद इसी लिये इतनी ऊंची इमारतें बनाई गई हैं ।” (कहकहा, परन्तु विमला नहीं हंसी । वह उलझी-उलझी-सी अलग-सी खिड़की के पास टड्ढने लगती है ।) सबसे ज्यादा मजा तो कनाट-प्लेस में आया । पांच बज चुके थे और पार्लिमेंट स्ट्रीट की ओर से बाबुओं की न खत्म होने वाली भीड़ तेजी से साइकलों पर चली आ रही थी । उन्हें देखकर दादी मां बोली—“अरे, क्या ये लोग कहीं आग बुझाने जा रहे हैं ?” (कहकहा) लेकिन कनाट-प्लेस में घूमते हुए स्त्री-पुरुषों की वेश-भूषा और चाल-ढाल देखकर दादी मां आपे से बाहर हो गई । बोली—“आज की औरतें तो दुनिया भर को न्योता देती हुई जैसे हवा में उड़ रही हैं । न शर्म, न हया ।”

सरला : खैर, दादी मां ने और जो कुछ कहा होगा, उसकी मैं कल्पना कर सकती हूं । उनकी हालत तो उस देहाती जैसी है, जो शीश-महल में घुस कर रास्ता भूल गया हो । (कहकहा ।)

अमला : जीजा जी, आपने दादी मां को सिनेमा नहीं दिखाया ?

दादी माँ जागी

कृष्ण : दिखाने का इरादा तो था, परन्तु जब मैंने . उन्हें बताया कि सिनेमा में तस्वीरें बोलती हैं, तो कहने लगीं—“न बाबा, ऐसा भूतों का खेल मैं न देखूंगी ।” (कहकहा ।)

कमला : (हंसते हुए) दादी मां तो रेडियो को भी भूतों का खेल समझती है । सबेरे साढ़े आठ बजे ..(टिकाएक) अरे, यह बब्बू रोता हुआ क्यों आ रहा है ?

(बब्बू दाईं ओर के दरवाजे से सिसकता हुआ आता है ।
विमला का टहलना रुक जाता है ।)

कमला : क्या हुआ, बब्बू ?

बब्बू : (कमला के पास आकर सिसकते हुए) मम्मी, परनानी ने...

कमला : क्या तुम्हें मारा ?

बब्बू : नहीं मम्मी, परनानी ने मेरी आया को घर से निकाल दिया ।

सब : (आश्चर्य से) क्या ?

बब्बू : आया ने कहा, “रात के समय मैं कहां जाऊं ? कल सबेरे चली जाऊंगी ।” परन्तु परनानी बोली—“अभी अपना बोरिया बिस्तर उठा, और चलती-फिरती नजर आ ।”

विमला : हूं, तो दादी मां ने लोगों को घर से भगाना शुरू कर दिया है ।

कमला : आया ने ऐसा कौनसा अपराध किया कि उसे . ?

कृष्ण : आया खुद ही आ रही है । उससे पता चल जायगा ।

(आया दुःख और वषाढ़ की मूर्ति-सी दाईं ओर के दरवाजे से प्रवेश करती है ।)

सब : आया, क्या हुआ ?

आया : (रुंधे कंठ से) मैं दादी मां की नजर बचाकर आप सब से विदा लेने चली गई हूं ; वरना उनकी तो आज्ञा थी कि...

कमला : आखिर हुआ क्या ?

आया : मुझे स्वयं कुछ पता नहीं, मालकिन । मैं बब्बू के साथ बगीचे

में थी। दादी माँ अचानक वहाँ पहुँच गईं और छूटते ही पूछने लगीं, “क्या तू विधवा है ?” मैंने कहा — “हां !” इस पर बोलीं— “क्या यह बात ठीक है कि तू फिर शादी करना चाहती है ?” मैंने कहा, “हां !” बस फौरन बोलीं, “इस घर से इसी समय निकल जा। तुझे जैसी कुलटा को मैं एक पल भी यहाँ नहीं देख सकती।”

सरला : अच्छा, विधवा स्त्री शादी करना चाहे, तो वह कुलटा हो गई।

अमला : और पिता जी को दादी माँ स्वयं शादी करने को कह रही हैं।

विमला : अजीब तर्क है।

आया : बीबी जी, आप तो जानती ही हैं कि आप सबके कहने से ही मैंने फिर से शादी करने का निश्चय किया था।

कमला : लेकिन मैं पूछती हूँ, दादी माँ को एकदम यह कैसे मालूम हो गया कि तुम विधवा हो और फिर से शादी करना चाहती हो। (धूर कर) किशू कहीं तुमने.. ?

कृष्ण : (हकलाते हुए) नहीं कमला, हाँ, हाँ, बातों बातों में मैंने ही उन्हें बताया था, लेकिन मुझे क्या पता था कि...

कमला : (दाँत पीसते हुए) अरे, तुम तो निरे मुन्शी ही रहे।

आया : (आँखें पोंछते हुए) इस घर की मैंने इतने दिन जो सेवा की है, मुझे आज उसका यह फल मिला है।

कमला : (उठ कर) ठहरो आया, मैं अभी पिता जी के पास जाती हूँ।

आया : उनसे कहने से कोई लाभ नहीं होगा। उनके सामने ही दादी माँ ने मुझे घर से चले जाने की आज्ञा दी है।

सरला : लेकिन आया, पिता जी ने दादी माँ को बताया नहीं कि तुमने बीमारी में उनकी कितनी सेवा की थी ?

आया : उन्होंने बताया था, परन्तु दादी माँ ने उनकी एक नहीं सुनी।
(आह भरकर) मुझे जाने का इतना दुख नहीं, जितना

इस बात का दुख है कि मुझे कुलटा कह कर घर से निकाला जा रहा है। आप ही कहिये, इतने वर्षों से मैं यहां हूं, आपने कभी कोई बुराई मुझ में पाई ?

कमला : यदि कोई बुराई होती, तो पिता जी तुम्हें एक दिन भी यहां न रहने देते।

विमला : मैं हैरान हूं कि पिता जी आया को इतना मानते हैं, वह भी दादी मां को समझा नहीं सके।

कमला : इसी घटना से तुम सब समझ सकती हो कि दादी मां के राज में हम सब की क्या दशा होने वाली है।

विमला : (एकाएक आगे बढ़कर) जीजा जी, कार की चाबी आपके ही पास है ?

कृष्ण० : हां।

विमला : जरा दीजियेगा। (कृष्ण चाबी देता है।)

सरला : इस समय कहां जा रही हो, विमला ?

विमला : (तेजी से बाहर जाते हुए) एक बहुत ही आवश्यक काम से जा रही हूं।

(दाईं ओर के दरवाजे से बाहर चली जाती है। सभी आश्चर्य से उस दिशा में देखते हैं। कुछ देर बाद कार के जाने की आवाज।)

आया : (आइ भर कर) अच्छा, तो मैं जाती हूँ। (बाहर जाने का उपक्रम करती है।)

कमला : रात के समय कहां जाओगी, आया ?

आया : भगवान की छत के नीचे कहीं भी पड़ी रहूँगी।

कमला : (एकाएक जैसे निश्चय करके) ठहरो। किशू, दफ्तर की चाबी कहां है ?

कृष्ण० : यह रही। (जेब से चाबी निकालता है।)

कमला : यह चाबी आया को दे दो। (कृष्ण आया को चाबी देता है।)

आया, रात तुम दफ्तर में गुजारो, कल मैं कोई और प्रबन्ध करूंगी ।

कृष्ण० : लेकिन कमला, दादी मां को पता चल गया तो ...?

कमला : पता उन्हें तुमसे ही चलेगा, और मैं जानती हूँ कि तुम उन्हें नहीं बताओगे ।

कृष्ण० : (सहमकर) हाँ, नहीं बताऊँगा, लेकिन यदि दादी मां अपने आप दफ्तर में पहुँच गईं ?

कमला : किशू, बेकार की बात न बनाओ । वे इतनी पढ़ी-लिखी नहीं कि मेरी तरह वे भी तुम्हारे रजिस्ट्रों-फाइलों और लैजर्स की पड़ताल करने दफ्तर में पहुँच जायें ।

सरला : (हँसते हुए) समझे, मुन्शी जी । (सब हँसते हैं ।)

बब्बू : मम्मी, मुझे नींद आई है ।

कमला : किशू, तुम बब्बू को ऊपर ले जाकर सुलाओ । मैं जरा...

(कृष्णगोपाल बब्बू को लेकर जीने की ओर बढ़ता है ।)

सरला : (हँसते हुए) तो आज से जीजाजी बब्बू की आया भी बन गये । (कहकहा ।)

आया : (चलने का उपक्रम करते हुए) तो मालकिन, मैं रात दफ्तर में गुजारती हूँ ।

कमला : हाँ, और...

(कमला का वाक्य अभी पूरा नहीं होता कि दाईं ओर के दरवाजे के बाहर दादी मां और रूपचन्दका स्वर सुनाई देता है । सब स्तब्ध रह जाते हैं । आया उस दरवाजे की ओर जाते जाते किंकर्तव्य-विमूढ़-सी रुक जाती है । तुरन्त कमला आगे बढ़कर जल्दी से आया को जीने की ओर धकेलती है ।)

कमला : (धीरे से) तुम ऊपर मेरे कमरे में जाकर बैठो । जल्दी...
(आया भागकर ऊपर चढ़ जाती है । तभी रूपचंद का सहारा लिये दादा माँ प्रवेश करती है ।)

दादी : (आते हुए) चला, इस आया से तो छुट्टी मिली। विधवा होकर सुहागिन बनने चली थी। कुलटा कहीं की। मैंने घर में उसे घुसने नहीं दिया, बाहर से चलता किया।

रूप० : मां, आज तुम बहुत थक गई हो। जरा अपने कमरे में चलकर कुछ देर आराम कर लो, तो खाना खाया जाय। कमला, सरजू से कहो कि यदि खाना तैयार हो गया हो, तो...

(दादी माँ अपने कमरे की ओर जाते जाते रुक जाती हैं ।)

दादी : (एकाएक कमला और अमला को घूरते हुए) अरी लड़कियो, घर का सारा काम नौकरों पर छोड़ कर तुम यहां बैठी क्या कर रही हो ?

कमला : दादी माँ, हम तो जरा...

दादी : (बिगड़कर) तुम लोगों के इन्ही लच्छनों से मेरे चन्दू का घर बर्बाद हुआ है। हमारे समय में मजाल है, घर की लड़कियां एक पल के लिए भी चूल्हे-चौके से दूर हो जाये। (सहसा दादी मां की नजर सरला पर पड़ती है और ऐसे चौंकती है, मानो बिजली का तार छू गया हो ।) हाय दैया ! अभी जो शहर में देख कर आ रही हूं, वह मेरे घर में भी। (एकाएक दाँत पीसकर) अरी, तू यह...में कहूँ ..

रूप० : (बीच में ही खींसे निपोरते हुए) मां, हमारी यह सरला केवल डाक्टर ही नहीं, टेनिस की बहुत अच्छी खिलाड़ी भी है, मतलब यह कि ..

दादी : (गुस्से से) अरे, क्या मतलब लगा रखी है। लड़की बेपद सामने बैठी है और...मैं कहती हूं, इसे शर्म-हया नहीं तो कम से कम तुम्हें तो...हे भगवान ! मैं अपने घर में यह क्या देख रही हूं। चन्दू, उठ कर बाहर चला जा। यह लड़की कपड़े पहन ले तो अन्दर आना। अरे, मेरी ओर दीदे फाड़-

फाड़ कर क्या देख रहा है ? दरवाजा उधर है ।

(रूपचन्द्र यंत्रचलिता-सा उठ कर दाईं ओर के दरवाजे से बाहर चला जाता है ।)

दादी : (आंखें तरेर कर सरला से) क्यों री ?

सरला : (मुस्कराते हुए) दादी मां, मैं अभी खेल कर आई हूं ।

दादी : (साश्चर्य) खेल कर आई है ? क्या तू बच्ची है कि गली में खलने जाती है ? और वह भी यों लड़कों की तरह टांगें...?

सरला : (हंसते हुए) दादी मां, मैं लड़का ही तो हूं ।

दादी : (धड़ाम से सोफे पर बैठते हुए) हाय देया ! यह लड़की तो आफत है, आफत । अरी मैं कहती हूं.. ।

सरला : दादी मां, यह स्त्री-पुरुष की समानता का युग है । अधिकारों की समानता, काम-धन्धे की समानता और पहनावे की भी समानता । और फिर डाक्टरी के पेशे में तो . ।

कमला : (आँख दबा कर) सरला, बहस न करो । जाओ, भाग कर साड़ी पहन आओ ।

(सरला मुस्कराती हुई बाईं ओर के पिछले दरवाजे से अन्दर जाती है ।)

दादी : हे भगवान्, कैसा जमाना है यह । हमारे समय में लड़कियां सदा लिपटी-सिमटी रहे थी और आज निर्लज्जता से दुनिया-जहान के सामने अंग उघाड़े फिरती हैं । न बाप की शर्म, न...।

अमला : दादी मां, लाज-शर्म तो आंखों की होती है ।

दादी : चुप रह छोकरी, तू भी उससे क्या कम है । पेट उघाड़े बैठी है । (घूरते हुए) और यह मैं क्या देख रही हूं ? कुंआरी कन्या का नई-नवेलियों-सा साज-सिंघार ! हे भगवान् ! कब कटेगा इन लड़कियों का पाप मेरे सिर से । (एकाएक) अरी कमला, वह चौथी लड़की...क्या नाम है उसका ? तुम लोगों के तो नाम भी अजीब हैं । कोई गमला, तो कोई आमला, तो कोई

बेमिला...। हां, विमला ही तो । कहाँ है वह ?

कमला : यही है ! अभी आती है ।

दादी : अरी, क्यों मुझसे छिपा रही है । अभी मैंने कार जाती देखी थी । जिस लड़के के साथ सबेरे कार में बैठकर गई थी, उसी के साथ अब भी घूमने गई होगी ।

कमला : नहीं दादी मां, वह ज़रा...

दादी : हाथ दैया, क्या हो गया जमाने को । हमारे समय में मजाल है कि लड़की ब्याह से पहले घर के बाहर कदम भी रख जाय । कमला, तू सबसे बड़ी है, तुझे रोकना चाहिए था विमला को ।

कमला : दादी मां, मैंने कहा न कि विमला आवश्यक काम से...

दादी : खैर, सबसे पहले इस विमला के ही हाथ पीले करने होंगे । कल ही कोई लड़का ढूँढ़ती हूँ । हमारी बिरादरी के लोग तो गांव में हैं, हो सका तो कल ही....।

(रूप चन्द का प्रवेश—प्रसन्न मुद्रा में ।)

रूप० : (दरवाजे की ओर संकेत करते हुए) देखो अमला, यह कौन आये है ?

(कवि कोमलजी का प्रवेश । कवि कोमलजी वाकई कोमल-स्कुमार हैं । कन्धों तक लहराते हुए लम्बे घुंघराले बाल, दादी-मूँछ विहीन चेहरे पर स्त्रेण सौंदर्य की झलक, जिसे काजल की रेखा ने द्विगुणित कर रखा है । कविजी लम्बा रेशमी कुर्ता और धोती पहने हैं ।)

अमला : (सदृश ठठकर) ओह ! आप ? नमस्कार !

कोमल : नमस्कार ! नमस्कार, कमला जी ।

कमला : (मुस्कराकर) नमस्कार । यहाँ विराजिए, कोमलजी । (कवि जी कुर्सी पर काव्यमयी मुद्रा में विराजते हैं ।)

दी : अमला, यह तेरी कोई सहेली है ?

मला : (हंसकर) सहेली ?

प० : मां, यह हमारे शहर के बड़े प्रसिद्ध कवि और चित्रकार हैं।
कोमल जी, मतलब यह कि...

दी : (चकित-सी) तो क्या यह कोई मर्द है ?

मला : (सुस्कराते हुए) हां, दादी मां ।

(कविजी मानो पानी पानी हुए जा रहे हैं ।)

दी : हाय दैया, मर्द होकर इसने स्त्रियों की तरह बाल क्यों बढ़ा रखे हैं ? बाल क्यों, इसके नैन-नक्श भी तो स्त्रियों जैसे हैं । न दाढ़ी है, न मूँछ । कैसा जमाना आ गया ! स्त्रियां मर्द बनी हुई हैं, और मर्द स्त्रियां ।

(सिवाय कवि जी के सब हंसते हैं । अन्दर से साड़ी पहने हुए सरला भी हंसती हुई आती है ।)

रला : दादी मां, दर-असल बात यह है कि स्त्रियों को अधिकार और स्वत्व मिलते देखकर आजकल के मर्द स्त्री बनने के प्रयत्न में हैं । (हँसी ।)

मला : (अप्रसन्न-सी) सरला, तुम भी...

(इस टीका-टिप्पणी से कवि जी का पौरुष जागता है और वे एकदम उठकर खड़े हो जाते हैं ।)

मला : अरे, आप जा रहे हैं ?

मल : (क्रोध प्रदर्शित करते हुए) हां, मैं जा रहा हूँ ।

प० : वाह कोमलजी, अभी आये, अभी चल दिये, मतलब यह कि...

मेमल : दादी मां के स्वास्थ्य-लाभ का समाचार पाकर मैं बधाई देने आया था । यहाँ मेरा जैसा स्वागत हुआ है...

प० : तो आप मां की बातों का बुरा मान गये, मतलब यह कि....

मेमल : कोई भी पुरुष बुरा मान सकता है ।

दी मं जागी

कमला : मोमलजी, आप व्यर्थ ही बुरा मान गये । हमारी दादी मां पुराने जमाने की हैं ।

सरला : इतनी जल्दी जाने की जरूरत नहीं । बैठिये । हमारा परिवार तो सदा से आप की काव्य-कला का प्रशंसक रहा है । दादी मां भी आप की कला पर मुग्ध हुए बिना नहीं रहेंगी ।

अमला : कोमल जी कोई नई कविता लिखी हो तो दादी मां की सुनाइये ।

रूप० : हां...हां । मतलब यह कि...

(कवि जी गर्व से फूले-फूले बैठ जाते हैं ।)

दादी : तो क्या यह कवित्त लिखे हैं, चन्दू ?

रूप० : कवित्त नहीं, मां, ये गीत लिखते हैं और हमारी अमला उन गीतों को गाती है, मतलब यह कि...

अमला : (कोमलजी पर प्रेम-पगी दृष्टि डाल कर) आज सवेरे भी मैंने इन्हीं का गीत गाया था ।

कोमल : (विभोर होकर) कितना मधुर गाया था ! अमला, तुम्हारी मधुर वाणी पाकर मेरा गीत सजीव हो उठा था । आहा, इसे कहते हैं काव्य-कला और संगीत-कला का दिव्य मिलन !

दादी : अरे चन्दू, तेरा यह कवीशर तो मुझे पागल जान पड़े है ।

रूप० : (धीरे से) नहीं मां, ये बहुत ऊँचे कवि हैं । सारे हिन्दी-जगत में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा है और मैं तो सोच रहा हूँ कि...मतलब यह कि...इनकी और अमला की ..

दादी : (गुस्से से) नहीं, ऐसे जनाने मर्द से अमला की शादी कभी नहीं हो सकती ।

कोमल : (एक दम उठकर, कांपते हुए) क्या ?

कमला : (आश्चर्य से) दादी मां !

सरला : (चौंककर) दादी मां !

अमला : (सिसक कर) दादी मां !

कोमल : (बिगड़कर) इस घर में मेरा घोर अपमान हुआ है । मैं
यहाँ एक क्षण भी नहीं रुक सकता । (कहते कहते कविजी
पांव पटखते हुए बाहर चले जाते हैं ।)

रूप० : (पीछे जाते हुए) सुनिये तो, कोमल जी ! कविवर कोमल
जी !! नाराज क्यों हो गये ? (बाहर जाता है ।)

कमला : दादी मां, कोमलजी हमारे यहाँ मेहमान के रूप में आये थे ।
आपको उनका इस तरह अपमान नहीं करना चाहिये था ।

दादी : चुप रह री । मुझे अकल सिखाती है ? मैं अन्धी नहीं,
सब समझती हूँ । आज से कोई पराया मर्द इस घर में नहीं
आ सकता और न तुम में से कोई... ।

सरजू : (अन्दर से आकर) मालकिन, खाना तैयार हो गया है,
लगा दूँ ?

कमला : जरा ठहर जा, सरजू, विमला आ जाय तो...(सरजू जाता है।)

दादी : अरे, वह विमला अभी तक नहीं आई ? हे भगवान, इस लड़की
के लच्छन तो...(एकाएक) अरी कमला, तेरा वह घर वाला
किसन भी तो नहीं दिखे है ।

कमला : वह ऊपर कमरे में है, बब्बू के पास ।

दादी : (उठकर, जीने की तरफ देखते हुए) अच्छा, तो वह ऊपर
वाला तेरा कमरा है ?

(तीनों लड़कियाँ सशंकित होकर एक दूसरी को देखती हैं ।)

कमला : हां, दादी मां ।

दादी : मैंने सारी कोठी देख ली, केवल तेरा ही कमरा रह गया ।
(जीने की ओर बढ़ते हुए) चल तो, इसे भी देख लूँ ।

(तीनों लड़कियाँ स्तब्ध रह जाती हैं ।)

कमला : (आगे बढ़कर) आप दिन भर की थकी हैं, सबेरे देख
लीजियेगा ।

दादी माँ जागी

सरला : दादी मां, आप आज ही बीमारी से उठी हैं, जीने पर चढ़ने-उतरने से...

अमला : आप अपने कमरे में चल कर आराम कीजियेगी ।

दादी : (जीने पर पांव रखते हुए) अरी, मैं २५ वर्ष आराम कर चुकी ।

सरला : (घबराकर) लेकिन दादी मां, अभी आप...

कमला : (घबराकर) सरला डाक्टर हैं न, इसका कहना...

दादी : (जीने पर चढ़ते हुए) अरी वाह, मैं इस बालिशत भर की लड़की के कहने पर चलूंगी ।

(तभी कार के आने का शब्द सुनाई देता है ।)

सरला : (जल्दी से) लो, दादी मां, विमला भी आ गई ।

दादी : (जीने से उतरते हुए) आ गई ? मैं अभी इस आवारा को ठीक करती हूँ ।

(रूपचन्द का प्रवेश)

रूप० : मां, मां, बधाई हो ।

दादी : (रुककर) अरे, कैसी बधाई !

रूप० : विमला विवाह करने को राजी हो गई, मतलब यह कि...

तीनों : (सहर्ष) सच, पिताजी ? हम विमला को बधाई दे आयें ।

(तीनों जल्दी से बाहर जाते हैं ।)

दादी : अरे, इसमें बधाई की क्या बात है । वह राजी न भी होती, तो भी मैं इस महीने उसके हाथ पीले करके विदा कर देती । लेकिन चन्दू, मैं पूछती हूँ, वह है कहां ?

रूप० : बाहर रमेश के पास खड़ी है ।

दादी : रमेश के पास ? मैं तो पहले ही समझ गई थी कि कार लेकर उसीसे मिलने गई है । हे भगवान, कैसी आवारा लड़की...!

रूप० : मां, मैंने सबेरे बताया था न कि विमला और रमेश, मतलब यह कि..

दादी : अरे चन्दू, घर की इज्जत का भी तुम्हें कोई ख्याल है या नहीं ? खैर, अगर वह राजी हो गई है तो कल ही मैं उसके लिए कोई अच्छा वर-घर ढूँढती हूँ ।

रूप० : मां, तुम अभी तक नहीं समझीं । वर-घर तो विमला ने खुद ही ढूँढ लिया है, मतलब यह कि...

दादी : (चौंककर) क्या कह रहा है, रे चन्दू ? कभी लड़कियां भी अपना वर-घर खुद ढूँढें ?

रूप० : मां, पुराने समय में स्वयंवर होते थे न, मतलब यह कि...

दादी : अरे, वे सतयुग की बातें थीं । इस कलजुग में यह नहीं चल सके हैं ।

रूप : मां, इसमें कोई बुराई नहीं । लड़की ने जिसके साथ सारा जीवन बिताना है, उसे चुनने का, पसन्द करने का लड़की को पूरा अधिकार होना चाहिये ; मतलब यह कि ब्याह को लाटरी का खेल बनाना... ।

दादी : (बिगड़कर) चन्दू, देखती हूँ, इस नये जमाने की हवा ने तेरी बुद्धि भी भ्रष्ट कर दी है ।

रूप० : मा, कुछ भी कहो, विमला ने अपने लिये वर बुरा नहीं चुना, मतलब यह कि लड़का शरीफ है, ऊँचे घराने का है, कमाऊ है, सरकारी दफ्तर में ऊँचे पद पर है, छै सात सौ तनखाह पाता है, और अगले ही महीने वह सरकारी काम से विलायत जा रहा है ।

दादी : कौन है वह लड़का ?

रूप० : मां, तुम अब भी नहीं समझीं । वही अपना रमेश...

दादी : (चौंककर) रमेश ? वही, जिसके साथ विमला... ?

रूप० : दोनों एक दूसरे को बरसों से जानते-पहचानते हैं, साथ साथ पढ़े हैं, साथ साथ...मतलब यह कि...और हां, एक बात और है । इस विवाह की शहर भर में धूम मचेगी, अखबारों में

फोटो छपेंगे, मतलब यह कि ऐसा आदर्श विवाह हमारे समाज में आज तक नहीं हुआ ।

दादी : क्यों ऐसी क्या बात है इसमें ?

रूप० : (उत्साह से) देखो मां, हम तो हैं वैश्य, लड़का है ब्राह्मण, मतलब यह कि...

दादी : (चौंकर) हाय दैया ! तो क्या तू अपनी लड़की का व्याह जात से बाहर कर रहा है । हे भगवान ! यह सुनने से पहले मैं मर क्यों न गई । यह लड़का अपने कुल की मान-मर्यादा को मटिया-मेट कर रहा है । चन्दू, यह व्याह नहीं हो सकता ।

रूप० : (घबराकर) मां, ऐसा न कहो ।

दादी : नहीं, मेरे रहते यह अनर्थ नहीं हो सकता ।

रूप० : मां, हठ न करो । आजकल जात-पात को कोई नहीं मानता । और फिर जरा विमला का भी खयाल करो । उसका दिल टूट जायगा । मतलब यह कि वह अब बच्ची नहीं, भले-बुरे को समझती है । उसके योग्य हमारी बिरादरी में लड़के कहां है ? संयोगवश अच्छा लड़का मिल गया है । और वह एक सप्ताह के अन्दर अन्दर शादी करने को तैयार है ।

दादी : (कुछ देर सोचकर) चन्दू, तू जिद करता है, तो मैं यह रिश्ता माने लेती हूं, परन्तु एक शर्त पर ।

रूप० : (खुश होकर) मां, मैं तुम्हारी हर शर्त मानूंगा, मतलब यह कि तुम अपनी शर्त कहो ।

दादी : शर्त यह है कि तुम्हें भी जल्द ही अपना ब्याह करना होगा ।

रूप० : (घबराकर) लेकिन, माँ... ?

दादी : लेकिन-वेकिन मैं कुछ नहीं सुनूंगी, तू वचन हार चुका है ।

रूप० : सो तो ठीक है, मां, परन्तु तीन लड़कियों की बाप होकर इस उम्र में मैं.. मतलब यह कि...

दादी : अरे, लड़कियां तो पराया धन हैं । धीरे धीरे सभी अपने घर

चली जायंगी । और मेरा भी क्या भरोसा ? नदी किनारे का रुखड़ा हूँ । पीछे तेरी कौन देख भाल करेगा ? और फिर बाप दादा के वंश को कोई आगे बढ़ाने वाला भी तो होना चाहिये ।

रूप० : अच्छा मां, तुम यदि मजबूर करती हो तो, मतलब यह कि...

दादी : (खुश होकर) मैं वारी जाऊँ, राजा बेटा ! मैं आज से ही तेरी बहू की ढूँढ-खोज करती हूँ ।

रूप० : (हँसकर) खैर, मां वह तो होती रहेगी, पहले अगले बुधवार को विमला का ब्याह तो हो जाय, मतलब यह कि छे दिन बाद...

दादी : (चकित-सी) अरे, तो क्या विमला ने अपने ब्याह का आप ही दिन-मुहूर्त भी पक्का कर लिया ? हाय दैया !

(रूपचन्द हँसता है । एकाएक कमला का प्रवेश ।)

कमला : (आकर) पिता जी, जरा बाहर तो आइये ।

रूप० : क्यों, क्या बात है, कमला ? मतलब यह कि...

कमला : विमला ब्याह के लिये राजी तो हो गई है परन्तु उसकी एक शर्त है ।

रूप० : (घबराकर) कैसी शर्त ? मतलब यह कि...

कमला : (हँसते हुए) आप जरा बाहर तो आइये ।

(कमला रूपचन्द को खींचकर बाहर ले जाती है । दादी माँ कुछ देर मुंह बाय खड़ी रहती है ।)

दादी : (मुँह बिचकाकर) बाप के साथ भी शर्तें ! इन लड़कियों ने तो मेरे चन्दू को खिलौना बना रखा है । हे भगवान !

(पर्दा गिरता है ।)

चौथा दृश्य

छै दिन बाद ।

स्थान वही ड्राइङ्ग रूम ।

[घड़ी शाम के आठ बजा रही है। ड्राइङ्ग रूम पहले से कहीं अधिक फूलों और गुब्बारों से सजा हुआ है। सामने खिड़की के पास उपहार आदि के लिये एक बड़ी मेज़ रख दी गई है। जब पर्दा उठता है, तो नेपथ्य में शहनाई की मंगल-ध्वनि और लड़कियों के कहकहे सुनाई देते हैं। कभी कभी लाउड-स्पीकर पर ग्रामोफोन रिकार्ड भी सुनाई देते हैं। सामने वाली खिड़की से बागीचे की रौनक और सजावट का कुछ अंश दिखाई दे रहा है। बागीचा रंग-बिरंगे बल्बों से जगमगा रहा है। स्त्री-पुरुषों के झुण्ड के झुण्ड इधर से उधर आ-जा रहे हैं। बहुत से लोग सोफों पर बैठे दिखाई देते हैं। सफेद वर्दियों वाले वैर और लम्बी लम्बी मेजें डिनर के आयोजन की सूचना दे रही हैं। ड्राइङ्ग रूम के अन्दर भी घर के लोगों और नौकर-चाकरों के आने-जाने का तांता बंधा हुआ है। एकाएक नेपथ्य में बैंड की आवाज़ उभरती है और दादी मां विमला को पुकारती हुई, हर किसी से पूछती हुई, घबराई-सी परेशान-सी, बाईं ओर के अगले दरवाजे से ड्राइङ्ग रूम में आती है।]

दादी : (इधर-उधर देखते हुए, स्वगत) हाय दैया, बरात घर में आ गई और लड़की गायब। आज तो बिरादरी में नाक कटके ही रहेगी। मैं तो पहले ही जानती थी कि यह लड़की.. (सहसा

रुककर) हाय, मेरा तो दिल बैठा जा रहा है। किससे पूछू ? घर में मेरी कोई नहीं सुनता। सभी जल्दी में हैं, सभी अपनी अपनी मौज में हैं। (तभी कमला जीने पर से उतरती दिखाई देती है।) अरी, कमला ?

कमला : (जैसे जल्दी में हो) क्या है, दादी मां ?

दादी : पूछती है, क्या है ? अरी, मैं कहती हूँ, विमला कहां है ? घर में बरात आ गई और विमला....।

कमला : (तेजी से बाहर जाते हुए) विमला अभी आती है, दादी मां।

दादी : (स्वगत) लो, यह भी पल्ला छुड़ा कर भाग गई। हर कोई यही कहकर भाग जाता है। सब को अपने मौज-तमाशे की फिक्र है। लड़की घर में नहीं, इसकी किसी को चिन्ता नहीं। चिन्ता के लिये जैसे मैं ही रह गई हूँ। वह चन्दू भी तो कहीं दिखाई नहीं दे रहा। हाय, अब किससे पूछू ? कहा दूँ विमला को ? वह शायद सरला है। अरी, सरला !

(सरला दाईं ओर के दरवाजे से लपकी चली आती है।)

सरला : (आकर) क्या बात है, दादी मां ?

दादी : अरी, मैं पूछती हूँ, विमला कहां है ?

सरला : (हंसकर) विमला ? अभी आती है वह, दादी मा।

दादी : अरी, मैं आने की बात नहीं पूछती। मैं पूछती हूँ, वह है कहा ?

सरला : अभी बताती हूँ, दादी मां। जीजी ने मुझे भोजन के निरीक्षण का काम सौंप रखा है। मैं डाक्टर हूँ न।

(कहती-कहती जल्दी से अन्दर चली जाती है।)

दादी : (खीझकर) लो, यह भी चौकड़ियां भरती हुई चली गई। चुड़ैल बहन के व्याह में भी डाक्टरी करती फिरे हैं। मेरा तो जी चाहे है कि पकड़ कर...

(दाईं ओर के दरवाजे से अमला 'दुल्हनिया छमाछम चली' गुनगुनाती हुई, थिरकती हुई आती है।)

दादी : अरी, अमला, तू ही बता, विमला कहां है ?

अमला : (हंसती हुई) विमला ?

दादी : अरी, दाँत क्यों निकाले है । मैंने घर का कोना-कोना छान मारा, लेकिन विमला कहीं भी न दीखे है । है न अनर्थ !
ब्याह के समय ब्याह वाली लड़की ही गायब ।

अमला : दादी मां, आप निश्चिन्त रहिए, विमला कहीं गायब नहीं हुई ।

दादी : तो फिर वह कहां है ?

अमला : अभी बताती हूँ, दादी मां । जीजी ने मुझे उपहारों को संभालने-रखने का काम सौंपा है ।

दादी : (बिगड़ कर) हर कोई जीजी के हुक्म पर चल रहा है ! मेरी कोई नहीं सुनता ।

(नेपथ्य में बहुत-सी लड़कियों की चुहल-भरी हंसी सुनाई देती है ।)

अमला : (एकाएक) दादी मां, आप जरा उधर बैठ जाइये । विमला की सहेलियाँ उपहार लेकर आ रही हैं ।

(पाँच-छे लड़कियाँ उपहार उठाये हंसती-मुस्कराती हुईं दाईं ओर के दरवाजे से प्रवेश करती हैं और अमला उनसे बोरी-बोरी से उपहार लेती है ।)

दादी : (जरा आगे आकर, झुंझलाहट भरे स्वर में, हे भगवान्, पता नहीं ये पागल हैं, या मैं पागल हूँ । ब्याह के उपहार लिये जा रहे हैं, बरात के खाने का प्रबन्ध किया जा रहा है, परन्तु ब्याह वाली लड़की का कह पता नहीं । (पलट कर) अरी अमला ! बताती क्यों नहीं, विमला कहां गई है ?

अमला : दादी मां, आप तो व्यर्थ ही परेशान हो रही हैं ।

दादी : वाह, मैं व्यर्थ ही परेशान हो रही हूँ । बरात घर में आ गई है, अभी भांवरे पड़ेंगी और...

सहे० : भांवरें ? (सब हंसती हैं ।)

दादी : (बिगड़कर) अमला, कौन है ये गंवार लड़कियां ?

अमला : मां, ये...

दादी : अरी, मुझे क्या लेना इनसे ? विमला कहां है ?

अमला : मां चिन्ता न कीजिए...

दादी : हाय, चिन्ता न करूं। विमला ने अभी तक न ब्याह का पीला जोड़ा-पहना है, न तेल-उबटन कराया है, न मेंहदी लगवाई है, न बिछुए-चूड़ियां पहनी हैं। कैसा जमाना आ गया ! हमारे समय में ब्याह वाली लड़की पीले जोड़े में लिपटी-सिमटी एक कोने में दुबककर बैठी रहे थी और एक यह विमला है कि ठीक ब्याह के समय कहीं... ओह ! इस लड़की ने तो पुरखों की नाक ही काट डाली। और.. और यह बरात भी तो बिना द्वार-पूजा के घर में घुस आई है।

(सहेलियां फिर हंसती हैं ।)

दादी : अरी, क्या ही-ही लगा रखी है ? बरात घर में आई हुई है। और नहीं, तो कोई गाली या सीठना ही गाओ। (सब हंसती हैं ।)

अमला : (हंसते हुए) दादी मां, हमें तो कोई गाली या सीठना गाना आता नहीं, आप ही कोई...

दादी : (बिगड़ कर) अरी, तुझे गाली-सीठना गाना नहीं आये है ? तो फिर तूने सीखा क्या है ?

सहे० : आज आप सिखा दीजिये न।

(सब लड़कियां हंसे जा रही हैं। दादी मां कुछ गाने लगती है कि तभी बाईं ओर के दरवाजे से सरला जल्दी से आती है ।)

सरला : (आकर) अमला, जीजी बुला रही है।

दादी : (बिगड़ कर) अरी, जीजी के हुक्म की बांदियो, कहीं विमला का भी कुछ पता है ?

दादी माँ जागी

सरला : विमला ? (सब हंसती हुई बाहर चली जाती हैं ।)

दादी : (पीछे लपकते हुए) अरी, जाने से पहले मुझे बताती तो जाओ । (लौट कर) सब चली गईं । इस घर में मेरी कोई नहीं सुनता । अपशकुन का डर न होता तो मैं अभी अपना सिर पीट लेती । मुआ वह चन्दू भी तो कही गायब हो गया है । तभी बब्बू मुंह पोंछता हुआ बाईं ओर के पिछले दरवाजे से आता है ।)

दादी : (लपक कर) अरे, बब्बू !

बब्बू : (रुक कर) क्या है, परनानी ?

दादी : अरे, अपनी विमला मौसी को कही देखा है ?

बब्बू : हां, शाम को वह कार में बैठ कर गई थी ।

दादी : कहां गई थी ?

बब्बू : व्याह कराने ?

दादी : (चौंकर चकित-सी) घर से बाहर व्याह कराने ? क्या कह रहा है, बब्बू ? अरे, उसके साथ कौन गया था ?

बब्बू : नाना जी और मेरी आया ।

दादी : (और भी चौंक कर) आया ? कौन-सी आया ?

बब्बू : (व्यंग से) वही, जिसे आपने उस रात घर से निकाल दिया था और...

दादी : क्या ? (कुछ देर दादी मां का मुंह खुला का खुला रह जाता है ।)

बब्बू : (मजा लेते हुए) परनानी, मम्मी और मौसियो ने आपको खूब बनाया । रात को वह मम्मी के कमरे में सोई और फिर डैडी के आफिस में रहने लगी ।

दादी : (दाँत पीस कर) अच्छा, तो उस कुलटा के साथ सबकी मिली-भगत है । (तभी दाईं ओर के दरवाजे से कृष्ण गोपाल आता है । उसे देखकर बब्बू बाहर भाग जाता है ।)

दादी : (क्रोध से कांपते हुए झपटकर) अरे, किसन, क्या यह ठीक है कि बब्बू की आया अभी गई नहीं ?

कृष्ण : (हंसते हुए) अब वह क्यों जायगी ।

दादी : (आपे से बाहर होकर) कैसे नहीं जायगी ? विमला का ब्याह हो जाय तो...

कृष्ण : अरे, दादी मां, आपको किसी ने बताया नहीं । विमला का ब्याह तो हो गया ।

दादी : (चकित-सी) कहां हो गया ? कैसे हो गया ? न अभी पंडित आया, न वेदी बनी, न भांवरे पड़ी... ।

कृष्ण : (हंसते हुए) दादी मां, जो भांवरे पड़नी थी, वह कचहरी में पड़ गई ।

दादी : (और भी चकित-सी) क्या ? कचहरी में ?

कृष्ण : विमला ने आज शाम को कचहरी में ही तो रमेश ने ब्याह किया है ।

दादी : क्या ? बेदम-सी धड़ाम से सोफे पर बैठ जाती है) हाय दैया, अब तक कचहरी में मुकदमे होते थे, अब ब्याह भी होने लगे । हाय, यह सुनने से पहले मैं मर क्यों न गई । (गुस्से से उठकर) कहां है चन्दू ? मेरे घर में यह अनर्थ ?

(दाईं ओर के दरवाजे से रूपचन्द आता है ।)

रूप० : (हँसते हुए) मां, कोई अनर्थ नहीं हुआ, मतलब यह कि तुम्हें तो आज प्रसन्न होना चाहिये । तुमने विमला की फौरन शादी करने को कहा था, और वह. मतलब यह कि...

दादी : (क्रोध से कांपते हुए) और आज वह कचहरी में हो गई । चन्दू, मैं कहती हूँ...

रूप० : मां, वह तो कुछ नहीं । वह सब तो विमला और रमेश का मन रखने के लिये किया गया है । असल ब्याह तो पूरी धार्मिक विधि से मंडप में ही होगा, मतलब यह कि...

दादी माँ जागी

दादी : (बिगड़ कर) खाक होगा मंडप में ! मैं कहती हूँ चन्दू....

कमला : (जल्दी से आकर) पिता जी, और मेहमान आ रहे हैं ।
स्वागत के लिये दरवाजे पर पहुँचिये न । (डाँटकर) और
किशू, तुम यहां क्या कर रहे हो ? मैंने तुम्हें कहा था कि
कमरे से...(कृष्ण गोपाल बिना कुछ कहे जल्दी से जीने पर
चढ़ जाता है।) और पिता जी आप... ?

रूप० : जा रहा हूँ, बेटी । मां, तुम भी आओ न !

दादी : क्या इतने पराये मदों के सामने धूमनी हुई मैं अच्छी लगूंगी ?

रूप० : अच्छा तो मां, इस खिड़की से झाँक कर देखो । कैसी रौनक
हो रही है । शहर के बड़े बड़े नेता, मन्त्री, सरकारी अफसर
बधाई देने के लिये चले आ रहे हैं, मतलब यह कि...हां मां,
तुम्हें एक और समाचार भी...

कमला : (आँख दबाकर) पिता जी ।

अमला : (जल्दी से आकर) पिता जी, मुख्यमंत्री आये हैं ।

रूप० : (चौंकर) अच्छा !

(रूपचन्द और कमला जल्दी से बाहर जाते हैं ।)

दादी : (अमला से) अरी, विमला कहां है ?

अमला : दादी मां, इस खिड़की से देखिये न । रमेश जीजा के साथ
वह मेहमानों के बीच खड़ी है । वह देखिये ।

(नेपथ्य में बधाई का शोर)

दादी : (खिड़की के पास जाकर) ओह, कैसी निर्लज्ज है यह
लड़की । मुँह-सिर उधाड़े मुस्करा-मुस्करा कर बधाइयों का
उत्तर दे रही है । इसकी जगह मैं होती, तो अब तक लाज
से धरती में गड़ गई होती ।

अमला : दादी मां, यह बेकार की लाज भी क्या ! समाज में जब
स्त्री को बराबर का स्थान प्राप्त है, तो...

दादी : (डाँटकर) अरी, मेरे साथ बहस करे है । हमारे जमाने में

ब्याह वाली लड़की...

अमला : (हंसते हुए) आपके जमाने में तो ब्याह वाली लड़की ससुराल जाते समय यों दहाड़े मार कर रोती थी कि जैसे उसे...

दादी : (चकित-सी) तो क्या यह विमला विदा के समय रोयेगी नहीं ? अरी, जाकर उसे समझा दे कि विदा होते समय और नहीं तो झूठ-मूठ ही रो दे ।

अमला : (हंसते हुए) झूठ-मूठ ?

सरला : (बाहर से आकर) क्या बात है, अमला ?

अमला : (हंसते हुए) सरला, तुम्हारे पास कोई ऐसी दवा है, जिसे आंख में डालने से आंसू बहने लगें ?

सरला : (जल्दी से) आंसू बहने की दवा फिर पूछना, पहले यह बताओ कि वे फूल-मालायें तुमने कहां रखी हैं ?

अमला : मुझे तो पता नहीं । माली जीजी को दे गया था, उन्होंने अन्दर कहीं रखी होंगी ।

सरला : (अमला को खींचते हुए) तो आओ ढूँढें ।

(दोनों बाईं ओर के दरवाजे से अन्दर जाती हैं । दादी माँ अवाक्-सी खड़ी रहती है । तभी जीने से कृष्णगोपाल एक बंडल उठाये हुए नीचे उतरता है ।)

दादी : अरे, किसन, सुन तो...

कृष्ण : (इधर उधर देखकर) क्या है, दादी माँ ?

दादी : कुछ पता है कि विमला ने कचहरी में जाकर क्यों ब्याह किया है ?

कृष्ण : (हंसते-हुए) ताकि जब जी चाहे रमेश को तलाक दे सके ।

दादी : (हैरान-परेशान) हाय दया, ब्याह के साथ ही तलाक की भी तैयारी ! ऐसे ब्याह से तो विमला कुँआरी ही रहती तो अच्छी थी । लेकिन मुझे गुस्सा तो चन्दू पर आ रहा है कि..

कृष्ण : (बड़ी गम्भीरता से) नहीं, दादी माँ, पिता जी पर गुस्सा

दादी माँ जागी

न कीजिए । उन्होंने अपना विवाह तो...

दादी : (चौंक कर) अरे, किसका ब्याह ?

कृष्ण : ओह, तो अभी तक आपको यह समाचार भी नहीं मिला ।
अच्छा, तो आपको पिताजी के ब्याह की भी बधाई ।

दादी : (और भी चौंक कर) तो क्या चन्दू का भी ब्याह हो गया ?
(तभी बाहर से कमला आती है । दादी मां का प्रश्न सुन
कर उसकी भौहें तन जाती हैं । बाईं ओर के पिछले दरवाजे से
सरला और अमला फूलों के हार लिए हुए आती हैं और
रुक जाती हैं ।)

कमला : (डांटते हुए) किशू, औरतों की तरह तुम्हारे पेट में भी
बात नहीं पचती ? मैंने कहा था कि...

कृष्ण : (सहम कर, झकलाते हुए) कमला, मैंने तो...

दादी : (हैरान परेशान-सी) अरी, कमला, क्या बात है । तुम सब
मुझ से छिपा क्यों रही हो ? मेरे बेटे का ब्याह और
मुझ से दुराव ।

कृष्ण : कमला, अब छिपाने से क्या लाभ ? दादी मां को बता दो ।

कमला : तो सुनिये, दादी मां ! आप हठ कर रही थी न, कि पिताजी का
ब्याह भी जल्द हो जाय । पिताजी ने भी सोचा कि विमला
के ब्याह में कन्यादान की रस्म विधिवत् सम्पन्न करने के
लिये पत्नी का भी होना आवश्यक है. सो उन्होंने एक अच्छे
कुल की विधवा से...

दादी : (धड़ाम से सोफे पर गिर कर, लड़खड़ाते स्वर में) विधवा
से ? चन्दू ने विधवा से ब्याह कर लिया ? मुझे बताया नहीं ?
यह अधर्म ! (कहते-कहते स्वर मंद हो जाता है । आँखें
मुंद जाती हैं ।)

सरला : दादी मां, इसमें अधर्म कैसा ? अगर धर्म रंडुए पुरुष को दूसरा
विवाह करने की अनुमति देता है, तो विधवा को भी...।

अमला : एक विधवा का उद्धार करके पिताजी ने वह काम किया है कि...

कृष्ण : अरे, पिताजी के काम का बखान बाद में होता रहेगा, पहले दादी मा की हालत तो देखो ।

सरला : (चौंक कर आगे बढ़कर, जल्दी से नाड़ी और हृदय की गति देखकर) 'एँ, दादी मां तो बेहोश हो गईं' ।

लड़क : फिर बेहोश हो गईं !

सरला : अमला, जल्दी से मेरा बैग उठा लाओ ।

(अमला जल्दी से अन्दर जाती है । चारों ओर शोर मच जाता है । बेंड और शहनाई बंद हो जाती है । बाहर से रूपचन्द घबराया हुआ भागा भागा आता है । उसके पीछे आया, विमला, रमेश और कई लोग भी आ जाते हैं ।)

रूप० : (घबराया-सा, रुंधे गन्ने से) अरे, क्या हुआ मेरी मां को, मतलब यह कि... ?

कमला : आपके ब्याह की खबर सुनकर...(अमला बैग लेकर आती है ।)

अमला : यह लो, सरला ।

(सरला स्टैथेस्कोप निकाल कर परीक्षण करती है ।)

रूप० : (सिसकते हुए , हाय, मैं जानता था कि मां के हृदय को आघात पहुँचेगा । लड़कियों, मैंने कहा था न कि मां से पूछ लिया जाय, परन्तु तुम नहीं मानी, मतलब यह कि....

कृष्ण : ओह, दादी मां जागकर फिर सो गईं ।

रूप० : (रोते हुए) सदा के लिए सो गईं, मतलब यह कि...

दादी : (एकाएक होश में आकर) क्या कह रहा है, रे चन्दू ? सदा के लिए सोयें मेरे दुश्मन । लेकिन मैं पूछती हूँ कि तूने... ?

सरला : (डाक्टर के लहजे में) अब कोई खतरा नहीं ।

सब : बधाई हो ! दादी मां फिर जाग गईं !

रूप० : (मां के पांव पकड़कर, गद्गद् स्वर में) मां, मैंने तुम्हारे कहने से ही, मतलब यह कि...

दादी माँ जागी

दादी : अरे, क्या मां-मां लगा रखी है। मुझे बड़े जोर की प्यास लगी है।

रूप० : अरे, जल्दी से मां के लिये दूध लाओ।

आया : मैं अभी लाई। (अन्दर जाती है।)

रूप० : अरे, बैड क्यों बन्द हो गया।

कमला : किशू !

कृष्ण : (जाते हुए) मैं बैड फिर शुरू करवाता हूँ, पिताजी।

रूप० : रमेश विमला को लेकर आगे आओ। मां, इन्हें आशी-
र्वाद दो कि ... (रमेश और विमला आगे आते हैं।)

दादी : (रमेश को ध्यानपूर्वक देखकर) अरी विमला, तूने दूल्हा
तो बड़ा अच्छा चुना। अरे चन्दू, तेरी बहू कहां है ? उसे
भी तो देखूँ। (आया दूध लेकर आती है।)

आया : लीजिये दूध, मां जी।

दादी : (चौंककर) कौन आया ? दूर हो जा मेरी आंखों के सामने
से। मैं तेरे हाथ से...

अमला : सरला, दादी माँ की नब्ज देखते रहना। (कहकहा।)

रूप० : (हंसते हुए) माँ, अपनी बहू के हाथ से दूध नहीं पीओगी ?

दादी : (विस्फारित नेत्रों से, चौंकर) क्या ? अरे चन्दू, तूने इस
आया से ब्याह किया है ? हाय दैया, मैं कहूँ...

रूप० : (घिघियाते हुए) हां माँ, पूरी धार्मिक विधि से किया
है। तुमने कहा था न कि, मतलब यह कि...

दादी : अच्छा-अच्छा, सुन लिया। अरी बहू, खाली दूध क्यों लाई है।
थोड़ी-सी मिठाई तो ले आ। मुझे भूख लगी है (सब हंसते हैं।)

कमला : (आगे बढ़कर) दादी मां, ये फूल-मालायं पहनाकर दोनों
जोड़ों को आशीर्वाद दीजिये।

(सब हर्ष-मग्न। नेपथ्य में बैड और शहनाई का स्वर उभ-
रता है और पर्दा गिरता है।)

समाप्त।

खजाने का साँप

पात्र-परिचय

- श्रीकान्त : खिलाड़ियों जैसे डोल-डोल वाला एक पढ़ा-लिखा छुशीला नौजवान, कमला का पति ।
- कमला : श्रीकान्त की युवा पत्नी और एक बूढ़े सेठ की इकलौती लड़की ।
- भीखू और सरजू : पुराने नौकर, आयु ३५-४० वर्ष ।
- सँपेरा और ड्राइवर : बिना नाम के 'टिपिकल' प्राणी ।

पहला दृश्य

समय—रात के ११ बजे नौ बज चुके हैं।

स्थान—दिल्ली से कोई सात-आठ मील की दूरी पर एक जंगल में एक पुरानी बावली।

[जंगल के बीच थोड़ी-सी खुली जगह। सामने की ओर काई लगे पुराने पत्थरों की बनी हुई बावली की ऊँची टूटी-फूटी मुँडेर, जिसमें बिना किवाड़ों का एक मेहराबदार दरवाजा बना हुआ है। इसी दरवाजे से नीचे बावली में सीढ़ियाँ जाती हैं। दाईं ओर एक टेंट लगा हुआ है। बाईं ओर घने वृक्षों में से एक ऊबड़-खाबड़-सा रास्ता जंगल के बाहर जाता है। यहीं, जरा आगे की ओर, अलाव जल रहा है, जिसकी लपटें रात के घटाटोप अंधकार को भेदने का असफल प्रयास करती हुई, बावली की टूटी-फूटी मुँडेर पर अनजानी आकृतियों की छाया-लीला का सृजन कर रही हैं। यह अलाव, प्रकाश के अलावा, उन वन्य पशुओं को दूर भगाने के उद्देश्य से भी प्रज्वलित किया गया है, जिनका स्वर नेपथ्य में रह-रह कर गूँज उठता है।

जब पर्दा उठता है, तो नीचे बावली से सँपेरे की बीन का लहरीला स्वर उठता हुआ मंद-मंद सुनाई देता है। मुँडेर का किंचित् प्रकाशित दरवाजा इस बात का सूचक है कि नीचे बावली में सँपेरे के पास गैस-लैंप जल रहा है। इस दरवाजे के पास एक पत्थर पर चुस्त नीकर और कमीज पहने हुए श्रीकान्त बैठा है। उसकी नजर हाथ की घड़ी पर और कान बीन के स्वर पर लगे हैं। उसके पास ही एक दोनाली बन्दूक और बड़ी टार्च रखी है। दाईं ओर

स्वजाने का साँप

जगे हुए टेंट में बिस्कुल अंधेरा है। श्रीकान्त, कुछ देर बाद, बीन के स्वर पर फनियर साँप की तरह झूमता हुआ-सा उठता है और हर्षित-सा अज्ञाव की ओर बढ़ता है।]

श्रीकांत: (स्वगत) अहा ! क्या कमाल की मस्तानी बीन बजा रहा है यह सँपेरा। जी हाँ, सुन कर बावली का साँप क्या, घुर पाताल में शेषनाग भी झूम उठे होंगे। (सहसा वन-पथ की ओर निहारते हुए) लेकिन...लेकिन...वह सरजू अभी तक शहर से....

(तभी सहसा टेंट के अन्दर कुछ हलचल-सी होती है और भीखू का भयभीत स्वर सुनाई देता है “साँप ! साँप !!”)

श्रीकांत: (सहर्ष, बावली के द्वार की ओर लपकते हुए) तो क्या बावली से साँप निकल आया ?

भीखू : (टेंट के अन्दर से) सरकार, मुझे बचाइये। साँप ने मुझे जकड़ रखा है।

श्रीकांत: (पुकार की ओर ध्यान न देते हुए, सहर्ष) अहा, कैसी सफल रही मेरी योजना ! जी हाँ, सपेरे ने बीन बजाई और खजाना छोड़ कर साँप बावली से बाहर। (खुशी से) अहा, आज मैं लखपति बन गया, करोड़पति बन गया, अरबपति बन गया, जी हाँ।

भीखू : (टेंट के अन्दर जैसे दम तोड़ते हुए) मुझे बचाइए, सरकार, साँप से।

श्रीकांत: (टेंट के पास आकर) अरे, क्यों चिल्ला रहा है भीखू। इस मुंजी साँप को यहीं उलझाये रख, जी हाँ,। मैं कुदाल और रस्सा लेकर बावली में कूदता हूँ, और...और.... (एकाएक बावली के द्वार की ओर पलटकर) यह बीन वाला भी एक दम गधा है। जी हाँ, साँप बावली से निकल कर यहाँ

आ गया, और वह अभी तक नीचे सीढ़ियों पर बैठा बीन बजाये जा रहा है । (जोर से पुकारते हुए) अरे जोगी महाराज, बीन बन्द करो, और जल्दी से ऊपर आओ । (नीचे बावली में बीन का स्वर एकाएक बन्द हो जाता है और श्रीकान्त टेंट की ओर लौटता है ।) ओह ! अजीब मुसीबत है । कुदाल और रस्सा तो टेंट में है, और वहीं साँप भीखू काँ जकड़े पड़ा है । अन्दर कैसे जाऊँ ? (श्रीकान्त दुविधाग्रस्त-सा टेंट के बाहर खड़ा हो जाता है । तभी बावली के द्वार पर हाथ में बीन और कंधे पर झोला ढाले हुए सँपेरा दिखाई देता है ।)

सँपेरा : (आकर) श्रीमान, आपने मुझे बुलाया था ?

श्रीकान्त : (झुल्लाकर) अरे, जोगी महाराज, मैं तुमसे पचास बार कह चुका हूँ कि मेरा नाम श्रीमान नहीं, श्रीकान्त है, जी हाँ, श्रीकान्त ।

सँपेरा : लेकिन हुआ...

श्रीकान्त : और मैं कहता हूँ, तुम कैसे सँपेरे हो ? साँप बावली से निकल कर यहाँ टेंट में आ गया और तुम्हें पता तक नहीं चला । जी हाँ, तुम्हें पता तक नहीं चला ?

सँपेरा : (आश्चर्य से) क्या कह रहे हैं आप ? साँप बावली से निकल कर...?

श्रीकान्त : विश्वास न हो तो टेंट के अन्दर जाकर देख लो । जी हाँ, साँप मेरे नौकर को जकड़े हुए है । (एकाएक चिन्तित-सा) ऐ, भीखू की अब आवाज नहीं सुनाई दे रही । लगता है, साँप ने उसे ठंडा कर दिया । ओह, एक आदमी की बलि लेकर ही यह माना (बिगड़कर) जोगी महाराज, तुम अभी तक यहीं खड़े हो, जल्दी से टेंट में जाओ और अपने जन्तर-

मन्तर से साँप को कील कर पिटारी में डालो। जी हाँ,
बेचारा भीखू तो...

सँपेरा : आपके पास टार्च है न ?

श्रीकांत : (टार्च उठाकर, जलाकर) यह रही।

सँपेरा : तो जरा टैंट में रोशनी फैकिये। मैं साँप को पकड़ता हूँ।

श्रीकांत : (टार्च की रोशनी टैंट के अन्दर डालते हुए) लो, जल्दी
आगे बढ़ो।

(सँपेरा बीन बजाता हुआ टैंट के अन्दर जाता है। कुछ देर
बाद बीन बन्द हो जाती है और सँपेरे की हँसी सुनाई
देती है।)

सँपेरा : (हँसते हुए बाहर आकर) हजूर, आपका और आपके नौकर
का भी जवाब नहीं।

श्रीकांत : (बिगड़कर) क्या मतलब ?

सँपेरा : जरा गौर से देखिये, आपके नौकर के पाँव में साँप नहीं, रस्सा
उलझा हुआ है।

श्रीकांत : (चौंककर) क्या ? (जल्दी से टार्च की रोशनी में टैंट के
अन्दर झाँकता है।)

सँपेरा : (हँसते हुए) जो हाँ, मैं भी कहूँ, नीचे बावली में गैस-लैम्प
जल रहा है, साँप बावली से निकल कर बिना मुझे दिखाई
दिये ऊपर कैसे आ गया। (हँसता है।)

श्रीकांत : (अपनी शर्मिन्दगी छिपाते हुए, बिगड़कर) क्या ही-ही
लगा रखी है। देखते नहीं, यह भीखू तो बेहोश पड़ा है,
जी हाँ।

सँपेरा : (गम्भीर होकर) यह किसी काम से टैंट में...?

श्रीकांत : मैंने इसे टैंट में लेप जलाने को कहा था।

सँपेरा : (टैंट के अन्दर जाते हुए) ठीक है। अंधेरे में यह रस्सा
इसके पाँव से उलझ गया होगा और रस्से को साँप समझ

कर यह दहशत से बेहोश हो गया होगा। थोड़ा-सा पानी दीजिये, मैं इसे होश में लाता हूँ।

श्रीकांत: वह सामने सुराही रखी है। (अधीरता से) लेकिन इसे होश में लाने का काम मुझ पर छोड़ो। तुम भाग कर नीचे बावली में जाओ और फिर से बीन खजाना शुरू करो। जी हाँ, मुहूर्त निकला जा रहा है।

(बावली के द्वार की ओर जाता हुआ सँपेरा मुहूर्त के नाम पर ठिठक जाता है।)

सँपेरा : (पलट कर) मुहूर्त ? कैसा मुहूर्त ?

श्रीकांत: (जैसे बात बनाते हुए) अरे, भई, साँप के बावली से निकलने का मुहूर्त, जी हाँ, ज्योतिषी ने कहा है कि....

सँपेरा : (पास आकर श्रीकान्त पर भेद-भरी दृष्टि डालते हुए) अब मैं समझा।

श्रीकांत: (सटपटाकर) क्या समझे ?

सँपेरा : (धूरकर) इस पुरानी बावली में कोई खजाना गड़ा है और उस पर साँप कुडली मारे बैठा है। आप उस साँप को हटा कर खजाने पर अधिकार करना चाहते हैं।

श्रीकांत: (क्षणभर के लिये स्तब्ध-सा रह जाता है और फिर बात बनाते हुए) अरे नहीं, जोगी महाराज, आप किस वहम में पड़ गये। जी हाँ, इस बावली में खजाना कहाँ से आयेगा ?

सँपेरा : (मुस्कराकर भेद-भरे स्वर में) अजी, मैं दुनिया देखे हुए हूँ। आप मुझे नहीं बना सकते।

श्रीकांत: अरे, इसमें बनाने की क्या बात है ? सच तो यह है कि मैंने बावली समेत यह सारा जंगल ठेके पर लिया है। जी हाँ, एक दो दिन में यहाँ लकड़ी की कटाई का काम शुरू हो जायगा। यह जानकर कि, इस बावली में एक भयंकर नाग रहता है, मैंने सोचा कि उसे निकलवा दिया जाय, ताकि यहाँ काम

करने वाले मजदूरों को कोई हानि न पहुंचे । लो, अब जल्दी से जाकर बीन बजाना शुरू करो । (सँपेरे को बावली की ओर धकेलते हुए) जी हाँ, बीन ऐसी बजाओ कि साँप खिंचा चला आये । ज्यों ही वह ऊपर आये उसे पकड़ कर पिटारी में बन्द कर लेना और...

सँपेरा : (श्रद्धांग-सा) हजूर, साँप तो पिटारी में बन्द हो जायगा, लेकिन इस काम के दस रुपये बहुत कम है ।

श्रीकांत : (बनावटी आश्चर्य से) वाह, दस रुपये की रकम कम है ? जी हाँ, तुम दिन भर इधर उधर भटक कर साँप का तमाशा दिखाते हो और शायद ही दस रुपये कमा पाते होगे ।

सँपेरा : (दृढ़ता से) साँप के तमाशे से मैं रोजाना क्या कमाता हूँ, यह बातें जाने दीजिये । अब तो यह फैसला होना चाहिये कि अगर मेरी बीन के जादू से बावली का साँप खजाना छोड़ कर बाहर आ गया तो आप मुझे क्या देंगे ?

श्रीकांत : (बिगड़ कर) तुम फिर वही खजाने की रट लगाये जा रहे हो । कह जो दिया कि बावली में खजाना-बजाना कोई नहीं, जी हाँ ।

सँपेरा : (आँखें तरेकर) आप मुझे उटाड़िये नहीं । इस बावली में खजाना है और उसे पाने के लिए आपने लुक-छिप कर रात के इस अन्धकार में यह सब प्रपंच रचा है । मैं साफ साफ कहता हूँ यदि मेरी बीन के जादू से साँप खजाना छोड़ कर आ गया तो एक चौथाई खजाना मेरा ।

श्रीकांत : (बिगड़कर) एक चौथाई क्यों, सारा ही तुम ले जाना, जी हाँ ।

सँपेरा : (बिना टस-से-मस हुए) नहीं, हजूर, मैं तो कायदे की बात करता हूँ । यह तो आप भी जानते हैं और मैं भी जानता हूँ कि जब तक बावली के अन्दर वह साँप खजाने की रक्षा कर

रहा है, कोई भी आदमी खजाने को हाथ नहीं लगा सकता । अपनी जान जोखों में डाल कर मैं साँप को खजाने पर से हटाने का यह जो काम कर रहा हूँ, इसकी उचित मजदूरी मुझे मिलनी ही चाहिये ।

श्रीकांत: ठीक है, लेकिन मजदूरी खजाने की एक चौथाई तो नहीं हो सकती ।

सँपेरा : तो फिर मैं घर जाता हूँ । (वन-पथ की ओर बढ़ता है ।)

श्रीकांत (घबराकर, पीछे लपकते हुए) अरे जोषी महाराज, जा क्यों रहे हो, जरा सुनो तो ।

सँपेरा : (पलटकर) कहिये ।

श्रीकांत देखो, मेरे साथ मेरे ससुर के घर से दो नौकर भीखू और सरजू आये हैं । उनसे मैंने वायदा कर रखा है कि अगर खजाना मिल गया, तो दोनों को मैं एक एक हजार रुपया दूंगा । बस, यही इनाम तुम्हारा तय हुआ, जी हाँ ।

सँपेरा एक हजार तो बहुत थोड़ा है ।

श्रीकांत थोड़ा है ?

सँपेरा . खैर, आप भले आदमी जान पड़ते हैं । मैं इतना ही स्वीकार किये लेता हूँ ।

श्रीकांत लेकिन एक शर्त है ।

सँपेरा . क्या ?

श्रीकांत: खजाने वाली बात, किसी को कानो कान मालूम न हो ।

सँपेरा . इस बारे में आप निश्चिन्त रहिए ।

श्रीकांत: (सहर्ष) तो तुम जल्दी से नीचे बावली में जाकर बीन बजाना शुरू कर दो । जी हाँ, ऐसी बीन बजाओ कि...

सँपेरा (सुस्कराकर गर्व से) अजी, आप मेरी करामात देखिये । मेरी बीन में वह जादू है कि सुनकर मीलों से साँप भागे चले आते हैं

श्रीकांत: खैर, इस बावली का साँप तो १५-२० फुट से अधिक दूरी पर नहीं है। तो अब देर न करो। मुहूर्त बीता जा रहा है।

सँपेरा : आप घबराइए नहीं, श्रीमान !

श्रीकांत: श्रीमान नहीं, श्रीकान्त कहो।

(सँपेरा बीन बजाता हुआ नीचे बावली में उतरता है और फिर बीन का स्वर निरन्तर नेपथ्य में सुनाई देता रहता है। श्रीकान्त द्वार के पास कान लगाकर मुग्ध भाव से बीन को सुनता रहता है।)

सँपेरा : (कुछ देर बाद, पत्थर पर बैठते हुए, स्वगत) यह सपेरा भी एक ही कांइयाँ निकला। जी हाँ, दस की जगह एक हजार ले मरा। (उँगलियों पर गिनते हुए) एक हजार भीखू को, एक हजार सरजू को, और एक हजार सँपेरे को। यह हुए तीन हजार। कोई हजार-वारह सौ सेठ घुन्नामल को देने है। खैर, अगर खजाना हाथ लग गया, तो मैं अरबपति नहीं, तो करोड़पति तो हो ही जाऊंगा। जी हाँ, तब चार हजार देना क्या शुश्किल होगा। (दांत पीसकर) और फिर मैं दिखाऊंगा उस बूढ़े खूसट को कि...

(तभी भीखू टैंट से भागा हुआ आता है।)

भीखू : तो सरकार, एक हजार रुपया आप मुझे देगे न ?

श्रीकांत: (चौंकर) अरे, भीखू ? खैर, अच्छा किया कि तू अपने आप होश में आ गया। जी हाँ, उस धूर्त सँपेरे ने ऐसा भ्रंशट खड़ा कर दिया कि मैं तुझे भूल ही गया था। और...और तू कितना डरपोक है कि रस्से को साँप समझ बैठा। (हँसता है।) जी हाँ, रस्से को साँप। तू अपने आप होश में कैसे आया ?

भीखू : (खीसें निपोरते हुए) सरकार, रुपये के नाम में बड़ी शक्ति

है । ज्यों ही आपने मुझे एक हजार रुपये देने की बात कही, मेरी चेतना अपने आप लौट आई और म...

श्रीकांत: (घूरते हुए) हूं । रुपये की यही शक्ति मैं उम बूढ़े खूमट को दिखाना चाहता हूँ ।

भीखू : सरकार, मैंने तय किया है कि आपसे एक हजार मिलते ही मैं तुरन्त शादी कर लूँगा ।

श्रीकांत: (चौंकर) शादी ?

भीखू : हाँ, सरकार । हमारे गाँव में एक लडकी है, जो....

श्रीकांत: खैर, शादी तुम भले ही कर लेना, परन्तु मेरी तरह घर-जमाई बनकर न रहना, जी हाँ ।

भीखू : राम का नाम लीजिए, सरकार । घर-जमाई बन कर रहने में कोई इज्जत है ? देखिए न, सेठजी ने आपको कितना अपमानित करके घर में निकाला है । और तौ और, माल-किन ने भी...

श्रीकांत: (गुस्से से तड़पकर उठते हुए) भीखू, उस कमला का मेरे सामने नाम न ले । उसी ने मुझे घर जमाई बनने पर मजबूर किया था । जी हाँ, घर-जमाई बनते ही मैं निकम्मा और नाकारा हो गया । वर्ना क्या मैं अलग गृहस्थी बसाकर दो-ढाई सौ रुपया महीना नहीं कमा सकता था ?

भीखू : वाह सरकार, लखपति की डकलौती लडकी से विवाह करके आपको भला बाहर दो-ढाई सौ की नौकरी करने की क्या पड़ी थी ?

श्रीकांत: मैंने भी यही सोचा था, लेकिन वह बूढ़ा इतना कंजूस होगा कि जब खर्च देना भी बन्द कर देगा, इसकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी ।

भीखू : खैर, इस बात पर कि छै सात महीने में बूढ़े सेठजी परलोक सिधार जायेंगे, आपको सेठ घुन्नामल से मजे से कर्ज मिल

रहा था—जेब-खर्च के लिए । और आज भी आप इसी नारंटो पर सेठ घुन्नामल से और भी कर्ज ले सकते हैं ।

श्रीकांत: (डांटकर) भीखू, तू गधा है ।

भीखू : (चौककर) जी ?

श्रीकांत: अरे, बछिया के ताऊ, अब यह श्रीकान्त कर्ज लेगा नहीं, दुनिया भर को कर्ज देगा । जी हाँ, अगर यह बावली वाला खजाना हाथ लग गया, तो बस, सूरज की पहली किरण श्रीकान्त को इस प्रदेश के सबसे बड़े धनपति के रूप में पायेगी ।

भीखू : परन्तु सरकार, यह क्या तय है कि जिस साँप ने पिछले डेढ़ मी वर्ष से खजाने को नहीं छोड़ा, वह आज इसे छोड़कर बाहर चला आयेगा ।

श्रीकांत: क्यों नहीं आयेगा ? आज उसे बाहर आना ही होगा । जी हाँ, यह बीन का जादू-भरा स्वर, तारों भरी रात, ज्योतिषी का बताया हुआ शुभ मुहूर्त और ...

भीखू : तो क्या वह शुभ मुहूर्त शुरू हो चुका है, सरकार ?

श्रीकांत: हाँ । (हाथ की घड़ी देखते हुए) मुहूर्त शुरू होना था नौ बज कर २६ मिनट और २० सेकंड पर । अब नौ बज कर ३७ मिनट हो गये हैं ।

भीखू : (उमंगकर) फिर तो...

श्रीकांत: जी हाँ, सँपेरा किसी भी समय साँप के निकलने का संवाद लेकर आ सकता है । तू भाग कर टेंट से रस्सा और कुदाल ले आ ।

भीखू : अभी लाया । (शीघ्रता से टेंट के अन्दर जाता है ।)

श्रीकांत: (एकाएक वन-पथ की ओर देखते हुए) वह सरजू अभी तक शहर से नहीं लौटा ।

भीखू : (टेंट से कुदाब और बड़ा-सा रस्सा लाते हुए) अब तक तो

उसे लौट आना चाहिए था । तीन बजे यहाँ से गया था, साढ़े छै घंटे हो गये ।

श्रीकांत : अरे, यह तो मुझे भी मालूम है । मैं पूछता हूँ वह अभी-तक लौटा क्यों नहीं ? जी हाँ, कोई इतना बड़ा काम तो था नहीं । यह सोचकर कि बावली के तले से खजाने की पेटी को निकालने के लिए शायद एक कुदाल और रस्सा काफी न हो, मैंने उसे एक और कुदाल और रस्सा खरीद लाने के लिए शहर भेजा था । दो चीजें खरीदने में उसे इतना समय कैसे लग गया ?

भीखू : कुंवर साहब की बिकाऊ कोठी के वारे में उनके कारिन्दे से बात भी तो करनी थी ।

श्रीकांत : तो बात करने में साढ़े छै घंटे लग गये ? साइकल पर यहाँ से शहर का रास्ता आध-पौन घंटे का है । (सहसा) भीखू मुझे तो भय है कि कहीं उसकी नीयत खराब न हो गई हो ।

भीखू : किसकी नीयत, सरकार ?

श्रीकांत : (चिन्तित-सा) अरे, उस सरजू की । जी हाँ, वह बड़ा इनाम पाने के लालच से बावली के गुप्त खजाने की सूचना पुलिस को दे सकता है ।

भीखू : नहीं सरकार, सरजू इस तरह विश्वास-घात नहीं कर सकता । मैं उसे बचपन से जानता हूँ । हम दोनों आठ-आठ साल के थे, जब बड़े सेठजी के यहाँ आकर नौकर हुए थे । ३० वर्ष की नौकरी में मजाल है इसने या मने कोई बेईमानी की हो ।

श्रीकांत : खैर, तुम लोगों ने बेईमानी न की हो, लेकिन वह वूढ़ा-खुसट तो तुम दोनों को ईमानदार नहीं समझता था, जी हाँ ।

भीखू : सरकार, सेठजी तो सभी की ईमानदारी पर सदेह करते थे । वे समझते थे कि हर कोई उनकी तिजोरी उड़ाने की फिराक में है । और तो और, वे आप पर भी शक करते थे, इसीलिए

उन्होंने आपको कभी तिजौरी वाले कमरे में नहीं आने दिया था ।

श्रीकांत : (घृणा से) मुझे क्या पड़ी थी उस कमरे में जाने की । आज मुगल-काल के सेठ कुबेरचन्द का यह खजाना हाथ लग जाय, फिर बताऊँगा उस बूढ़े खूसट को कि दुनिया में वही अकेला धनवान नहीं है । जी हाँ, उसके सामने कोठी लेकर ठाठ से रहूँगा, और उसकी छाती पर मूँग दलूँगा । (एकाएक) लेकिन भीखू, वह सरजू अभी तक नहीं आया ।

भीखू : सरकार, चिन्ता न कीजिये, आता ही होगा ।

श्रीकांत : मान लो कि साँप खजाना छोड़ कर अभी चला जाय, तो बिना दूसरी कुदाल और रस्से के बावली में से खजाने वाली पेटी हम कैसे निकालेंगे ?

भीखू : सरकार, एक रस्सा और कुदाल ही काफी है । मैं बावली में उतर कर कुदाल से खजाने की पेटी को कीचड़ से निकालूँगा और आप उसमें रस्सा बाँध देंगे । फिर हम दोनों उसे खींचते हुए...

श्रीकांत : खैर, अगर इस सरजू ने मुझे धोखा दिया तो मैं उसे गोली से उड़ा दूँगा, जी हाँ ।

भीखू : लेकिन सरकार, इस बन्दूक का लाइसेन्स तो आपके नाम नहीं बड़े सेठजी के नाम है ।

श्रीकांत : (ढपटकर) चुप रह, भीखू । लगता है, तेरी नीयत भी खराब हो रही है ।

भीखू : सरकार, आप यह कैसी बातें कर रहे हैं । आपकी खातिर हमने आपके ससुर बूढ़े मेठजी को छोड़ा, दर-दर की ठोकरें खाईं, इस भूतों के डरे में आने का जोखिम उठाया । खैर, आपका भी दोष नहीं । जल्द ही आप धनवान बनने वाले हैं और धनवानों का स्वभाव शक्की होता ही है ।

श्रीकांत : (हँसकर) अरे, मैं तो यों ही बात कर रहा था । लेकिन भीखू, अगर हम आज रात खजाने को बावली से न निकाल पाये, तो यह हमारे हाथ से चला जायगा । जी हाँ, हमारा यह परिश्रम व्यर्थ जायगा और...

भीखू : वह कैसे, सरकार ?

श्रीकांत : अरे, यह सँपेरा गाँव में जाकर सब कुछ कह देगा और दिन चढ़ते ही बीसियों दावेदार हमें आकर घेर लेंगे । (एका-एक चौंककर) भीखू देखना, वह सामने रोशनी कैसी है ? (भीखू वन-पथ की ओर देखता है । दूर से कार का भोंपू सुनाई देता है ।)

भीखू : सरकार, यह तो किसी कार की रोशनी जान पड़ती है ।

श्रीकांत : (घबराकर) कार की रोशनी ? कार इधर क्या करने आ रही है ? मैंने तो सुना है कि आस-पास के लोग इस बावली में भूतों का वास मानते हैं, इसलिए रात के समय कोई भी इधर आने का साहस नहीं करता ।

भीखू : (सोचते हुए) लेकिन सरकार, पुलिस तो कर सकती है ।

श्रीकांत : (डरकर) पुलिस ? लेकिन...लेकिन...

भीखू : (घबराकर) सरकार, वह आप सरजू की नीयत बदलने की बात कह रहे थे न ।

श्रीकांत : (सिर पकड़कर) ओह, अब समझा । सरजू ने मेरे साथ विश्वासघात किया । खैर, कोई बात नहीं । बाद में उससे सुलट लूंगा । वह कार इधर ही आ रही है । तू भाग कर नीचे बावली में जाकर सँपेरे की बीन बन्द करा दे और गैस-लैम्प बुझा दे । बावली में कोई शब्द न हो । मैं उधर टेंट के पीछे छिप जाता हूँ ।

भीखू : यही ठीक है, सरकार ! (जल्दी से बावली में उतर जाता है ।)

श्रीकांत: (जल्दी से बंदूक और टार्च उठाकर टेंट के पीछे छिपता हुआ ।) ओह, मैंने बेकार ही इन नौकरों पर भरोसा किया । (तभी नीचे बावली से बीन का स्वर और गैस-लैम्प का प्रकाश आना वन्द हो जाता है । आस-पास सन्नाटा छा जाता है । अलाव की लौ इतनी नहीं कि स्पष्ट दिखाई दे सके । कुछ देर बाद पास पहुँचती हुई कार की आवाज नेपथ्य में उभरती है और बाईं ओर के वन-पथ से आता हुआ कार की बत्तियों का प्रकाश स्टेज को आलोकित कर देता है । नेपथ्य में कार के रुकने और दरवाजा खुलने का शब्द और फिर सरजू के पीछे-पीछे कमला और वर्दीधारी ड्राइवर का प्रवेश । सरजू ने कुदाल के साथ रस्सा उठाया हुआ है ।)

कमला : (सहमी-सी, इधर-उधर देखती हुई) सरजू, वहाँ तो कोई दिखाई नहीं दे रहा ।

सरजू : नही, मालकिन, छोटे सरकार और भीखू यही कहीं होंगे । देखिए न यह कुदाल, रस्सा और टेंट...(एकाएक) वह देखिए, छोटे सरकार टेंट के पीछे से चले आ रहे हैं ।

कमला : (ठहाका मारकर) अच्छा. यह डर के मारे छिप गये थे ।

श्रीकांत: (आकर गुस्से से) सरजू , तुमसे किसने कहा था इन्हें साथ लाने को ?

कमला : (हँसते हुए) वाह, मुझे भी यहाँ आने के लिए अनुमति लेने की जरूरत थी ?

श्रीकांत: (बेरुखी से) कमला, मैं तुमसे बात नहीं कर रहा, जी हाँ ।

कमला : (एक दम आगे बढ़कर) खैर, मैं तो कर रही हूँ, जी हाँ ।
(तभी भीखू बावली के द्वार पर प्रकट होता है।)

भीखू : (पास आकर) आहा, मालकिन आईं हैं !

श्रीकांत: भीखू, जा सँपेरे से कह कि फिर से बीन बजाना शुरू कर दे ।

और हाँ, (जेब से माचिस निकालकर) यह माचिस ले जा
गैस-लैम्प लाकर तू भी सँपेरे के पास ही बैठना । साँप
ज्योंही बाहर निकले, मुझे तुरन्त खबर देना ।

भीखू : (जाते हुए) बहुत अच्छा, सरकार ।

कमला : (श्रीकान्त से) तो खजाना अभी मिला नहीं ?

श्रीकांत: (बिगड़कर) सरजू, लगता है, तूने शहर में खजाने का ढिंढोरा
पीट दिया है ।

सरजू : (कुदाल और रस्सा नीचे रखकर हकलाते हुए) नहीं सरकार,
मैं एक दूकान से रस्सा और कुदाल खरीद रहा था, तभी
मालकिन कार में गुजरीं । इन्होंने मुझे देख लिया और ..

श्रीकांत: (दान्त पीसकर) और तूने इन्हें सब कुछ बता दिया ।

कमला : अरे, आप इस बिचारे सरजू पर क्यों बिगड रहे हैं ? मैं
बताती हूँ ।

श्रीकांत: कमला, मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता ।

कमला : वाह, नाराज मुझे होना चाहिए, आप उलटे मुझ पर नाराज
हो रहे हैं । आप दस दिन से घर से गायब हैं । कहाँ हैं, क्या
क्या कर रहे हैं, कोई खबर तक नहीं भेजी ।

श्रीकांत: (बेरुखी से) अच्छा, अब तो खबर मिल गई कि मैं कहाँ हूँ,
कर रहा हूँ । अब तुम फौरन लौट जाओ ।

कमला : अच्छा, तो आपको मुझसे इतनी घृणा हो गई कि...

श्रीकांत: देखो, कमला, मेरे पास बहस के लिए समय नहीं है । ड्राइ-
वर, इन्हें वापिस घर ले जाओ, और साथ सरजू को भी,
जी हाँ ।

कमला : नहीं ड्राइवर, मैं यहीं ठहरूंगी । तुम कार वापस ले जाओ ।

श्रीकांत: नहीं, कमला...

कमला : आप मुझे जबरदस्ती तो यहाँ से भेज नहीं सकते । ड्राइवर,
सुना नहीं, कार वापस ले जाओ । पिताजी को खाना खिला

देना और सोते वक्त उन्हें वह दवा भी पिला देना, जो मैं सबरे लाई थी ।

डाइवर: बहुत अच्छा । (डाइवर जाने का उपक्रम करता है ।)

श्रीकांत: सरजू , तू भी यहाँ से दफा हो जा ।

सरजू : (विमूढ़-सा) सरकार, मैं तो...मैं तो...

श्रीकांत: नहीं, अब मैं कुछ नहीं सुनना चाहता । तूने मेरे साथ विश्वास-घात किया है । जी हां, मैंने जब तुझसे कह दिया था कि...

सरजू : (अनुनय करते हुए) सरकार, आप गलत समझ रहे हैं ।

कमला : सरजू , तू जा पिताजी के पास । और खजाना मिल गया, तो वायदे के अनुसार तुझे एक हजार रुपया मिल जायगा । डाइवर, सरजू को भी अपने साथ ले जाओ । तुम दोनों पिताजी का खयाल रखना ।

डाइवर: बहुत अच्छा, मालकिन ।

(डाइवर और सरजू का प्रस्थान; फिर कार के जाने का शब्द । कुछ देर बाद नीचे बावली से बीन का स्वर उभरता है और गैस-लम्प से बावली का प्रवेश-द्वार आलोकित हो जाता है ।)

श्रीकांत: (पलटकर) कमला, तुम गईं नहीं ?

कमला : कह दिया न कि मैं आपके पास यहीं रहूंगी । सरजू से मुझे सब कुछ मालूम हो गया है ।

श्रीकांत: (जैसे चुनौती देते हुए) क्या कुछ मालूम हो गया है ?

कमला : यही कि कैसे आपको कबाड़ी की दूकान से एक पुरानी पुस्तक मिली, कैसे उस पुस्तक से आपको इस खजाने का हाल और बावली का नक्शा मिला और कैसे आपने जंगल में भटक कर इसका पता लगाया । लेकिन एक बात मेरी समझ में नहीं आई । बादशाह के कुपित हो जाने पर सेठ कुबेरचन्द अपना सारा धन एक लोहे की पेट्टी में डालकर शहर से भागे । बादशाह के सैनिकों ने उनका पीछा किया । कुबेरचन्द ने

हीरे-जवाहरात से भरी हुई पेटी इस बावली में फेंक दी। इस घटना को आज पूरे डेढ़ सौ वर्ष हो गये हैं। क्या इस बीच में और किसी ने उस पेटी को इस बावली से नहीं निकाला होगा ?

श्रीकांत: काइ कस निकालता ? सैनिकों के हाथों सेठ कुबेरचन्द जब मरे, तो नाग बनकर इस बावली में अपने खजाने की रक्षा करने लगे, उसी तरह जैसे तुम्हारे कजूस पिताजी आज अपनी तिजोरी की रक्षा कर रहे हैं। जी हां, तुम्हारे पिता का बस चले तो वे मरते समय भी अपने धन को छाती पर रख कर ले जायें।

कमला : आप तो बेकार ही पिताजी को कोस रहे हैं।

श्रीकांत: (तमक कर) वाह, कोसूँ क्यों नहीं? इतना धन जोड़ रखा है, उसे न खुद भोगते हैं, न किसी और को भोगने देते हैं। क्या मुझे भूखों मारने और अपमानित करने के लिये ही घर-जमाई बनाया था? मैं यदि चाहता तो...

कमला : चाहने न चाहने की बात छोड़िए। मैं उनकी इकलौती लड़की हूँ। माताजी का देहान्त हो चुका था। उन्हें सहारे की आवश्यकता थी, सो उन्होंने आपको घर में रख लिया। और देखिये न, आपका भी तो कोई और...

श्रीकांत: अरे, तुम्हारे पिता ने जान-बूझकर मुझे अनाथ को अपना दामाद बनाया था, ताकि विवाह में दहेज न देना पड़े और घर के लिये एक मुफ्त का मुंशी मिल जाय, जी हां! और जब मैंने अपना कर्ज चुकाने के लिये रुपये मांगे, तो कान पकड़ कर घर से बाहर निकाल दिया।

कमला : यह आप क्या कह रहे हैं? पिता जी ने कब आपको घर से निकाला ?

श्रीकांत: तो क्या मुझे कुत्ते ने काटा था कि मैं बावलों की तरह दर

दर की खाक छानता फिरा ?

कमला : वे स्वभाव के जरा चिड़चिड़े हैं । बुढ़ापे में दिल की बीमारी हो जाने से आदमी चिड़चिड़ा हो ही जाता है । आप घर में बैठकर कुछ काम-धन्धा करें, इस विचार से उन्होंने आपको कुछ सख्त-सुस्त कह दिया होगा...

श्रीकांत : (मुँह बिचकाकर) जी हाँ, कह दिया होगा । कहा था, “नाम है श्रीकान्त अर्थात् लक्ष्मीपति और कौड़ी कमाने की योग्यता नहीं ।” उसी दिन मैंने प्रण किया था कि मैं उन्हें सही मानों में लक्ष्मीपति बनकर दिखाऊँगा, जी हाँ ।

कमला : (हँसते हुए) वाह, जिस दिन आपने मुझ से विवाह किया था, लक्ष्मीपति तो आप उसी दिन बन गये थे । कमला का अर्थ लक्ष्मी है न ।

श्रीकांत : कमला, बात हँसी में न उड़ाओ । मैं समझता हूँ कि तुमसे विवाह करके मैंने जीवन की सब से बड़ी भूल की । जी हाँ, बाप की तरह तुम्हें भी पैसा ही प्यारा है ।

कमला : (तमककर) आप यह क्या कह रहे हैं ?

श्रीकांत : मैं ठीक ही कह रहा हूँ । उस दिन जब मैं घर से चला, तो तुमने कोई परवाह नहीं की । आज जब पता चला कि मैं भी धनवान बनने वाला हूँ, तो पीछे भागी चली आईं ।

कमला : देखिये, आप यह सब कहकर मेरी पति-भक्ति पर आघात कर रहे हैं । (रुआँसी होकर) आपको क्या मालूम, यह दस दिन मैंने कैसे बिताये हैं । आपको दूँदने के लिये मैंने चारों और आदमी भिजवाये, आपके लिए मैं पिताजी से बीसियों बार लड़ी । और मैं कहती हूँ, यदि आप उस दिन आवेश में घर से न चल देते, तो मैं कर्जा चुकाने लिये पिताजी से आपको एक हजार दिला देती ।

श्रीकांत : (धृष्टा से) अरे, वह बूढ़ा कंजूस किसी को क्या देगा ? किसी

को आज तक उसने आशीर्वाद तक तो दिया नहीं ।

कमला : खैर, यह तो मैं मानती हूँ कि पिताजी थोड़े से कंजूस ह, लेकिन...

श्रीकांत: थोड़े से कंजूस ? यह भीखू और सरजू पिछले तीस वर्ष से घर में नौकर हैं । कभी एक महीने की तनख्वाह भी इन्हें पूरी मिली है ? और तो और, किसी को एक रोटी अधिक खाते देखकर उनके दिल में हौल उठने लगता है । जी हाँ, कार टूटकर छकड़ा हो गई है, परन्तु खर्च के डर से कभी उसकी मरम्मत नहीं करवाई । घर का फर्नीचर कभी भाड़ने-बुहारने नहीं देते कि वह घिस न जाये । सूदखोरी करते-करते वे आदमखोर...

कमला : (मुँह फुलाकर) आप तो, बस...

श्रीकांत: जी हाँ, तुम्हें अपने बाप के विरुद्ध यह बातें क्यों अच्छी लगेंगी ? लेकिन मैं कहता हूँ, उनकी अवस्था साठ वर्ष की हो गई है । उनका अब भगवान का भजन करने का समय है । लेकिन वह तो पैसे को ही अपना भगवान समझते हैं, और अपनी लड़की और दामाद को ...

कमला : खैर, पुरानी बातें छोड़िए । आप मेरे साथ घर चलिए, मैं उन्हें सब समझा दूगी ।

श्रीकांत: अब मैं उस घर में कदम नहीं रखूंगा । कुंवर साहब की कोठी खरीद कर मैं उनके सामने करोड़पति बनकर रहूंगा और उन्हें बताऊंगा कि कैसे रातों रात करोड़पति बनकर धन का उपयोग किया जाता है, जी हाँ ।

कमला : तो क्या आपने सचमुच ही कुंवर साहब की कोठी खरीदने का फैसला कर लिया है ?

श्रीकांत: सिर्फ कोठी ही नहीं, कल ही दो कारें खरीदूंगा, जी हाँ और अगले महीने योरुप की यात्रा पर चला जाऊंगा । वहाँ से

लौटकर यहाँ दो कारखाने खोलूंगा—एक खलों के सामान का और दूसरा....

कमला : सच ? आज मैं कितनी प्रसन्न हूँ । माँ-बाप का घर चाहे कैसा भी हो, लड़की की शोभा अपने पति के घर में ही होती है । और सच वहाँ, खजाना मिलते ही मैं... (एकाएक बोन बन्द हो जाती है । चौंकर) सँपेरे ने बोन बजाना क्यों बन्द कर दिया ?

श्रीकांत : (हर्ष से उछलकर) इसका मतलब है कि खजाने के साँप को पकड़कर पिटारी में बन्द कर लिया गया है । जी हाँ, अब मैं बावली में जाकर खजाने पर कब्जा कर सकता हूँ । कमला, मैं करोड़पति बन गया हूँ । मेरी योजना सफल हुई । (बावली के प्रवेश-द्वार के पास जाकर) भीखू, भीखू, जल्दी से कुदाल और रस्सा नीचे बावली में ले चल ।

कमला : कुदाल और रस्से से क्या होगा ?

श्रीकांत : मैं बावली की तह में जाकर रस्सा खजाने की पेटी में बाधूंगा, भीखू उसे कुदाल से कीचड़ में से निकालेगा और फिर उसे हम खींचकर ऊपर ले आयेंगे ।

कमला : लेकिन यह तो बड़ा जोखिम का काम है ।

श्रीकांत : अरे, बिना जोखिम उठाए माया हाथ नहीं आती । जी हाँ, लक्ष्मी हम जैसे वीर और साहसी पुरुषों का ही वरण करती है ।

कमला : लेकिन...

श्रीकांत : (हर्ष-विभोर-सा) लेकिन-वेकिन छोड़ो, कमला । करोड़पति बनने का नुस्खा मेहनत-मजदूरी नहीं, इस तरह का दुःसाहस ही है । जी हाँ, और लोग ब्याज-बट्टे और चोरबाजारी से करोड़पति बनते हैं और मैं आज...

(तभी भीखू भागा हुआ ऊपर आता है । उसके पीछे-पीछे

झोला और बीन उठाये हुए सँपेरा भी ।)

भीखू : (आकर) सरकार, सँपेरा जा रहा है ।

श्रीकांत: हाँ, अभी यह जा सकता है । अपने इनाम के एक हजार रुपये यह वाद में आकर मुझ से ले लेगा ।

सँपेरा : श्रीमान्, मुझे एक हजार रुपये नहीं, मजदूरी के दस रुपये चाहिये ।

श्रीकांत: नहीं, नहीं, मैं अपने वादे के अनुसार एक हजार रुपये ही दूंगा । भीखू, ये दोनों रुपये और कुदालें नीचे बावली में ले जा । मैं कपड़े उतार कर...

भीखू : लेकिन सरकार, बावली से साँप तो अभी निकला ही नहीं ।

श्रीकांत: (चौंकर, हैरान-सा) क्या ?

भीखू : यह सँपेरा कहता है कि इस बावली में न कोई खजाना है, न साँप है ।

श्रीकांत: नहीं, यह झूठ बोलता है । इसकी नीयत भी...

सँपेरा : मेरी नीयत ठीक है । बीन बजाने के लिए आप किसी और सँपेरे को बुला लीजिए । मेरी मजदूरी के दस रुपये दीजिए ।

श्रीकांत: (क्रुद्ध होकर) वाह, साँप निकला नहीं, दस रुपये कैसे दे दूँ ? जाओ, नीचे बावली में जाकर फिर से बीन बजाना शुरू करो ।

• सँपेरा : (दृढ़ता से) बावली में जब साँप ही नहीं है, तो बीन बजाने से क्या होगा ?

श्रीकांत: यह क्यों नहीं कहते कि तुम्हारी बीन में साँप निकालने की शक्ति ही नहीं है ।

सँपेरा : खैर, शक्ति है या नहीं, आप मेरी मजदूरी के दस रुपये दीजिये ।

श्रीकांत: मैं तुम्हें एक कौड़ी नहीं दूंगा ।

सँपेरा : वाह, इतनी देर तक बीन बजवाकर आप मेरी मजदूरी मार लेंगे ?

कमला : जोगी महाराज, व्यर्थ झगड़ा क्यों करते हैं ? बावली से साँप

निकाल दीजिये और अपनी मजदूरी के दस रुपये ही नहीं, इनाम भी लीजिये ।

सँपेरा : बीबी जी, इस बावली में साँप ही नहीं, तो निकालू किसे ?

श्रीकांत : (मुँह बिचकाकर) जी हां, तुमने दिव्यदृष्टि से पता लगा लिया है कि बावली में साँप नहीं है ।

सँपेरा : दिव्यदृष्टि न सही, सामान्य बुद्धि तो मैं रखता ही हूँ । आप भी सामान्य बुद्धि से काम लीजिये और खजाने की खोज में बेकार अपना समय नष्ट न कीजिये ।

श्रीकांत : (आवेशपूर्ण स्वर में) बेकार बातें न बनाओ । जाओ, नीचे जाकर बीन बजाओ । (हाथ की घड़ी देखकर) मूहूर्त के बीस मिनट अभी बाकी है ।

कमला : (प्रोत्साहित करते हुए) हां, हां, जोगी महाराज...

सँपेरा : बीबी जी, आप मेरी बात मानिये । बावली में साँप होता तो अब तक मेरी बीन के जादू से कब का बाहर निकल आया होता ।...और...भीखू से मुझे खजाने का इतिहास ज्ञात हो गया है । मैं इसी प्रदेश का निवासी हूँ । मैं जानता हूँ कि पिछले डेढ़ सौ वर्षों में बावली का पानी कई बार सूखा है । जरा आप ही सोचिये, वह खजाने वाली पेट्टी लोगों की नजर से बची रही होगी ?

कमला : (सोचते हुए) जोगी महाराज, सदेह तो मेरे भी मन में है, परन्तु इन्होंने जब विश्वासपूर्वक कहा कि खजाना अभी तक बावली में है, तो मुझे भी मानना पड़ा ।

श्रीकांत : (झल्लाकर) कमला, तुम भी इस सँपेरे की हां में हां मिलान लगी । मैं कोई इतना बुद्धू नहीं कि...

कमला : (हँसते हुए) खैर, पिता जी की तो यही राय है कि...

श्रीकांत : (आग बबूजा होकर) कमला, इस तरह मेरा अपमान करते

हुए तुम्हें शर्म आनी चाहिये । उस बूढ़ खूसट को...

(भीखू रोने लगता है ।)

कमला : अरे भीखू, तू क्यों रो रहा है ?

भीखू : (रोते हुए) मालकिन, क्या बताऊँ, मैं तबाह हो गया, बर्बाद हो गया ।

श्रीकांत : अरे, बछिया के ताऊ, इस सँपेरे के गोलमाल से तबाह तो मैं हो गया हूँ ।

भीखू : (सिसकते हुए) सरकार, खजाना नहीं मिला, तो आपसे मुझे एक हजार रुपये नहीं मिलेंगे ।

श्रीकांत : कैसे मिल सकते हैं ?

भीखू : (सिसकते हुए) और बिना एक हजार के मेरा ब्याह नहीं हो सकता । एक सप्ताह हुआ ? मैंने तो ब्याह के लिये अपने घर वालों को चिट्ठी लिख दी थी ।

कमला : (हँसते हुये) भीखू, तूने तो शेखचिल्ली को भी मात कर दिया ।

भीखू : मालकिन, मैंने तो छोटे सरकार की बातों पर भरोसा करके ही...

श्रीकांत : मुझे तो अब भी विश्वास है कि इस बावली में खजाना है, और मैं निकाल कर दिखाऊंगा । जी हाँ ।

कमला : इस विश्वास का कोई ठोस आधार भी तो होना चाहिये ।

श्रीकांत : आधार है वह पुस्तक जो..

कमला : क्या मैं वह पुस्तक देख सकती हूँ ?

श्रीकांत : (जेब से बिना जिल्द की एक फटी-पुरानी पुस्तक निकाल कर) यह रही वह पुस्तक, जी हाँ ! इसके पृष्ठ ३२२ पर....

कमला : (पुस्तक लेकर) जरा ठहरिये । (इधर-उधर पन्ने पलट कर पढ़ती है ।)

सँपेरा : श्रीमान् जी ! मुझे क्यों रोक रखा है ? मेरी मजूरी के दस रुपये दीजिये, मैं जाऊँ ।

श्रीकांत : मजदूरी तुम्हें तभी मिलेगी, जब बावली से साँप निकाल कर दिखाओगे । जी हा, इस तरह एक कौड़ी नहीं दूंगा ।

सँपेरा : (गुस्से से) मैं तो पूरे दस रुपये लेकर ही जाऊंगा ।

(कमला पुस्तक पढ़कर, एकाएक ठहाका मारकर हँसती है ।)

श्रीकांत : (चौंकर) कमला, हँस क्यों रही हो ?

कमला : मैं हँस रही हूँ आपकी बुद्धि पर ।

श्रीकांत : (बिगड़कर) क्या मतलब ?

कमला : (हँसते हुए) मतलब यह कि जिस पुस्तक को आप प्रामाणिक इतिहास-ग्रन्थ समझ कर खजाने की खोज कर रहे थे, वह तो वास्तव में...

श्रीकांत : (घबराकर) क्या ?

कमला : पुराने ढंग का उपन्यास है ।

श्रीकांत : (जैसे अचेत होते हुए) उपन्यास ?

कमला : (हँसते हुए) जी हाँ । जरा ध्यान से इस अध्याय पर नजर डालिये । (श्रीकांत पुस्तक लेकर पढ़ता है) पिताजी आपके बारे में ठीक ही कहते हैं कि...

सँपेरा : (मुस्कराते हुए) मैंने भी ठीक ही कहा था । बीबी जी, कृपया अब मेरी मजूरी के दस रुपये तो दिला दीजिये ।

श्रीकांत : (पत्थर पर धड़ाम स बैठ कर) अरे, तुम्हें दस रुपये की पड़ी है, मेरा यहां लाखों का नुकसान हो गया है ।

भीखू : (श्रीकांत के पाँवों में बैठ कर सिसकते हुए) हाय, मेरा ब्याह ।

कमला : इस रोने-पछताने से कुछ नहीं होगा । दोनों उठो और घर चलो ।

श्रीकांत : (सिसकते हुए) नहीं कमला, इस हार के बाद मेरे लिये यही

उचित है कि मैं इसी समय इस बावली में डूब मरूँ ।
जी हाँ ।

सँपेरा : श्रीमान, मरने से पहले मेरे दस रुपये तो देते जाइये ।

श्रीकांत: (गुस्से से) तुम्हें तो मैं एक कौड़ी नहीं दूंगा ।

(नेपथ्य में कार के आने का शब्द ।)

कमला : (चौककर) अरे, इधर कोई कार चली आ रही है ।

श्रीकांत : (चौककर) ऐं, कार ! यह कार किसकी हो सकती है ।

(सब आश्चर्य और उत्सुकता से वन-पथ की ओर देखते हैं ।)

कुछ देर बाद कार के रुकने का शब्द सुनाई देता है । कार
की बत्तियों से रटेज एकदम आलोकित हो उठती है ।)

कमला : अरे, यह तो हमारी ही कार है । (ड्राइवर का प्रवेश) ड्राइवर,
लौट क्यों आये ?

ड्राइवर : (रुंधे गले से) मालकिन, क्या बताऊँ, अभी हमने जाकर बड़े
सेठजी को जब यह बताया कि आप घर नहीं लौट रही हैं,
तो उन्हें दिल की बीमारी का दौरा पड़ा और...

कमला : और ?

ड्राइवर: और उनका देहान्त हो गया ।

श्रीकांत: (सहसा) देहान्त हो गया ?

कमला : (रोकर) हाय, पिता जी ! हाय, मेरे वियोग में ही पिताजी
ने प्राण त्याग दिये । ड्राइवर, मुझे जल्दी घर ले चलो ।
(कमला हाथों में मुँह छिपा कर रोती है, लेकिन श्रीकांत के
चेहरे पर नई चमक आ गई है ।)

श्रीकांत: कमला, रोने से क्या होगा ? आई को कौन टाल सकता है ?
बूढ़े थे, बीमार थे । आखिर एक दिन तो उन्हें मरना ही था ।
धीरज से काम लो । मैं भी तुम्हारे साथ चलता हूँ । जोगी

महाराज, यह लीजिए अपनी मजदूरी के दस रुपये । (मुस्कराकर) तुम्हारा परिश्रम बेकार नहीं गया ।

सँपेरा : क्या मतलब, हुजूर ?

श्रीकांत: साँप खजाने को छोड़कर चला गया ।

सँपेरा : (चकित-सा) साँप खजाने को छोड़कर चला गया ?

(सब आश्चर्य-चकित-से श्रीकान्त की ओर देखते हैं और पर्दा गिरता है ।)

समाप्त

अखबारी विज्ञापन

पात्र-परिचय

- मदनमोहन : 'बिज्जामल-गिज्जामल' नामक एक प्राइवेट फर्म का फटियल टाइपिस्ट । अवस्था कोई ३०-३२ वर्ष ।
- दुगा : मदनमोहन की पत्नी, मानो चंडी का अवतार । २७-२८ वर्ष की अवस्था ही में अभेड़-सी जान पड़ती है ।
- पंडितजी, डाकिया,
नेशनल-पत्रिका का : बिना नाम के टिपिकल प्राणी ।
मैनेजर इत्यादि ।

पहला दृश्य

समय—प्रातः ।

[पुराने ढंग के एक मकान की बैठक, जो पहली ही नजर में गृहस्वामी की बदहाली विज्ञापित किए दे रही है । दाईं ओर की दीवार में एक दरवाजा और एक खिड़की । दोनों बाहर गली में खुलते हैं । सामने की दीवार में एक दरवाजा, जो अन्दर सेहन में खुलता है । इस दीवार और बाईं ओर की दीवार के कोने में एक जर्जर-सी पुरानी मेज, जिस पर अखबारों, फाइलों और कागजों के पुलंदों के ऊपर एक पुरानी सी टोपी रखी है । मेज के पास एक लंगड़ी-सी लड़खड़ाती-सी पुरानी-कुरसी । बाईं ओर की दीवार की खूंटियों पर गृहस्वामी श्री मदन-मोहन के कपड़े लटक रहे हैं—पुराना-सा कोट, पैन्ड लगी बिना क्रीज की पतलून, मैली कमीज इत्यादि । इन खूंटियों के पास आगे की ओर बड़े आकार का एक सस्ता-सा कैलंडर लटक रहा है । इस पर बने देवी-देवताओं के चित्रों पर झलक रही फूलों की मुआई-सी माला गृहस्वामी की धर्मभीरुता की परिचायक है । नीचे बैठक के टूटे फूटे फर्श पर बीचोंबीच एक पुरानी चटाई बिछी हुई है ।

जब पर्दा उठता है, तब मदनमोहन बाएँ हाथ में अखबार थामे, दाएँ हाथ से खड़े-खड़े कैलंडर की तिथियाँ गिनता हुआ दिखाई देता है । उसने इस समय एक मैली-सी धोती और कुरता पहन रखा है ।]

मदन० : (उँगली से कैलंडर की तिथियाँ गिनता हुआ) उन्नीस, बीस, इक्कीस, बाईस, तेईस, चौबीस, पचीस । पूरे सात दिन हो

गए, विज्ञापन को छपे, लेकिन....

(तभी अन्दर से दरवाजे को पटाख-से खोलकर फुंकारती हुई दुर्गा आती है।)

दुर्गा : (डांटते हुए) मैं पूछती हूँ, क्या आज अखबार ही से पेट भरा जाएगा ? घर में चुटकी भर आटा नहीं और आप यहां बैठक में अखबार की आराधना में लगे हैं। खबरों से जी नहीं भरा, तो . . .

मदन० : (चकौंकर और फिर सहमी-सी हंसी हंसकर) अरे भई, इतना बिगड़ क्यों रही हो ? सीधी तरह कह दो न कि बाजार से राशन लाना है। बन्दा अभी लाए देता है, श्रीमती दुर्गादेवीजी।

दुर्गा : (बिगड़ कर) देखिए, काम के वक्त ये चोचले मुझे पसन्द नहीं, समझे !

मदन० : (हकलाते हुए) अरे भई, मैं तो

दुर्गा : हटाइए, यह मैं-में। यह रहा थैला। (मदनमोहन आज्ञाकारी सेवक की तरह थैला जल्दी से पकड़ता है।) अगर खाना खाकर दफ्तर जाना है, तो जरा जल्दी आइएगा आटा लेकर।

(बाहर गली में 'नमो नारायण, नमो नारायण' का शब्द सुनाई देता है।)

दुर्गा : (खिड़की से बाहर गली में देखते हुए) लो, पंडितजी सीधा लेने आ गए। यह लोग सोचते ही नहीं कि इस महंगाई के जमाने में बिज्जामल-गिज्जामल के यहां से सौ रुपल्ली तन-खाह पाने वाला बाबू दान-पुण्य कहां से करेगा ? (एकाएक) चूल्हे पर शायद दाल जल रही है।

मदन० : (नाक सिकोड़ते हुए) दुर्गन्ध तो कुछ ऐसी ही आ रही है।

दुर्गा : तो आज दफ्तर भूखा ही जाना होगा। (जल्दी से अन्दर जाती है।)

मदन० : (बड़बड़ाते हुए) भगवान बचाए ऐसी बीबी से !

(धीरे से अन्दर वाला दरवाजा बन्द करता है और गली वाला दरवाजा खोलता है। रामनामी धोती में तिलकधारी पंडित जी दिखाई देते हैं।)

पंडित : (अन्दर आकर) नमो नारायण ! नमो नारायण ! (कृत्रिम सद्गानुभूति प्रकट करते हुए) यजमान, लगता है, आज बहूजी से फिर कुछ.....

मदन० : पंडितजी, आप तो उनके स्वभाव से परिचित ही हैं। (इधर-उधर देखकर) खैर, मुझे बाजार से आटा लाना है। आप जरा जल्दी बताइए, कुंडली से क्या पता चला ?

पंडित : (पोथा-पत्रा खोलते हुए) यजमान, यही सब तो बताने आया हूं। यह लीजिए, अपनी जन्मपत्री और...

मदन० : पंडितजी, जन्मपत्री लेकर क्या करूं ! आप बताइए कि...

पंडित : हां, हां, बताता हूं, बताता हूं। (चटाई पर बैठकर पत्रा देखते हुए) आपका नाम मदन है न ? तो इस हिसाब से आपकी राशि सिंह हुई।

मदन० : पंडितजी, मेरी राशि सिंह है या बकरी, इससे मुझे कोई सरोकार नहीं, आप मुझे....

पंडित : यजमान, वही तो बता रहा हूं। (जन्मपत्री खोलकर बड़े ध्यान से देखते हुए) दसवें स्थान में सूर्य बैठा है, जो भाग्य-वृद्धि का सूचक है और लग्न भी बड़ा शुभ है।

मदन० : तो फिर मेरा काम बन जाएगा न ? (उत्सुक-सा हर्षित-सा पंडितजी के पास चटाई पर बैठ जाता है।)

पंडित : निश्चय ! आप तुरन्त अपने मन की कर डालिए।

मदन० : (सहमी हुई दृष्टि अन्दर के दरवाजे पर डालते हुए) वह तो मैंने चुपचाप, जैसा कि मैंने आपको बताया था...

पंडित : हां, आपने बताया था कि आपने 'नैशनल-पत्रिका' में विज्ञापन दे रखा है। (पत्रा देखते हुए) अवश्य कहीं से उत्तर आएगा।

बड़ा ही शुभ मुहूर्त है, लेकिन मैं सोचता हूँ... ।

मदन०: (घबराकर) क्या ?

पंडित : आप उन्हें छोड़ सकेंगे ? मेरा मतलब है . . . ?

मदन०: हां, मैं समझ गया । आप उन्हें जानते ही हैं । अब उनसे मेरा निभाव नहीं हो सकता । अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए मुझे कहीं और...

पंडित : आप यह निश्चित जानिए, नया सिलसिला आपके लिए शुभ होगा । आप देर न कीजिए ।

मदन०: मेरी तरफ से कोई देर नहीं । अखबार में विज्ञापन दे रखा है और... (एकएक घबराकर) शायद दुर्गा आ रही हैं । उसने मुझे बाजार से आटा लाने को कहा था और मैं यहां...।

पंडित : (जल्दी से पोथी-पत्रा समेटते हुए) तो आप जाइए; बहूजी खा-म-खा रुट होंगी । मैं भी जाता हूँ । नमो नारायण !
(मदनमोहन जल्दी से जूता पहनता है और पंडितजी जल्दी से उठकर पोथी-पत्रा बगल में दबाकर चलने का उपक्रम करते हैं । तभी अन्दर वाला दरवाजा पटाख से खोलकर क्रोध से चंडी बनी दुर्गा बैठक में आती है ।)

दुर्गा : (जैसे ललकारते हुए) कहां जा रहे हैं, पण्डितजी ? इनके लगन का मुहूर्त तो बताते जाइए ।

पंडित : (घबराकर) बहूजी, वह तो . . .

दुर्गा : (गुस्से से) वह तो, वह तो क्या लगा रखी हैं । दरवाजे के पीछे से मैंने सब कुछ सुन लिया है ।

मदन०: दुर्गा, तुम्हें यह बहुत बुरी आदत है, जासूसों की तरह...

दुर्गा : (बात काटकर) तो शायद मेरी इसी बुरी आदत के कारण आप दूसरी शादी करने की तैयारी कर रहे हैं ?

मदन०: (चौंकर) दूसरी शादी ?

पंडित : (रुककर) नमो नारायण ! नमो नारायण ! बहूजी. आप यह

क्या कह रही हैं ?

दुर्गा : (घृणा से) कैसा नाटक कर रहे हैं दोनों ! कुंडली देख ली, शुभ मुहूर्त सोच लिया, लगन तय कर लिया और अब अन-जान बनकर पूछते हैं, दूसरी शादी कैसी ? दूसरी शादी होने में कसर ही क्या रह गई ? खैर, इनसे तो मैं बाद में सुलट लूगी । पंडित जी, आप बताइए, मुझसे ही रोज दान-दक्षिणा लेकर मेरा ही सत्यानाश करने की आपको यह सूझी क्या ?

पंडित : (इकलाते हुए) बहूजी, आप कुछ-का-कुछ समझ बैठी हैं । बात यह है कि बाबू मदनमोहन जी नई नौकरी ..

दुर्गा : (जैसे काटने की उद्यत) चुप रहिए, पंडित जी, मैं आप दोनों की बातें अपने इन कानों से सुन चुकी हूं । बेकार झूठ बोलने की कोशिश न कीजिए । मैं पूछती हूं, पंडित जी, जिस थाली में आप खाते हैं, उसी में छेद करते हुए आपको शरम नहीं आई ?

पंडित : (भागने के लिए रास्ता ढूंढते हुए) बहूजी, आप तो...

दुर्गा : मैं आपको गालियां दे रही हूँ, यही आप कहना चाहते हैं न ? जिस स्त्री की छाती पर मूंग दलने के लिए सीत लाई जा रही हो, वह गालियां न देगी, तो क्या असीसे देगी ?

मदन० : (सहमकर) लेकिन दुर्गा, असल बात वही है, जो पंडित जी ने बताई है ।

दुर्गा : (डांटकर) हां, मैं सुन चुकी असल बात । (मुँह बिचकाकर) मेरे साथ आपका निभाव नहीं हो सकता । अपने जीवन को सुखी बनाने के लिए आपको कहीं और सम्बन्ध जोड़ना ही है । नई बीवी के लिए आपने अखबार में विज्ञापन दे रखा है । आज या कल जवाब आनेवाला है और...

मदन० : (अपराधी-सा) दुर्गा, तुमने बातों का सरासर गलत अर्थ लगाया है । मैं बिज्जामल-गिज्जामल के यहां से नौकरी

छोड़कर कोई अधिक वेतन वाली नौकरी ढूँढ रहा हूँ। इसी उद्देश्य से मैंने अखबार में विज्ञापन दिया था। मेरी मनोकामना पूरी होगी या नहीं, यह जानने के लिए मैंने पंडित जी को अपनी जन्मपत्री दिखाई थी।

दुर्गा : (डाँटकर) चुप रहिए जी। आप मेरी आंखों में यों भूठ बोलकर धूल नहीं भोंक सकते। मैं दूसरी औरतों की तरह पति के पांव की जूती नहीं कि जी चाहा तो पहन ली, जी चाहा तो उतार कर फेंक दी। मैं पूछती हूँ, आपको दूसरी शादी का यह शौक चर्चाया कैसे? मुझमें आखिर क्या दोष है? लूली हूँ, लंगड़ी हूँ, अंधी हूँ, बदसूरत हूँ?

(दुर्गा का मुँह मदनमोहन की ओर पाकर पंडितजी दबे पांव दरवाजे की ओर बढ़ते हैं।)

दुर्गा : (पलटकर) ठहरिए पंडित जी, इस तरह आंख बचाकर यहां से खिसकने की कोशिश न कीजिए।

पंडित : (गिड़गिड़ाकर) वहू जी, मेरा कोई दोष नहीं, मैं तो..।

दुर्गा : हाँ, यह दोष आपका नहीं, इन्ही का है। बुलाया तो इन्होंने होगा आपको दूसरी शादी का षड़यंत्र रचने के लिए। आप जा सकते हैं, लेकिन आप फिर कभी इस घर में कदम नहीं रख सकते। कान खोलकर सुन लीजिए, आज से आपकी दान-दक्षिणा बन्द, सीधा बन्द, पुरोहिताई बन्द।

पंडित : (जाते हुए, जैसे जान बची हो) अच्छा, वहू जी, भगवान आपका भला करें! नमो नारायण! नमो नारायण!

(जल्दी से दरवाजा खोलकर पंडितजी गली में कूद जाते हैं।)

दुर्गा : (गली वाला दरवाजा बन्द करते हुए) अच्छा, यह मुआ पंडित तो गया, (पलटकर) अब जरा आपसे सुलट लू।

मदन० : मैं आटा ले आऊँ, नौ बज गए। (जाने का उपक्रम करता है।)

दुर्गा : (राह रोककर) आटा तो आप नई घरवाली के आने पर ही

लाइएगा। वही आकर खाना बनाएगी और आपको दफ्तर भेजेगी।

मदन० : (जैसे अनुनय करते हुए) दुर्गा, अपनी ही कहती जाओगी या मेरी भी कुछ सुनोगी।

दुर्गा : नहीं, अब मैं और कुछ नहीं सुनना चाहती। अब तो देखूंगी कि कैसे आप सौ रुपल्ली में दो बीवियों का खर्च चलाते हैं। विज्जामल-गिज्जामल की फर्म में महीना भर लोहा कूटने के सौ रुपल्ली ही तो आपको मिलते हैं ?

मदन० : दुर्गा, यह क्या जुल्म कर रही हो ? टा- टा- टाइपस्ट के काम को लोहा कूटना बताती हो ?

दुर्गा : (व्यंग्य से) घबराइए नहीं, आपकी नई होने वाली पत्नी के घर का कोई आदमी यहां नहीं सुन रहा। विज्ञापन में आपने अपनी योग्यता, नौकरी, आमदनी और प्रभाव के बारे में जो झूठा ब्यौरा दिया होगा, लड़की वाले उसी को सही मानेंगे। जरा देखूँ तो वह विज्ञापन। (मेज पर से 'नैशनल पत्रिका' का एक अंक उठाकर) क्या इसी अखबार में छपा है ?

मदन० : (जैसे जान बच गई) हां, हां, विज्ञापन जरूर देख लो। मेरी बात तो तुम सुनोगी नहीं, विज्ञापन से तुम्हें अपने आप सचाई मालूम हो जायगी। (अखबार में से दिखाते हुए) यह रहा मेरा विज्ञापन। सात दिन हुए, १६ तारीख के इस अंक में छपा था।

दुर्गा : (पढ़ते हुए) "नौकरी चाहिये—एक योग्य तथा अनुभवी टाइपिस्ट को, जो शार्टहैंड भी जानता है। आजकल एक प्रसिद्ध फर्म में काम कर रहा है। अधिक वेतन के लिए परिवर्तन चाहता है। पत्र-व्यवहार के लिए पता—बॉक्स नं० ३१११ मार्कट नैशनल पत्रिका।" हूँ, यह कैसे मैं मान लूँ कि यह विज्ञापन आपका दिया हुआ है ? इसमें आपका नाम तो

हैं नहीं, केवल वाक्स नं. ३१११ दे रखा है।

मदन० : (समझते हुए) देवी जी, अखबारों के आवश्यकता के स्तंभ में नौकरी, शादी, ब्याह, कामकाज-सम्बन्धी जो विज्ञापन छपते हैं, उनमें वाक्स नम्बर ही दिया जाता है, ताकि विज्ञापन देने वाले का नाम गुप्त रहे। वाक्स नम्बर के पते पर जो उत्तर आते हैं, अखबार वाले उन्हें इकट्ठा करके विज्ञापन-दाता के पास भेज देते हैं।

दुर्गा : यह सब मैं समझती हूँ, लेकिन यह मैं कैसे मान लू कि वाक्स नम्बर ३१११ आप ही का है।

मदन० : मैं तुम्हें अखबार वालों का वह पत्र दिखाता हूँ, जिसमें उन्होंने मुझे मेरा वाक्स नम्बर सूचित किया है। (मेज पर से एक फाइल उठाकर) यह रही फाइल और (पन्ने उलटते हुए) यह रहा वह पत्र। लो, पढ़ लो।

(दुर्गा फाइल में लगे पत्र को बड़े ध्यान से पढ़ती है। मदन-मोहन के मुख पर विजय की चमक।)

दुर्गा : (विजयी पहलवान की मुद्रा में एकाएक ललकार कर) यह मारा ! आपका छल पकड़ा गया।

मदन० : (कांप कर, लड़खड़ा कर) क्या कह रही हो ?

दुर्गा : (घृणा से पत्र मदनमोहन की आंखों के आगे लाकर) जरा गौर से देखिए, इस पत्र में अखबार के मैनेजर ने वाक्स नम्बर ३११ सूचित किया है, ३१११ नहीं।

मदन० : (हैरान होकर) ऐं, यह क्या ? मैंने पहले ध्यान से पढ़ा ही नहीं।

दुर्गा : अपने छल और झूठ को छिपाने के लिये कोई अच्छा बहाना तलाशिए, इससे काम नहीं चलेगा।

मदन० : (सोचते हुए) हो सकता है कि ...

दुर्गा : (एकाएक अभ्यङ्ग कर) देखिए, आप अपने पाप पर पर्दा डालने

के लिए कोई और भूठ गढ़ने की कोशिश न करें। सच बोलने से क्यों डरते हैं ? साहसपूर्वक कह दीजिए कि मैं आपको पसन्द नहीं, इसलिए आप किसी और बीबी की तलाश में हैं, जो मुझसे अधिक सुन्दर हो, अधिक पढ़ी-लिखी हो और बहुत-सा दहेज लाकर आपको मालामाल कर दे।

मदन० : दुर्गा, तुम्हें बेकार का वहम हो गया है। मैं सच कहता हूँ, मैंने शादी के लिये विज्ञापन नहीं दिया।

दुर्गा : (कैलण्डर के देवी-देवताओं के चित्रों की ओर मुँह करके रुंधे गले से) हे भगवान, मुझे आज मौत क्यों नहीं आ जाती ? जिसे मैं अपना सर्वस्व समझती थी, वही बेगाना हो गया है।

मदन० : (कैलंडर की तरफ मुँह करके) हे भगवान, मैं कैसे अपनी पत्नी को यकीन दिलाऊँ कि ...

दुर्गा : (तमककर) रहने दीजिए अपना यह बहुरूपियापन। आज मैंने आपका असल रूप देख लिया है।

(बाहर गली में साइकल की घंटी और फिर दरवाजे पर दस्तक।)

डाकि० : (बाहर से) चिट्ठी ले लीजिये।

मदन० : (खुश होकर खिड़की की ओर लपकते हुए) शायद डाकिया 'नैशनल पत्रिका' के दफ्तर की चिट्ठी लाया है। (खिड़की में से एक बड़ा-सा लिफाफा लेकर उछलते हुए) मेरा अनुमान ठीक निकला। 'नैशनल पत्रिका' के ही दफ्तर से चिट्ठी आई है। भगवान ने मेरी लाज रख ली। क्या ठीक मौके पर डाकिया पहुँचा। इसे कहते हैं भगवान का चमत्कार। (पलटकर) दुर्गा, विज्ञापन के जवाब में जो चिट्ठियाँ आई हैं, 'नैशनल पत्रिका' वालों ने लिफाफे में दन्द करके मुझे सब की सब भेजी दी हैं। इनसे तुम्हें पता चल जायगा कि मैंने

विज्ञापन शादी के लिए नहीं, नौकरी के लिये दिया था ।

दुर्गा : खोलिए लिफाफे को ।

मदन० : न, तुम्ही खोलो । मैंने खोला तो शायद तुम हाथ की सफाई बताने लगे । (लिफाफा पकड़ाते हुए) यह लो लिफाफा, जल्दी से खोल डालो, अभी सचाई मालूम हो जाती है ।

(दुर्गा जल्दी से लिफाफा फाड़कर उससे कागज निकालती है।)

दुर्गा : (चिट्ठियों को पढ़कर व्यंग्य से) जी हां, सचाई मालूम हो गई है । यह देखिए, पांच रूपवती गुणवती कन्याओं ने आपके घर की आजीवन नौकरी के लिए अजियां भेजी हैं फोटो सहित ।

(दुर्गा चिट्ठियों के साथ आए फोटो अपने पति को दिखाती है । वह चौंक कर देखता है और हक्का-बक्का-सा रह जाता है । दुर्गा की आँखों से आग बरस रही है ।)

मदन० : (हैरानी से) ऐं ! यह क्या ? (कटा-कटा-सा धड़ाम से कुरसी पर बैठ जाता है । माथे का पसीना पोंछते हुए) जरा देखू तो ।

दुर्गा : (फोटो उसके सामने करके व्यंग्य से) जरा क्यों, पूरी तरह देखिए अपनी इन भावी पत्नियों को । (एक फोटो ऊपर उठा कर) आहा, यह तो बिल्कुल फिल्म-एक्ट्रेस मालूम होती है । क्या रूप पाया है इसने ! इसके पिताजी लिखते हैं ... (साथ वाली चिट्ठी पढ़ती है ।)

मदन० : फटा-फटा आँखों से देखते हुए, किर्कृत्य-विमूढ़-सा) कुछ समझ में नहीं आ रहा । विज्ञापन की यह कैसे गड़बड़ हो गई ।

दुर्गा : (व्यंग्य से) अजी गड़बड़ तो इस मेरठ वाली ने कर डाली है । शादी का आवेदन-पत्र बाप, भाई या अभिभावक की मार्फत न भेजकर सीधा खुद ही भेज दिया है । बड़ी फारवर्ड मालूम होती है । फारवर्ड क्यों न हो ! प्रोफेसर जो ठहरी ।

लिखती है—“३००) ६० वेतन पाती हूं। आपके ४००) ६० और मेरे ३००) ० से हमारा जीवन सुखपूर्वक कट सकेगा।” (पति को घूमकर देखते हुए) अच्छा, तो आपने अखबार में अपना मासिक वेतन ४००) लिखा है ? पूरे ३००) का झूठ।

दन० : (घबराया-सा) दुर्गा, मैं सच कहता हूं, मुझे इसका पता नहीं। मैंने विज्ञापन

गाँ : (गुस्से से तिलमिलाकर) यों झूठ बोलने से अब कोई फायदा नहीं। आपका सारा षडयंत्र प्रमाण सहित मेरे कब्जे में है। (एक चिट्ठी दिखाकर) यह देखिए, इलाहबाद से आए इस पत्र के साथ इश्तिहार की कतरन भी नत्थी है। इस पर बाक्स नं. ३११ ही दिया हुआ है। इश्तिहार में आप लिखते हैं—“जरूरत है ४००) मासिक वेतन पानेवाले संभ्रांत कुल के एक सुयोग्य उन्नतिशील ३० वर्षीय वर के लिए एक सुन्दर पढ़ी-लिखी कुंवारी कन्या की। जात-पात का कोई बन्धन नहीं। पत्र-व्यवहार के लिए पता—बाक्स नं० ३११ मार्फत नेशनल पत्रिका।” (सन्ध्या) ऐसे वर के चरणों पर कौन कुंवारी कन्या अपना तन मन-धन अर्पण न कर देगी ?

दन० : (जैसे गिड़गिड़ाते हुए) दुर्गा, मेरी बात पर विश्वास करो। यह विज्ञापन मैंने नहीं दिया !

गाँ : (गुस्से से तिलमिलाकर) सारी कलई खुल जाने पर भी आप झूठ बोले जा रहे हैं ? शरम नहीं आती। विज्ञापन में अपने बारे में गलत बातें लिखकर आपने एक बहुत बड़ा अपराध किया है। लड़की वालों को अगर इसका पता चल जाए, तो वे आप पर दावा दायर कर सकते हैं। खैर, उनको तो पता चलेगा शादी के बाद कि वर महोदय ४००) नहीं १००) रूपल्ली मासिक वेतन पा रहे हैं और शादीशुदा हैं। मैं अभी इन सबको असलियत से आगाह किये देती हूं। सबके पते

इन पत्रों पर लिखे हुए हैं। (मेज पर से कलम, दवात और कागज लेकर चटाई पर बैठ जाती है।)

मदन० : (घबराकर) दुर्गा, यह क्या पागलपन कर रही हो, मैं...मैं...

दुर्गा : (कलम को भाले की तरह उठाकर गुस्से से) आपने मेरे साथ जो छल किया है, मेरे जीवन को नष्ट करने का जो षडयन्त्र रचा है, उसका जवाब यही पागलपन है। मैं और स्त्रियों की तरह बेजुबान गाय-बकरी नहीं, जो चुपचाप यह अत्याचार सहन कर लूं। मेरा रोम-रोम प्रतिहिंसा की ज्वाला से जल रहा है। मेरे जीते जी आप दूसरी शादी नहीं कर सकते। मैं अभी लिखती हू। (एक कागज पर लिखना शुरू कर देती है।)

मदन० : (एकाएक कुर्सी से उठकर, कुछ गरम होकर) दुर्गा, बेकार बात न बढ़ाओ। कह जो दिया...

दुर्गा : तो क्या चुपचाप अपने पर सौत आगे दूं ?

मदन० : तुम तो मेरी सुनती नहीं, अपनी ही हांके जा रही हो।

दुर्गा : आप अपनी कर चुके, अब मेरी बारी है। (फिर लिखने लगती है।)

मदन० : (गुस्से से) तो तुम मेरा क्या बिगाड़ लोगी, अगर मैं दूसरी शादी कर ही लू ?

दुर्गा : (आपे से बाहर होकर तनकर खड़ी हो जाती है।) दूसरी शादी होने से पहले मैं आपको मारकर खुद फांसी पर लटक जाऊंगी। समझे !

मदन० : (झपटकर गुस्से से) तो पहले मैं ही तुम्हें ठिकाने न लगा दू।

दुर्गा : (चिल्लाकर) जरा हाथ लगाकर तो देखो।

(उसी समय बाहर गली में किसी कार के आने और मदन-मोहन के मकान के ठीक सामने रुकने की आवाज सुनाई देती

है । इससे घर के रण-क्षेत्र के दोनों योद्धा ठंडे पड़ जाते हैं ।)

स्वर १ : (बाहर से) क्यों साहब, बाबू मदनमोहन का मकान यही है ?

स्वर २ : (बाहर से) हां, यही है ।

दुर्गा : (उबलकर) यह लो, विज्ञापन पढ़कर किसी लड़की के पिता खुद चले आए हैं—वर के दर्शन करने ।

मदन० : (घबराकर) नहीं दुर्गा, ऐसा नहीं हो सकता । खैर, जरा अन्दर जाओ ।

दुर्गा : क्यों अन्दर जाऊं ? आपका छल-कपट अब दुनिया को बताना ही होगा ।

मदन० : (गिड़गिड़ाकर) भगवान के लिए. . .

(दरवाजे पर दस्तक ।)

स्वर १ : (बाहर से) बाबू मदनमोहन जी !

(मदनमोहन जल्दी से दरवाजा खोलता है और सामने एक बढ़िया सूट-बूटधारी सज्जन दिखाई देते हैं ।)

मदन० : कहिए, क्या काम है ?

दुर्गा : (चिल्लाकर) आपसे अपनी लड़की का रिश्ता करने आए हैं, और क्या काम होगा ? लेकिन मैं...

मैनेजर : (अन्दर आकर) देखिए बहनजी, आप गलत समझी है । मैं 'नैशनल-पत्रिका' का विज्ञापन-मैनेजर हूँ ।

मदन० : (गुस्से से) आप अच्छे विज्ञापन-मैनेजर हैं ।

दुर्गा : (व्यंग्य से) तो फिर आप इनके लिए लड़कियों के और फोटो लाए होंगे !

मैनेजर : नहीं बहनजी, अपने दफ्तर की एक गलती के लिए इनसे क्षमा मांगने आया हूँ ।

दुर्गा : (चौंककर) कौन-सी गलती ?

मदन० : हां, हां, जल्दी बताइए, वरना...

मैनेजर : टाइपिस्ट की भूल से बाक्स नम्बर में गड़बड़ हो गई और

इनके पास किसी दूसरे विज्ञापन की चिट्ठियां भेज दी गईं ।

मदन०: हे भगवान, तेरा लाख-लाख शुक्र है ।

दुर्गा : क्या आप सच कह रहे हैं ?

मैनेजर: हां-हां, इनका वाक्स नं० था ३१११ और चिट्ठियां इन्हें भेज दी गईं वाक्स नं० ३११ की ।

मदन०: (हर्ष-विभोर-सा) सुना दुर्गा ? (मैनेजर से) ये रही वे चिट्ठियां । मैं आपका आभारी हूं कि आप अपनी गलती बताने के लिए स्वयं चले आए । लेकिन मैं पूछता हू कि आपने अपने दफ्तर में ऐसा नालायक टाइपिस्ट क्यों रख रखा है ? उसकी गलती से मेरे घर में तो आज पता नहीं क्या-क्या अनर्थ हो जाता ।

मैनेजर: कैसे ?

मदन०: मेरी पत्नी समझीं कि मैं दूसरी शादी करने जा रहा हूं ।

(दुर्गा कुछ बज्जित-सी दिखाई देती है ।)

मैनेजर: (हंसते हुए) नहीं, नहीं, आपने तो नौकरी के लिए विज्ञापन दिया था । उसके उत्तर में ये चिट्ठियां आई हैं । वैसे मैंने अपने टाइपिस्ट को बरखास्त कर दिया है । यदि आप चाहें तो २००) मासिक पर आप हमारे दफ्तर में आ सकते हैं ।

मदन०: (खुशी से उछलकर) मुझे मंजूर है । मैं कल से काम शुरू कर दूंगा ।

मैनेजर: आप आज से काम क्यों नहीं शुरू करते ?

मदन०: आज मुझे घर में एक जरूरी काम है ।

दुर्गा : (आंखों से धमकाते हुए) क्या काम है ?

मदन०: आज पंडित को बुलाकर तुम्हारे साथ दूसरी शादी करनी है । (सब हंसते हैं ।)

मैनेजर: (हंसते हुए) लेकिन इसके लिए आपको पहले हमारे अखबार में विज्ञापन देना होगा ।

(सब ठहाका मारकर हंसते हैं । पर्दा गिरता है ।)

समाप्त

साथ वाला मकान

पात्र-परिचय

- विनोद : देहात से आया हुआ अच्छे घर का लड़का । शक्ल-सुरत से किताबी कीड़ा जान पड़ता है । आयु कोई २३-२४ वर्ष ।
- प्रकाश : विनोद का मित्र, स्कूल-मास्टर । चेहरे पर शहर की प्रबुद्ध सभ्यता की छाप । आयु कोई २५ वर्ष ।
- घीसू : विनोद का अधेड़ उम्र का देहाती नौकर ।
- गुलाब : पड़ोस के बूढ़े कैप्टन की रहस्यमयी सुन्दर लड़की ।
- डाक्टर : गुलाब का नौजवान प्रेमी ।

[दिल्ली की एक बाहरी बस्ती में बने हुए एक छोटे से मकान का एक कमरा, जिसकी मैली छत के जाले और दीवारों के उखड़े हुए पल-स्तर से झाँकती हुई ईंटें इस बात की घोषणा कर रही हैं कि यह मकान अर्से से गैर-आबाद पड़ा था। इधर-उधर अस्त-व्यस्त अवस्था में पड़े हुए पुस्तकों के बक्स, सूटकेस, बंडलों के कागज़, चारपाई के पास पड़ा हुआ हॉल्डाल; मेज, तिपाई, कुर्सियाँ, उल्टे-सीधे जूतों के दो एक जोड़े साफ बता रहे हैं कि यह मकान कल रात ही आबाद हुआ है। किताबों के ढेर बताते हैं कि नया किरायेदार कोई पढ़ने-लिखने वाला आदमी है। कमरे के सामने की दीवार के साथ मेज रखी हुई है। मेज के पास ही दाईं ओर की दीवार के साथ चारपाई है, जिस पर बिस्तर बिछा हुआ है और दो किताबें पड़ी हैं। इसी दीवार में एक अलमारी है। बाईं ओर की दीवार में एक दरवाजा है, जो बाहर सेहन में खुलता है। इस दरवाजे से बाहर सेहन में बनी हुई रसोई और सड़क पर खुलने वाले बड़े दरवाजे का कुछ भाग दिखाई देता है।

पर्दा जब उठता है, तो मेज पर रखा हुआ टाइमपीस सुबह के साढ़े आठ बजा रहा है। विनोद बक्सों में से किताबें निकालने में व्यस्त है। चेहरे से थकावट और परेशानी झलकती है। वह एक बढ़िया ऊनी शाल ओढ़े हुए है। कुछ देर बाद नेपथ्य से मोटर साइकल स्टार्ट करने जैसी आवाज आती है। यह आवाज काफी ऊँची है, जैसे मोटर साइकल बहुत पुरानी हो। विनोद उठकर इस आवाज को सुनता

है और फिर विस्फुट-सा कुर्सी पर बैठ जाता है ।]

विनोद : (स्वगत, झुंझलाकर) लगता है, यह दिन भी रात की तरह बिना आराम-चैन के ही बीतेगा । ओह, ऐसे पड़ोस में रहकर क्या खाक इम्तहान की तैयारी हो सकती है ? इस प्रकाश ने मुझे किस मकान में लाकर पटक दिया । मैं तो गांव में ही...

(मोटर-साइकल जैसे अभी स्टार्ट नहीं हुई । उसकी आवाज और भी ऊंची हो जाती है ।)

विनोद : (सिर थामकर) ओह, जैसे कोई स्टेनगन चल रही हो, दन-दन-दनादन (उठकर) ओ घीसू ! घीसू !! कम्बख्त कहां मर गया ?

घीसू : (रमोई की ओर से आते हुए देहाती लहजे में) अभी जिन्दा हूँ, मालिक । कहिए क्या हुकम है ?

विनोद : शूक है, इस गोलाबारी में अभी तू भी जिन्दा है । मैं भी...

घीसू : गोलाबारी ? कैसी गोलाबारी, मालिक ?

विनोद : अरे, तुझे यह तोप चलती सुनाई नहीं दे रही ?

घीसू : (चौंकर) तोप ? (नेपथ्य में मोटर-साइकल की आवाज फिर ऊंची होती है ।)

विनोद : (परेशान-सा माथा पकड़ कर) ओह, मेरा तो भेजा उड़ गया ।

घीसू : क्या उड़ गया, मालिक ?

विनोद : (जल-भुनकर) तेरा सिर ।

घीसू : (जल्दी से अपना सिर टटोलकर) ऐं, मेरा सिर !

विनोद : (खीझकर) अरे, सिर के ताऊ, तू अभी तक यही खड़ा है ?

घीसू : आपने बुलाया, मैं आ गया । इसके बाद आपने कोई हुकम नहीं दिया ।

विनोद : (सटपटाकर) हुकम नहीं दिया । रातभर जागने के बाद जैसे मुझ में हुकम देने की शक्ति रह गई हो ।

घीसू : तो आप रात भर सोये नहीं, मालिक ?

- (नेपथ्य में मोटर-साइकल की आवाज फिर ऊंची होती है।)
- विनोद : ((सुभ्रलाकर) अरे घीसू, मेरे सोने की चिन्ता फिर करना, पहले बाहर गली में जाकर देख कि यह क्या हो रहा है।
- घीसू : (जैसे आवाज सुनकर) अच्छा, आप इस आवाज के बारे में पूछ रहे हैं। यह तो...साथ वाले मकान में वह बूढ़ा फौजी रहता है न...।
- विनोद : (चौंकर) ओह, तो यह भी साथ वाले मकान की करामात है !
- घीसू : करामात तो नहीं मालिक, वह बूढ़ा अपनी मोटर-साइकल अस्टार्ट कर रहा है। मैं अभी...(जाने का उपक्रम करता है, फिर रुक जाता है।)
- विनोद : मोटर-साइकल स्टार्ट कर रहा है, या सरकस का खेल दिखा रहा है ? (मोटर-साइकल की आवाज फिर सुनाई देती है।) ओह, लगता है, जैसे किसी तोप को पहिये और पैडल लगाकर बनाई गई है यह मोटर-साइकल। (एकाएक) घीसू, हमारे घर में मिट्टी का तेल है ?
- घीसू : हाँ, मालिक। (अलमारी में रखी हुई एक बोतल की ओर संकेत करते हुए) यह रही बोतल। कल रात मैं लैम्प के लिए लाया था।
- विनोद : तो मिट्टी के तेल की यह बोतल उठा और...और (जब से माचिस निकालता है।) यह ले माचिस।
- घीसू : (दोनों चीजें हाथों में लेकर) अब हुकम कीजिए।
- विनोद : यह जो बाहर घंटे भर से मोटर-साइकल स्टार्ट कर रहा है न, उसे जाकर ये दोनों चीजें दे दे।
- घीसू : (विमूढ़ सा) काहे के लिए, मालिक ?
- विनोद : अरे, वह अपने आप समझ जायगा। जल्दी से जा तू !

धीसू : (दरवाजे की ओर जाकर फिर लौट आता है ।) लेकिन मालिक, उसके पास दुनाली बन्दूक है ।

विनोद : (बिगड़कर) अरे, जा भी, खड़ा खड़ा बातें बना रहा है ।

धीसू : (भयभीत-सा, विमूढ़-सा) जाता हूँ, मालिक, । (धीसू दरवाजे से होकर बाहर चला जाता है ।)

विनोद : (स्वगत) मेरा बस चले तो साइकल क्या, साथ वाले इस मकान पर भी मिट्टी का तेल छिड़ककर दियासलाई दिखा दूँ । सारी रात सोने नहीं दिया कम्बख्तों ने । कभी फौजी बंड, तो कभी घमा-चोकड़ी । कभी कहकहे, तो कभी जीने पर खटखट । अभी जरा पढ़ने बैठा था कि यह सरकस शुरू हो गया । इस प्रकाश ने...(नेपथ्य में कुत्तों के जोर से भौंकने की आवाज ।) ओह, अब ये कुत्ते ! शायद यह भी इसी सरकस के खिलाड़ी है । मेरा बस चले तो...

(बाहर से धीसू रोता-खिल्लाता जंगड़ाता हुआ दरवाजा बन्द करके जल्दी से आता है ।)

धीसू : (आते हुए) बचाइये, मालिक ! हाय, मैं मरा !

विनोद : (घबराकर) क्या हुआ, धीसू ?

धीसू : (कराहते हुए) हाय, मेरी टांग ।

(टांग से लहू बह रहा है । उसे पकड़कर धीसू फ़र्श पर बैठ जाता है ।)

विनोद : (चौंककर) अरे, तेरी टांग तो लहलुहान हो रही है । क्या कुत्तों ने...?

धीसू : (कराहते हुए) हाँ, मालिक, ज्यों ही मैं मिट्टी का तेल और माचिस उस बूढ़े को देने लगा, शिकारी कुत्तों ने मुझे झपट कर दबोच लिया ।

विनोद : (गुस्से से) मैं अभी जाकर...(बाहर जाने का उपक्रम करता है ।)

घीसू : (कराहते हुए) किसके पास जायेंगे, मालिक ? मोटर साइकल के साथ वाली गाड़ी में कुत्तों को बैठाकर वह बूढ़ा फौजी कहीं जा रहा है । (नेपथ्य में मोटर साइकल के जाने की आवाज) यह लीजिए, वह चला भी गया ।

(विनोद कुर्सी पर लौटकर बैठ जाता है ।)

विनोद : (चैन की सांस लेकर) शुक्र है, फटफट बन्द हुई । लेकिन इन कुत्तों को....

घीसू : (कराहते हुए, टांग पकड़कर) हाय, मेया री, कुत्ते क्या हैं, बाघ हैं, बाघ ! जालिमों ने सारी टाँग ही काट खाई ।

विनोद : (उठकर टाँग की जाँच करते हुए) घबरा नहीं, तेरी टाँग बच गई है रे । केवल एक ही जगह घाव है । जा, रसोई में जाकर लाल मिर्चें बांध ले ।

घीसू : (उठकर) अच्छा मालिक । लेकिन मालिक, हम यहां नहीं रहेंगे । आज कुत्तों ने काटा, कल यह बूढ़ा...मैं कहता हूँ, यहाँ खतरा ही खतरा है ।

विनोद : (कुर्सी पर बैठने हुए) अरे, मैं तो स्वयं साथ वाले मकान से परेशान हूँ । कसम है जो रात को एक पल भी नींद आई हो ।

घीसू : मालिक, मेरी बात मानिए और इस मकान को फौरन छोड़ दीजिये ।

विनोद : सोच तो मैं भी यही रहा हूँ, लेकिन मैं इस शहर में एकदम नया हूँ; वरना अभी यह मकान छोड़कर किसी दूसरे मकान में चला जाता । मुझे तो यहाँ तीन महीने ठहर कर इम्ति-हान्न की तैयारी करनी है । जब तक आस-पास शान्ति न हो, मैं कैसे पढ़ सकता हूँ ।

घीसू : यह मकान प्रकाश बाबू ने दिलाया है न। वह कोई और दिला देंगे।

विनोद : (जल-भुनकर) खाक दिलाएगा वह !

घीसू : (चकित-सा) लेकिन प्रकाश बाबू तो आपके मित्र हैं।

विनोद : (दाँत पीसकर) अरे, मित्र होकर मेरे साथ उसने दुश्मनी की है। कहाँ ला पटका मुझे। अगर कहीं वह मिल जाय, तो..

घीसू : रात प्रकाश बाबू कह तो रहे थे कि सवेरे स्कूल जाने से पहले वे यहां से होकर जायेंगे।

विनोद : अभी तक तो आया नहीं, नौ बजने को हैं। (एकाएक उठकर) घीसू, तू रसोई में जाकर टाँग पर मिर्चें बांध, मैं स्वयं प्रकाश की ओर जाता हूँ। (विनोद बाहर जाने लगता है कि तभी बाहर से कोई दरवाजा खटखटाता है। रुककर) शायद प्रकाश आ गया। घीसू, क्या कुंडी लगा रखी है ?

घीसू : हाँ मालिक, अगर मैं जल्दी से कुंडी न लगाता, तो दोनों शिकारी कुत्ते मेरा यहाँ तक पीछा करते। (कराहता है।) मुझे तो अब भी दरवाजे पर जाते हुए डर लगता है।

प्रकाश : (बाहर से दरवाजा खटखटाते हुए) विनोद ! विनोद ! अरे, घीसू !

विनोद : प्रकाश ही है। घीसू, जल्दी से दरवाजा खोल।

(घीसू लंगड़ाता हुआ, बाईं ओर के दरवाजे से बाहर सेहन में जाता है। कुछ देर बाद सेहन में प्रकाश का स्वर सुनाई देता है।)

प्रकाश : अरे घीसू, तो क्या तुझे कुत्ते ने काटा है ?

विनोद : (आगे झुककर रोषपूर्ण स्वर में) प्रकाश, घीसू को तो कुत्ते ने काटा है, तुम्हें अब मैं काटूंगा।

प्रकाश : (कमरे में आकर, हंसते हुए) क्या पागल हो गये हो, विनोद ?

विनोद : पागल हुआ नहीं, तो हो जरूर जाऊंगा ।

प्रकाश : (हंसते हुए) ऐं, दुश्मनों का मिजाज कुछ...

विनोद : मेरे मिजाज की फिर पूछना, पहले यह बताओ कि तुमने किस जन्म का मुझ से बदला लिया है ?

प्रकाश : (हैरान-सा) बदला ? क्या कह रहे हो, विनोद ? इतने लाल-पीले क्यों हो रहे हो ? एक रात में ही तेवर बदल गये । अभी तो यहाँ तीन महीने और रहना होगा ।

विनोद : इस मकान में तीन महीने ? मैं तो आज ही गांव वापस जा रहा हूँ ।

प्रकाश : (हंसते हुए) वाह, कल रात नौ बजे आये, और सवेरे नौ बजे चलने की ठान ली । बारह घंटों में ही...

विनोद : नहीं प्रकाश, मुझे यहां से जाना ही होगा ।

प्रकाश : और एम० ए० की परीक्षा ?

विनोद : मैं समझता हूँ, शहर के इस मकान की अपेक्षा मैं गांव में रहकर ज्यादा अच्छी तरह परीक्षा की तैयारी कर सकता हूँ । आखिर प्राइवेट विद्यार्थी ही तो हूँ ।

प्रकाश : विनोद, तुम्हारा भी कुछ पता नहीं चलता । गाँव में थे तो रोज लिखते थे कि मुझे शहर में कोई मकान दिला दो, यहां गांव में बिना अच्छी लायब्ररी और ट्यूटर के पढ़ाई नहीं होती । अब बड़ी कठिनाई से शहर में मकान दिलाया है, तो...

विनोद : (बात काटकर) लेकिन मैंने यह तुम्हें कब लिखा था कि मकान के साथ सरकस भी हो ।

प्रकाश : (हैरान-सा) सरकस ? यहां तो आस-पास कोई सरकस नहीं ।

विनोद : (सामने वाली दीवार की ओर संकेत करते हुए) यह साथ वाला मकान सरकस नहीं, तो ओर क्या है ?

प्रकाश : (हंसते हुए) अच्छा, रिटायर्ड कप्तान शेर बहादुर के 'शान्ति-निवास' को तुम सरकस कह रहे हो ? (हंसता है ।)

विनोद : (मुंह बिचकाकर) 'शान्ति-निवास' ! साथ वाले मकान का नाम 'शान्ति-निवास' !

प्रकाश : हां हां, बूढ़े शेर बहादुर ने अपनी स्वर्गीया पत्नी शान्ति की स्मृति में इस मकान का नाम 'शान्ति-निवास' रखा है । तुमने देखा नहीं, मकान के बाहर मोटे मोटे अक्षरों में 'शान्ति-निवास' लिखा हुआ है ।

विनोद : मैंने कुछ नहीं देखा । कल रात इस मकान में प्रवेश करने के बाद से मैं कहीं बाहर नहीं गया । लेकिन कल रात से लेकर अब तक मुझे जो अनुभव प्राप्त हुआ है, उससे मैं कह सकता हूँ कि (सामने वाली दीवार की ओर संकेत करते हुए) साथ वाले मकान का नाम 'शान्ति-निवास' नहीं, 'अशान्ति-सरकस' होना चाहिए ।

प्रकाश : (कुर्सी पर बैठते हुए हंसकर) भई, यह सरकस वाली बात मेरी समझ में अब तक नहीं आई ।

विनोद : (चारपाई पर बैठते हुए) जरा कुछ देर पहले आते तो खुद ही देख लेते बाबा आदम के जमाने की मोटर साइकल के करतब, शेरनुमा कुत्तों के खूनी खेल और.....

प्रकाश : तो क्या इतने-से शोर से तग आकर मकान छोड़ने पर उतारू हो गये हो ?

विनोद : तुम इसे इतना-सा शोर कहते हो, प्रकाश ? मेरे तो दिमाग की नसें फट गई हैं, कानों के पर्दों की धज्जियां उड़ गई हैं और कसम है, अगर रात भर एक पल के लिए भी आंख

लगी हो। सारी रात...

(तभी घीसू लंगड़ाता हुआ आता है। उसकी टांग पर पट्टी बंधी है।)

घीसू : मालिक, चाय ले आऊँ ?

विनोद : हाँ, लें आ। और सुन, घाव पर मिर्च बांध ली है न ?

घीसू : हाँ मालिक, लेकिन डरता हूँ कि कहीं कुत्ते पागल हुए तो...

प्रकाश : नहीं घीसू, कप्तान शेर बहादुर के कुत्ते पागल नहीं हो सकते। कप्तान साहब को शिकार का शौक है, इस लिए वे अपने कुत्तों की बहुत देख-भाल करते हैं।

घीसू : लेकिन बाबू जी, ऐसे पड़ोस में हमारी देख-भाल नहीं हो सकती। अगर छोटे सरकार ने आज मकान नहीं बदला, तो मैं वापस गाँव चला जाऊँगा।

प्रकाश : हद हो गई। यह घीसू भी इस मकान से भागना चाहता है। मैं कहता हूँ, ऐसा एकांत और शांत मकान शहर भर में नहीं मिलेगा।

विनोद : प्रकाश, अगर तुम रात को यहां होते, तो ऐसी बात न कहत।

प्रकाश : अच्छा, जरा सुनूँ तो रात क्या हुआ इस मकान में ?

विनोद : इस मकान में नहीं, साथ वाले मकान में। घीसू जा, जल्दी से चाय ले आ।

घीसू : अभी लाया, मालिक। (रसोई की ओर चला जाता है।)

प्रकाश : हूँ, तो क्या हुआ कल रात साथ वाले मकान में ?

विनोद : तुम कोई दस सवा दस बजे यहां से गए थे।

प्रकाश : हाँ, तब तो आस-पास एकदम शान्ति थी।

विनोद : तुम्हारे जाते ही घीसू तो रसोई में सोने के लिए चला गया, और मैं कोर्स की एक पुस्तक लेकर पढ़ने बैठ गया। कोई ग्यारह बजे मेरी आँखें झपकने लगीं और मैं सोने के लिए

चारपाई पर लेट गया । तभी साथ वाले मकान में धूम-धड़ाके से फौजी बैंड बजने लगा ।

प्रकाश : (हंसता है) फौजी बैंड नहीं, ग्रामाफोन रिकार्ड कहो ।

विनोद : क्या मतलब ?

प्रकाश : रात को खाना खाने के बाद बूढ़े शेर बहादुर को फौजी बैंड के रिकार्ड सुनने का शौक है ।

विनोद : अजीब शौक है !

प्रकाश : यह शेर बहादुर पहले सेना में था । इसे रिटायर हुए छैं सात वर्ष हो गये हैं । अब दिन भर तो यह कुत्तों के साथ जंगल में जाकर शिकार खेलता है और रात को रिकार्ड बजाकर अपने पुराने सैनिक जीवन की स्मृतियां ताजा करता है ।

विनोद : यह सब तुम्हें कैसे मालूम है, प्रकाश ? तुम यहाँ से बहुत दूर रहते हो ।

प्रकाश : कोई एक वर्ष पहले साथ वाले मकान में मेरा काफी आना-जाना था ।

विनोद : (उत्सुकता से) अच्छा ?

प्रकाश : मैं इस शेर बहादुर की लड़की गुलाब का ट्यूटर था ।

विनोद : (विचार मग्न-सा) हूं, तो वही होगी ।

प्रकाश : (चौंककर) क्या ?

विनोद : अभी बताता हूं । फौजी बैंड का संगीत कोई साढ़े ग्यारह बजे तक चलता रहा । फिर कुछ देर के लिए शान्ति रही । कोई बारह बजे होंगे कि जीने पर—उस मकान का जीना शायद (सामने वाली दीवार को ओर संकेत करते हुए) इस दीवार के साथ बना हुआ है ?

प्रकाश : हां, इसी दीवार के साथ बना हुआ है । और यह दीवार

बहुत चौड़ी नहीं, मुश्किल से डेढ़ ईंट की होगी। जीना दुखती में से होकर ऊपर जाता है।

विनोद : अरे यार, तुम तो साथ वाले मकान के चप्पे-चप्पे से परिचित जान पड़ते हो।

प्रकाश : कहा न, एक वर्ष पूर्व मैं शेर बहादुर की लड़की गुलाब को पढ़ाने के लिए...

विनोद : तो रात के बारह बजे तुम्हारी उस शिष्या को पता नहीं क्या सूझी कि...

प्रकाश : (हैरान-सा) मेरी शिष्या को ?

विनोद : अरे भई, अभी तुम ही तो कह रहे थे उसके बारे में कि...

प्रकाश : लेकिन उसे मरे हुए तो पूरा एक वर्ष हो गया है।

विनोद : तो फिर कोई और स्त्री होगी।

प्रकाश : (हंसते हुए) स्त्री ? विनोद लगता है, तुम स्वप्न की बात सुना रहे हो।

विनोद : क्या मतलब ?

प्रकाश : मतलब यह कि साथ वाले मकान में अब कोई स्त्री है ही नहीं।

विनोद : क्यों बना रहे हो, प्रकाश ?

प्रकाश : अरे भई, मैं ठीक ही कह रहा हूँ। इस बूढ़े शेर बहादुर की पत्नी का देहान्त हुए कई वर्ष हो गये हैं। फिर दुबारा इसने शादी की नहीं। और गुलाब को मरे हुए एक वर्ष हो गया। अब साथ वाले मकान में शेर बहादुर, एक नौकर और दो कुत्तों के सिवा कोई नहीं रहता।

विनोद : (हैरान-सा) लेकिन प्रकाश, मैं सच कहता हूँ, आधी रात के उस सन्नाटे में मैंने साथ के जीने से एक नटखट-सी युवती की चंचल पदचाप और मधुर कहकहे ही नहीं, चूड़ियों की झंकार तक सुनी।

प्रकाश : (हँसते हुए) हां, सुनी होगी स्वप्न में। किसी नये स्थान पर आकर तुम जैसे अविवाहितों को ऐसे ही स्वप्न आया करते हैं।

विनोद : (गम्भीरता से) नहीं प्रकाश, मैं सच कहता हूँ, उस समय मैं सो नहीं रहा था, बिल्कुल सचेत होकर जाग रहा था। और उसी जाग्रत अवस्था में मैंने.....

(तभी चाय की ट्रे उठाये हुए घीसू का प्रवेश।)

घीसू : (आकर) मालिक, चाय।

विनोद : रख दे यहां। (घीसू चाय की ट्रे मेज पर रखता है।) हां, तो प्रकाश...अरे घीसू, तू यहां क्यों खड़ा है ? हम अपने आप चाय बनाकर पी लेंगे। तू जा रसोई में।

(घीसू रसोई की ओर जाता है। विनोद उठकर चाय बनाने लगता है।)

प्रकाश : (चाय का प्याला लेते हुए) कुछ भी कहो, मैं तुम्हारी रात वाली बात बिल्कुल नहीं मान सकता। तुम कल शाम को ही गाँव से आये थे और इस नये मकान में तुम्हारी पहली रात थी। नये वातावरण में आकर आदमी, यदि जाग भी रहा हा, तो भी कई प्रकार की ऐसी कल्पनायें कर लेता है, जिनका कोई आधार नहीं होता।

विनोद : (चाय का प्याला लेकर दूसरी कुर्सी पर बैठते हुए) प्रकाश, तुम विश्वास करो, इसमें कल्पना की कोई बात नहीं। मैंने जागते हुए, होश-हवास रहते...(जरा रुककर) और तुम कहते हो कि साथ वाले मकान में आज कल कोई स्त्री रहती ही नहीं। कुछ समझ में नहीं आ रहा। (एकाएक) सुनो।

प्रकाश : कहो।

विनोद : तुम कहते हो कि साथ वाले मकान में आज कल बूढ़ा शेर-बहादुर और उसका नौकर...

प्रकाश : हाँ, हाँ, उन दोनों के अलावा इस मकान में तीसरा और कोई व्यक्ति नहीं रहता । और नौकर भी तो रात को इस मकान में नहीं, पिछवाड़े की एक कोठरी में सोता है ।

विनोद : तो हो सकता है कि वह स्त्री इस शेर बहादुर की कोई...

प्रकाश : नहीं विनोद, शेर बहादुर ऐसा नहीं है । मैं उसके चरित्र को अच्छी तरह जानता हूँ । अगर वह स्वयं ऐसा होता, तो वह अपनी इकलौती लड़की की साधारण-सी भूल को क्षमा कर देता और ...

विनोद : (चौंककर) कैसी भूल ?

प्रकाश : (चाय का प्याला टे. में रखते हुए) बड़ी ही दुःखद घटना है । विनोद, इसी मकान में, जिसमें अब तुम आये हो, पहले एक नौजवान डाक्टर रहता था । गुलाब का उससे प्रेम हो गया । गुलाब का सारा समय इस जीने की दुछ्ती में बीतता । एक दिन बूढ़े ने गुलाब और उस के प्रेमी को कहीं इकट्ठे देख लिया । शेर बहादुर राजपूत है, और इस पर रिटायर्ड फौजी कप्तान । लड़की की दुश्चरित्रता से उसपर जैसे खून सवार हो गया । वह नौजवान डरकर, मकान और शहर छोड़कर कहीं भाग गया ।

विनोद : (प्याला टे. में रखते हुए) और गुलाब ?

प्रकाश : गुलाब को शेर बहादुर कश्मीर की सैर कराने के बहाने यहाँ से ले गया और कोई दो महीने बाद उसने लौटकर लोगों को बताया कि गुलाब कश्मीर में अचानक बीमार होकर मर गई ; परन्तु मेरा खयाल है कि बूढ़े ने वंश की इज्जत बचाने की सनक में स्वयं ही गुलाब को ठिकाने लगा दिया होगा ।

विनोद : (सिहरकर) ओह !

प्रकाश : बड़ी ही सुन्दर लड़की थी वह । नाम गुलाब था, तो थी भी

गुलाब के फूल जैसी । लेकिन बूढ़े ने सच्चरित्रता की सनक में

विनोद : ओह, यह बूढ़ा तो...

प्रकाश : हाँ, सनकी तो है ही । अब इस मकान में दुनिया से अलग-थलग अकेला रहता है । इसीलिए मैं कहता हूँ कि तुम्हारी रात वाली बात...

विनोद : (एकाएक) वह ठीक है, प्रकाश ।

प्रकाश : क्या कह रहे हो ?

विनोद : मैं ठीक कह रहा हूँ, प्रकाश । कल रात जीने में गुलाब ही थी ।

प्रकाश : (हंसते हुए) गुलाब ? अरे भई, मैंने बताया न कि वह...

विनोद : (भयभीत-सा) प्रकाश तुम समझे नहीं । गुलाब मर गई, परन्तु उसकी प्रेतात्मा जीने में....

प्रकाश : (कड़कहा लगाकर) गुलाब की प्रेतात्मा जीने में ?

विनोद : तुमने अभी खुद ही बताया है कि नौजवान डाक्टर से प्रेम हो जाने के बाद गुलाब का सारा समय साथ वाले जीने का दुछत्ती में बीतता था । मैं समझता हूँ, अब मरने के बाद भी उस प्रेम-दीवानी की प्रेतात्मा जीने की दुछत्ती को ही अपना आवास बनाये हुए है । प्रेतात्माओं के बारे में अक्सर यह सुना गया है कि वह अपने प्रिय स्थान पर...

प्रकाश : (जोर से हंसकर) विनोद, तुम पढ़-लिखकर भी देहाती ही रहे । भूत-प्रेत तो मात्र किस्से-कहानियों की चीज है, उनका कोई अस्तित्व नहीं ।

विनोद : (गम्भीरता से) पहले मेरा भी यही खयाल था, प्रकाश, परन्तु रात वाली घटना के बाद अब भूत-प्रेत के अस्तित्व में मेरा दृढ़ विश्वास हो गया है । अब मुझे अच्छी तरह याद आ रहा है कि...

(कमरे का प्रकाश धीरे-धीरे मन्द होने लगता है ।)

फौजी बंड के रिकोर्डों का शोर बन्द हो चुका था । स्पष्ट है कि बूढ़ा शेर बहादुर सो गया था । चारों ओर निस्तब्धता छाई हुई थी । मैंने बत्ती बुझाई और ...

(स्टेज पर अंधेरा छा जाता है ।)

चारपाई पर लेटा हुआ मैं सोने का प्रयत्न कर रहा था कि सहसा मुझे एक कुत्ते के भूंकने और रोने का स्वर सुनाई दिया । और फिर इस दीवार के साथ, जीने पर...

(सहसा स्टेज के पिछले भाग में मायावी संगीत के साथ हल्का-सा प्रकाश होता है और सामने वाली दीवार के पर्दे पर जीने की छायामयी रेखाकृति-सी उभरती है । फिर एक युवती की छाया धीरे धीरे जीने पर चढ़ कर बीच में रुकती हुई दिखाई देती है । कुछ देर रुकने के बाद युवती की यह छाया लोबामयो-सी हंसती हुई, गुनगुनाती हुई कभी तेजी से जीने के ऊपर चढ़ती है और कभी खिन्नखिन्नाती हुई तेजी से नीचे उतर आती है । इस छाया-लोबा के समाप्त होते ही विनोद का स्वर सुनाई देता है ।)

विनोद : और प्रकाश, जीने पर चढ़ने उतरने और हंसने-खेलने का यह सिलसिला काफी समय तक चलता रहा । साथ वाले मकान के बारे में तुमने आज जो बातें बताई हैं, वे मुझे मालूम नहीं थीं । मैं भुंभला रहा था, खीझ रहा था कि ये लोग पड़ोसियों को इतनी रात होने पर भी चैन से नहीं सोने देते । और अब सोचता हूँ कि...

(एकाएक स्टेज पर पहले जैसा प्रकाश हो जाता है और विनोद भयभीत-सा विवर्ण-सा खड़ा दिखाई देता है ।)

प्रकाश : अरे, एकाएक उठकर कहाँ जा रहे हो, विनोद ?

विनोद : (घबराया-सा) घीसू ! घीसू !

घीसू : (जल्दी से आकर) हुकम, मालिक ?

साथ वाला मकान

विनोद : जल्दी से सामान बाँध ।

प्रकाश : (हैरान-सा) विनोद !

विनोद : भूतों वाले मकान के पड़ोस में रहना खतरे से खाली नहीं, प्रकाश । मैं अभी यहाँ से जा रहा हूँ । (कमरे के सामान को बटोरने लगता है ।)

प्रकाश : (उठकर) लेकिन, विनोद... ।

घीसू : (सड़मकर) क्या कहा मालिक, साथ वाले मकान में भूत...?

विनोद : (बिखरी हुई पुस्तकों को जल्दी से समेटते हुए) हाँ, साथ वाले मकान में एक लड़की की प्रेतात्मा रात को...

प्रकाश : विनोद, बेकार वहम में न पड़ो । साथ वाले मकान में कोई भूत-प्रेत नहीं । यह सब तुम्हारी कल्पना है । जरा आराम से बैठो और...

(तभी सामने की दीवार से निकल कर एक ईंट नीचे मेज पर रखे चीनी के बर्तनों पर गिरती है और उसके साथ ही एक पुर्जा भी । विनोद, प्रकाश और घीसू भय से चौंककर ईंट की ओर देखते हैं ।)

विनोद : अरे, यह ईंट कहाँ से गिरी ?

घीसू : मालिक, यह ईंट इस दीवार से निकलकर...

विनोद : हाँ, इसी जीने वाली दीवार से निकल कर ही यह ईंट गिरी है ।

प्रकाश : (हैरान-सा) लेकिन यह ईंट उधर से गिराई किसने ? बूढ़ा शेर बहादुर तो...

घीसू : वह तो मोटर साइकल पर बैठ कर बहुत पहले..

प्रकाश : शिकार खेलने गया होगा । और जाने से पहले, मैं जानता हूँ, वह सब कमरे बन्द कर जाता है । नौकर बाहर कोठरी में...

(सहसा विनोद की दृष्टि कागज के पुर्जे पर पड़ती है । वह

झपटकर डसे उठाता है ।)

प्रकाश : यह कागज का पुर्जा कैसा है ?

विनोद : (कांपते हुए हाथों से) यह भी शायद ईंट के साथ ही...

(विस्फारित नेत्रों से पढ़ते हुए) इसपर तो लिखा है...

प्रकाश : (जल्दी से) देखूँ तो । प्रकाश कागज का पुर्जा लेकर जल्दी से पढ़ता है और फिर चौंकर) अरे !

विनोद : (घबराकर) क्या बात है, प्रकाश ?

प्रकाश : (सहमकर) यह तो उसी गुलाब की लिखावट है ।

विनोद : (घबराकर) गुलाब की लिखावट ? तो प्रकाश, ...

धीसू : (भयभीत) गुलाब कौन है, मालिक ?

प्रकाश : गुलाब का ट्यूटर होने के नाते इस लिखावट को मैं अच्छी तरह पहचानता हूँ । यह गुलाब के हाथ का ही लिखा हुआ है ।

विनोद : (उत्सुकता से) क्या लिखा है ?

प्रकाश : (कागज को पढ़ते हुए) "तुम मेरे पड़ोस में नहीं, हृदय में बसे हो । तुमने मेरी अधेरी दुनिया में फिर प्रकाश कर दिया । कल सारी रात मैं अपने चाँद की प्रतीक्षा में रही । तुम पास होकर भी दूर रहे । खैर, आज रात को मैं स्वयं मिलने आऊंगी । - गुलाब ।"

विनोद : (चौंकर, घबराकर) रात को स्वयं मिलने आयेगी ? तो पत्र मुझी को सम्बोधित करके लिखा गया है ! प्रकाश, रात होने से पहले ही मुझे यहाँ से भाग जाना चाहिये ।

धीसू : (जल्दी से बिस्तर लपेटते हुए) मालिक, मैं अभी सामान बाँधता हूँ और...

विनोद : (घड़ाम से कुर्सीपर बैठते हुए, भयाकुल-सा) हाँ धीसू, जल्दी सामान बाँध । मेरे तो हाथ-पाँव फूल गए हैं ।

प्रकाश : ठहरो, मुझे सोचने दो ।

विनोद : (प्रकाश से पत्र लेकर और पढ़कर) प्रकाश, इसमें सोचने-समझने की कोई बात नहीं । मेरा अनुमान ठीक निकला । साथ वाले मकान में गुलाब की प्रेतात्मा है । रात को वही.... रात को क्यों, अब भी तो वही जीने पर से...

प्रकाश : विनोद, तुम्हें तो बेकार का वहम हो गया है । साथ वाले जीने पर कोई भूत-प्रेत नहीं ।

विनोद : (जल्दी से पत्र को जेब में डालता है । धीरे से) प्रकाश, धीरे बोलो, जीने में खड़ी वह हमारी सब बातें सुन रही है ।

प्रकाश : मैं यह बिल्कुल नहीं मानता ।

विनोद : (धीरे से) अरे, जब उसने यह ईंट और पत्र गिराकर अपनी उपस्थिति का प्रमाण दे दिया है, तब भी तुम नहीं मानते । हे भगवान, मैं किस मुसीबत में आ फँसा । जब जीवित थी, तो उस नौजवान डाक्टर को प्रेम-जाल में फँसाया, अब मुझे । घीसू, जल्दी सामान बांध । मैं इस मकान में एक क्षण भी नहीं रुकना चाहता ।

(घीसू और भी तेजी से सामान को समेटने लगता है ।)

प्रकाश : (दीवार के सुराख की ओर देखते हुए) विनोद, बेकार जल्दी न मचाओ, मैं अभी इस रहस्य का पता लगाता हूँ ।

विनोद : अरे, अब और क्या पता लगाने को रह गया ?

(प्रकाश मेज पर से टूटे हटाकर उसके ऊपर चढ़ता है ।)

विनोद : मेज पर क्यों चढ़ रहे हो ?

प्रकाश : जहाँ से ईंट गिरी है, दीवार के उस सुराख से उधर जीने की ओर भाँककर देखता हूँ ।

विनोद : (जैसे विनती करते हुए) नहीं प्रकाश, उधर न देखो । ईंट गिराने वाला कुछ और भी कर सकता है ।

प्रकाश : तुम तो व्यर्थ डर रहे हो । अभी सब पता लग जाता है । सुराख ऊँचाई पर है; मेज के ऊपर तिपाई भी रखनी होगी ॥

जरा वह तिपाई तो पकड़ना । (विनोद से तिपाई लेकर प्रकाश उसे मेज पर रखता है और उसके ऊपर चढ़ता है ।) अब ठीक है । इसे मजबूती से थामे रहो । घीसू, तुम भी इधर आ जाओ ।

(विनोद के साथ घीसू भी उठकर तिपाई को थामता है और प्रकाश दीवार के सुराख से देखता है ।)

घीसू : मालिक, प्रकाश बाबू छेद से उधर जीने की तरफ क्या देख रहे हैं ?

प्रकाश (भय से थरथराकर) गु...ला...ब !

(तिपाई के ऊपर से लड़खड़ाकर प्रकाश धड़ाम से नीचे गिरता है और मूर्च्छित हो जाता है ।)

विनोद : (जल्दी से पास आकर) प्रकाश ?

घीसू : (पास आकर) संभालते-संभालते लड़खड़ा कर नीचे गिर गये । (चौंकर) मालिक, इनका रंग हल्दी की तरह...

विनोद : अरे, प्रकाश तो बेहोश हो गया और....और...

घीसू : शायद गिरने से सिर में चोट लगी है । पता नहीं एकाएक क्या हुआ इन्हें !

विनोद : (प्रकाश का सिर गोद में लेकर घबराया-सा) घीसू, जल्दी से किसी डाक्टर को बुला ला । नब्ज तो चल रही है ।

घीसू : (छोटा उठाकर) मालिक, मुँहपर पानी छिड़कने से शायद यह होश में आ जायें । (प्रकाश के मुँह पर पानी के छीटे मारता है ।)

विनोद : अरे, इससे क्या होगा ? भागकर किसी डाक्टर को बुला ला । (घीसू जाने लगता है, परन्तु प्रकाश आँखें खोलकर भय-भीत-सा इधर-उधर देखता है ।) घीसू, जरा रुक जा, प्रकाश ने आँखें खोल दी है । भागकर थोड़ा-सा दूध गर्म कर ला ।

घीसू : (जाते हुए) अभी लाया, मालिक ।

विनोद : प्रकाश ! प्रकाश ! अरे, बोलते क्यों नहीं ? मैं विनोद हूँ ।

आँखें फाड़-फाड़कर क्या देख रहे हो ? बोलो न ।

प्रकाश : (दुर्बल स्वर में) वह ...वह । (भय से कांपता है ।)

विनोद : कौन वह ? अरे, काप क्यों रहे हो ?

प्रकाश : (दुर्बल स्वर में) वह...वह...गुलाब ।

विनोद : (चौंककर) गुलाब ? क्या तुमने सचमुच गुलाब को देखा छेद मे से ?

प्रकाश : हाँ, मैंने दीवार के छेद मे से गुलाब को...नहीं, नहीं, गुलाब के प्रेत को देखा । वह जीने पर दुछत्ती के पास खड़ी मुस्करा रही थी ।

विनोद : (भय से हकलाते हुए) मुस्करा रही थी ? तो मेरी बात ठीक निकली न ।

प्रकाश : हाँ, विनोद, दीवार के छेद मे से मैंने उसका चेहरा बिल्कुल साफ देखा, और मैं डर कर...शायद मेरे सिर में चोट लगी है । (कराहते हुए) लेकिन चोट मामूली जान पड़ती है । मैं जरा...(उठने की चेष्टा करता है ।)

विनोद : (रोकते हुए) नहीं नहीं, उठो नहीं, लेटे रहो । घीसू अभी दूध लाता है । मैंने तो तुम्हें रोका था, परन्तु तुम माने नहीं ।

प्रकाश : क्या बताऊँ विनोद, आज बुि और विज्ञान से परे भी बात देखी है । आज पहली बार भूत-प्रेत पर विश्वास हुआ है । (उठकर बैठते हुए) तुम ठीक कहते थे । गुलाब की प्रेतात्मा साथ वाले जीने की दुछत्ती को अपना आवास बनाए हुए है । मर कर भी उसने अपने इस प्रिय स्थान को नहीं छोड़ा । (एकाएक) विनोद, घीसू ने सामान बांध दिया ?

विनोद : हाँ, थोड़ा-सा रह गया है ।

प्रकाश : घीसू से कहो, बाकी का सामान भी जल्दी से बान्ध दे । हमें फौरन यह मकान खाली कर देना चाहिए । भुतहे मकान के पड़ोस में मैं तुम्हें एक क्षण भी नहीं रहने दूंगा ।

विनोद : यह तो मैं भी कह रहा था ; लेकिन और कोई मकान तो अभी...

प्रकाश : (उठकर) इस समय तुम मेरे घर चलो । जगह थोड़ी है, फिर भी हम गुजारा कर लेंगे । घीसू कहाँ है ?

विनोद : (उठकर) तुम्हारे लिए दूध गर्म कर रहा है ।

प्रकाश : दूध की कोई आवश्यकता नहीं । मैं अब ठीक हूँ । हमें अभी यहाँ से चल देना है । (ऊँचे स्वर से) घीसू ! घीसू !

घीसू : (आकर) जी, बाबू जी । आपको क्या हो गया था ?

प्रकाश : फिर बताऊंगा, पहले जल्दी से भाग कर एक तांगा ले आ ।

घीसू : हम यह मकान छोड़कर जा रहे हैं न ?

विनोद : हाँ, घीसू । जा जल्दी से...

घीसू : (सहर्ष) अभी लाया तांगा, मालिक । (अंगोछा संभालता हुआ जल्दी से जाता है ।)

प्रकाश : विनोद, आओ हम जल्दी से बाकी का सामान बांध लें ।

(दोनों मित्र सामान बांधने में जुट जाते हैं । साथ साथ बातचीत भी करते जाते हैं ।)

प्रकाश : विनोद, वह पत्र कहाँ है ?

विनोद : कौन सा ? अच्छा वह । यह रहा जब मैं ।

प्रकाश : बड़ा संभाल कर रखता है ।

विनोद : प्रेम-पत्र जो ठहरा । (हँसने लीं चेष्टा करता है ।)

प्रकाश : (भय-मिश्रित हंसी हँसकर) हाँ, प्रेम-पत्र तो प्रिय होता ही है—मानवी ने भेजा हो, चाहे प्रेतनी ने ।

विनोद : प्रकाश, सच कहूँ, सबसे अधिक मैं इस पत्र से डरा हूँ । गुलाब की प्रेतात्मा कल रात तो दूर जीने में रही, और आज रात यहां साक्षात् भेंट करने को आ रही है ।

प्रकाश : (हँसते हुए) उस परवाने के भाग्य को सराहना चाहिये, जिसके पास दीपशिखा खुद चलकर आने को आतुर हो उठे ।

विनोद : (हंसते हुए) और यह निर्मोही परवाना दीपशिखा के प्रेम को ठुकराकर भागने की सोच रहा है । (दोनों हंसने की चेष्टा करते हैं, परन्तु हंस नहीं पाते ।)

प्रकाश : (धीरे से) सच कहूँ, यह गुलाब की प्रेतात्मा वाकई बड़ी दिलफैक निकली । तुम्हें देखते ही लट्टू हो गई ।

विनोद : (हंसते हुए) यार, तुमने मेरी प्रेमिका के अकेले दर्शन कर लिये, एक झलक मुझे भी...

(तभी कोई बाहर का दरवाजा खटखटाता है । दोनों मित्रों की यह चुहल एक दम बन्द हो जाती है । दोनों दम साधकर खड़े हो जाते हैं, जैसे कुछ सुना ही न हो । कुछ देर बाद फिर दरवाजा खटखटाने का शब्द सुनाई देता है ।)

प्रकाश : (चौंकर भयभीत स्वर में) विनोद ।

विनोद : (सहमकर) क्या ?

प्रकाश : बाहर कोई दरवाजा खटखटा रहा है ।

विनोद : शायद घीसू...लेकिन वह चौक से इतनी जल्दी तांगा कैसे ले आया ?

प्रकाश : (धीरे से भयभीत-सा) तो फिर यह कौन दरवाजा खटखटा रहा है ।

विनोद : (सहमकर) पता नहीं । इस शहर में तुम्हारे सिवा मेरा तो कोई और परिचित है नहीं, जो...(बाहर कुत्ता रोता-सा सुनाई देता है ।) प्रकाश, सुना, बाहर कुत्ता रो रहा है ।

प्रकाश : (और भी डरकर) पता नहीं, किसे देखकर ? (दरवाजे पर फिर दस्तक । चौंकर) लो फिर ..

विनोद : दरवाजा कौन खोले ? घीसू तो...(कांपते हुए) ओह, दरवाजे की ओर से कैसी चिपचिपी-सी ठंडी हवा आ रही है !

(दरवाजा खुलने की आवाज ।)

प्रकाश : (डरकर) ऐं, दरवाजा तो अपने आप खुल गया । और ..
(जैसे भय से गला रुंध गया हो । और फिर बाहर सेहन
की ओर देखकर कांपने लगता है ।) राम ! राम !! राम !!!

विनोद : (भय से कांपते हुए) क्या हुआ ?

प्रकाश : (भय से कांपते हुए) भू...त !

विनोद : (और भी डरकर) राम ! राम !! राम !!!

प्रकाश : (कांपते हुए धीरे से) विनोद, अब तुम भाग नहीं सकते ।
वह...गुलाब ।

गुलाब : (आकर मुस्कराते हुए) तो मुझे आपने पहचान लिया,
मास्टर जी ! लेकिन आप यहाँ कैसे ?

(प्रकाश और विनोद कोई उत्तर नहीं देते । दोनों राम राम
रटते हुए, ऐसा लगता है, मानों किसी भी समय भय से
अचेत हो जायेंगे ।)

गुलाब : (आश्चर्य से) मास्टर जी, आपने मुझे पहचाना नहीं ? मैं
गुलाब हूँ, आपकी शिष्या गुलाब । ओह, आप बोलते क्यों
नहीं ? आप काँप क्यों रहे हैं ? आप भी ? (कुछ देर बाद
ज़रा ऊँचे स्वर में) डाक्टर साहब, जरा जल्दी से अन्दर तो
आइये ।

(सुन्दर सजीले नौजवान का प्रवेश ।)

डाक्टर : (पास आकर) क्या है, गुलाब ? (युवा डाक्टर को देखकर
प्रकाश चौंकता है ।) .

गुलाब : (घबराकर) देखिये, इन दोनों को क्या हो गया है ।

डाक्टर : डर गए हैं दोनों ।

गुलाब : डर गए हैं ? किस से ?

डाक्टर : (हँसकर) भूत से ।

गुलाब : (आश्चर्य) भूत से ! लेकिन...

डाक्टर : अरे, भूतों का कोई ठिकाना है । पता नहीं, कब कहाँ से

एकाएक प्रकट हो जायं ।

गुलाब : लेकिन...

(प्रकाश युवा डाक्टर को घूर-घूर कर देखता है ।)

डाक्टर: ठहरो । प्रकाश नाबू आपकी आँखें बता रही हैं कि आपने मुझे पहचान लिया है । (प्रकाश सिर हिजाकर पहले स्वीकार करता है, फिर इन्कार करता है ।) नहीं ! अरे भई मैं वही डाक्टर हूँ जो पहले इसी मकान में रहता था और...

प्रकाश : (कुछ संभल कर) आप ? इनके साथ ?

डाक्टर: (हँसकर) क्या बताऊँ ! जीवन-काल में तो यह मेरा साथ निभा नहीं सकीं, अब...

प्रकाश : (एकाएक डरकर) तो क्या आप भी ?

डाक्टर: (हँसकर) जी हाँ, इनका साथ निभाने के लिए मुझे भी भूत बनना पड़ा है । (प्रकाश की भय से कटी आँखें डाक्टर के पाँवों गड़ जाती हैं ।) ओह, आप मेरे पाँव देख रहे हैं । पाँव तो उलटे नहीं हुए ?

गुलाब : (हँसते हुए) अच्छा, अब समझी । ये हमें भूत समझ रहे हैं ।

डाक्टर: क्यों न समझें । कल रात तुम्हारे पिताजी बता तो रहे थे कि कश्मीर से लौटकर उन्होंने तुम्हारी मौत की घोषणा कर दी थी । अब इन्हें क्या पता कि..

गुलाब : हाँ, कश्मीर में मैंने जब पिताजी के विरोध के बावजूद आप से विवाह कर लिया था, तो...

प्रकाश : (चौँककर) तो गुलाब, क्या तुम मरी नहीं थीं ?

गुलाब : पिताजी के विचार से तो मैं मर गई थी । पिताजी जब मुझे लेकर कश्मीर पहुँचे, तो ये भी वहाँ पहुँच गये ।

डाक्टर: और एक दिन हमने चुपके से विवाह कर लिया ।

गुलाब : और पिताजी नाराज होकर वापस लौट आये । अब कहीं

जाकर उन्होंने हमें क्षमा किया है ।

प्रकाश : (जरा प्रकृतिस्थ होते हुए) तो यह बात है । तुम कब आईं ?

गुलाब : कल रात । गाड़ी जरा लेट थी । हम कोई बारह बज पहुंचे ।

प्रकाश : (हंसते हुए) यह भी खूब रही । विनोद, यही है वे डाक्टर साहब, जो पहले इसी मकान में रहते थे और...

डाक्टर : (हंसते हुए) और अब मैं इस भूत का पति हूँ ।

(कहकहा ।)

प्रकाश : ये मेरे मित्र विनोदकुमार हैं । कल रात ही इस मकान में आये हैं ।

डाक्टर : (हंसते हुए) और अब भूतों से डरकर जा रहे हैं ।

(कहकहा ।)

घीसू : (जल्दी से आकर) मालिक, मैं तांगा ले आया हूँ ।

विनोद : घीसू, तांगा लौटा दे । हम नहीं जायेंगे ।

घीसू : (घबराकर) क्या ? आप नहीं जायेंगे ? खैर, मैं तो भूत वाले मकान के पड़ोस में नहीं रहूँगा ।

डाक्टर (हंसते हुए) हाँ, हाँ, नहीं रहना चाहिये । पता नहीं, कब जीने का भूत ईंटे गिराने लगे । (कहकहा ।)

गुलाब : (लज्जित-सी) ओह, मास्टर जी, बातों-बातों में वह काम तो रह ही गया, जिसके लिये मैं इन्हे साथ लेकर आई हूँ ।

प्रकाश : कैसा काम ?

गुलाब : अभी-अभी मैं उधर जीने में खड़ी थी ।

प्रकाश : (हंसते हुए) मैं जानता हूँ, जीने की दुछनी तो तुम्हारा प्रिय स्थान है ।

गुलाब : (हंसते हुए) हाँ, वही बैठकर मैं आपसे पता करती थी ।

डाक्टर : (हंसते हुए) और वहीं से...

गुलाब : (लजाकर) चुप भी रहिये । हाँ, तो मास्टर जी, अभी-अभी मैं उधर जीने में खड़ी कुछ ढूँढ रही थी ।

डाक्टर : (हंसते हुए) क्या ढूँढ़ रही थी, यह भी बता दो न ।

गुलाब : (अनसुनी करते हुए) असावधानी के कारण मुझसे इस दीवार की एक ईंट इधर गिर गई । उसी के लिए मैं क्षमा माँगने आई हूँ ।

प्रकाश : (दीवार के सुराख और फिर ईंट की ओर देखते हुए) तो क्या यह ईंट पहले से ही निकली हुई थी ?

गुलाब : (लजाकर) हाँ, कुछ... ।

डाक्टर (हंसते हुए) अरे भई, शरमा क्यों रही हो ? बता दो न कि दीवार का यह सुराख उन दिनों हमारे प्रेम-पत्रों का लेटर-बक्स था । (कहकड़ा ।)

विनोद : (जेब से पत्र निकाल कर) तो यह भी...?

डाक्टर : (हंसते हुए) यह उन्हीं दिनों का अन्तिम पत्र था ।

प्रकाश : (हंसते हुए) और विनोद समझा कि...

विनोद : (जल्दी से) चुप रहो, प्रकाश ।

(सब ठहाका मारकर हंसते हैं । घीसू सबको चकित-सा, विमूढ़-सा देखता है और पर्दा गिरता है ।)

समाप्त

सड़क पर

पात्र-परिचय

शिवशंकर भटनागर	:	गृह-स्वामी, सरकारी कअसर उम्र ४२ वर्ष ।
मिस्टर गुप्ता	:	एजेन्ट, उम्र ४४ वर्ष ।
उषा	:	मिस्टर भटनागर की पत्नी, उम्र ३८ वर्ष ।
पप्पू	:	मिस्टर भटनागर का लड़का, उम्र १०-११ वर्ष ।
मनोरमा	:	मिस्टर भटनागर की लड़की, उम्र १७-१८ वर्ष ।
रमेश	:	मनोरमा का मित्र, उम्र २० वर्ष ।
मोटू राम	:	नौकर, बेहद मोटा, नाक में बोलता है, पतली आवाज ।
ड्राइवर	:	पेशेवर-भा, टिपिकल प्रादेशिक लहजे में बोलता है ।

समय—मध्याह्नोत्तर ।

स्थान—एक सरकारी अफसर शिवशंकर भटनागर के घर का पहली मंजिल पर डाइंग रूम ।

[कमरे में सोफा सेट, तिपाई आदि फर्नीचर करीने से सजा हुआ है । दाईं दीवार का दरवाजा खुलने पर नीचे से ऊपर आने वाली सीढ़ियों का कुछ हिस्सा दिखाई देता है । इसी दरवाजे के ऊपर कॉज-बैल लगी है । दाईं दीवार के साथ स्टेज के किनारे पर एक तिपाई, जिस पर टेलीफोन रखा है । सामने वाली दीवार में एक बड़ी-सी खिड़की, जिससे शहर की कुछ ऊंची इमारतें नीले आसमान की पृष्ठ-भूमि पर दिखाई देती हैं । बाईं ओर की दीवार में दो दरवाजे ; दोनों पर रेशमी पर्दे लटक रहे हैं । एक डाइनिंग रूम में खुलता है और दूसरा सोने के कमरे में । जब पर्दा उटता है, तो सामने वाली खिड़की पर गृह-स्वामिनी उषा ऐसे झुकी है, जैसे नीचे सड़क पर कुछ देख रही हो । उसकी पीठ दर्शकों की ओर है । रह रहकर नीचे से सड़क के ट्रैफिक का शोर सुनाई देता है । साथ वाले डाइनिंग रूम से दो पुरुषों के कहकहे सुनाई देते हैं । एक तो हैं स्वयं गृह-स्वामी बाबू शिवशंकर भटनागर है और दूसरे उनके मेहमान मि० गुप्ता । कुछ देर बाद दूर से शहर के घंटा घर पर दो बजने की आवाज सुनाई देती है । उषा चौंककर, घबराकर एकाएक खिड़की पर से धूमती है ।]

उषा : (स्वगत) ऐं, दो बज गये और पच्चीस अभी तक स्कूल से नहीं आया । हे भगवान, कहां रह गया यह लड़का आज । मेरी तो जान सूखी जा रही है । रोज तो साढ़े बारह बजे तक घर पहुंच जाता था । आज कहाँ रह गया ? स्कूल से चले उसे

सड़क पर

१४७

दो घंटे हो गये, पूरे दो घंटे । (कुछ देर सोचती है, फिर टेलीफोन का रिसीवर उठाकर डायल घुमाती है ।) हँलो ! हँलो ! क्या आप मिस मैकिनटोश के स्कूल से बोल रही हैं ? कौन ? अच्छा, अच्छा, आप मिस मैकिनटोश ही हैं । मैं मैसेज भटनागर बोल रही हूँ, (स्वीपकर) अजी, बाटा-नगर नहीं, भटनागर, मैसेज उषा भटनागर । हाँ, मिस मैकिनटोश, वह तो अब ठीक है । नहीं, अस्पताल से आए तो उन्हें एक सप्ताह हो गया... एक दो दिन [मैं] दफ्तर जाने लगेंगे, जरा टाँग में कुछ... जी ? अब तो मैं उन्हें कभी मोटर-साइकिल पर नहीं चढ़ने दूँगी... हाँ. इस समय मैं बहुत चिन्तित हूँ । हमारा लड़का पप्पू आपके यहाँ पड़ता है न, वह अभी तक घर नहीं पहुँचा... क्या कहा ? उसकी क्लास को ठीक बारह बजे छूटी हो गई थी । जरा पता तो लगाइये, कहीं बाहर ग्राउंड में न खेल रहा हो । क्या ? स्कूल में इस वक़्त कोई बच्चा नहीं । क्या ? नहीं, नहीं, वह रास्ते में कहाँ रुकेगा ? वह तो हमेशा स्कूल से सीधा घर ही आता है । क्या ? आप मेरी कोई मदद नहीं कर सकती ! (झुल्लाकर टेलीफोन का रिसीवर रख देती है, रुधे गले से) मेरा बच्चा खो गया है, और मेरी कोई मदद करने को तैयार नहीं । बाप कार खरीदने की खुशी में बैठा कहकहे लगा रहा है और... देखूँ, शायद सड़क पर पप्पू न आ रहा हो । (खिड़की से झुककर नीचे सड़क पर देखती है और कुछ देर बाद फिर घूमती है ।) मनोरमा भी कालिज से आ गई और पप्पू का अभी तक कुछ पता नहीं । हे भगवान, आज कहाँ रह गया मेरा पप्पू !

(साथ वाले कमरे से कहकहे सुनाई देते हैं और इधर

सीढ़ियों पर पांव की चाप । कॉल-बैल बजती है । उषा दर-वाजा खोलती है । मनोरमा किताबें उठाये हुए अन्दर आती है ।)

उषा : (जल्दी से) मनोरमा, रास्ते में कहीं पप्पू को तो नहीं देखा ।

मनोरमा : नहीं, मम्मी ! क्या वह अभी तक स्कूल से नहीं आया ?

उषा : (घबराई-सी) नहीं, मनोरमा, दो बज गये और पप्पू अभी तक घर नहीं पहुँचा ।

मनोरमा : रोज तो वह मुझ से पहले...

उषा : हाँ, रोज साढ़े बारह बजे तक घर पहुँच जाता था, आज पता नहीं कहाँ रह गया ? मुझे तो डर है कि कहीं...

मनोरमा : मम्मी, मैं अभी साइकिल पर पप्पू के स्कूल जाती हूँ ।

(जल्दी से तिपाई पर अपनी किताबें रखती है ।)

उषा : उसके स्कूल में मैं फोन कर चुकी हूँ । वहाँ वह नहीं है...।

मनोरमा : अच्छा, तो साइकिल पर... (जाने लगती है ।)

उषा : (जैसे राकते हुए) मनोरमा, मैं तुम्हें साइकिल पर अब कहीं नहीं जाने दूंगी । जैसे तुम्हारे डैडी का मोटर-साइकिल पर चढ़ना मैंने हमेशा के लिये बन्द कर दिया है, वैसे ही आज से तुम्हारा साइकिल पर चढ़ना भी बन्द... ।

मनोरमा : (हैरान होकर) क्यों, मम्मी ?

उषा : अभी मैंने ऊपर से तुम्हें रमेश के साथ साइकिल पर आते देखा था. . .।

मनोरमा : तो मम्मी, रमेश के साथ आने में क्या बुराई है ? हम दोनों एक ही कालिज में पढ़ते हैं, एक ही हमारा रास्ता है, एक ही जगह हम...।

उषा : (चिढ़कर) हाँ, एक ही जगह तुम दोनों मरोगे ।

मनोरमा : (चौककर) क्या मतलब, मम्मी ?

सड़क पर

उषा : मतलब यह कि तुम दोनों को साइकिल चलाना नहीं आता ।

मनोरमा : वाह मम्मी, रमेश तो साइकिल-रेस में फर्स्ट आया है ।

उषा : और अब शायद वह तुम्हारे साथ किसी सरक्स में नौकरी करने की सोच रहा है ।

मनोरमा : (चौंकर) सरक्स में नौकरी ? आपको किसने बताया, मम्मी ?

उषा : बताना किसने था ; अभी-अभी मैंने खुद अपनी आंखों से देखा, तू दोनों साइकिलों के हैंडल छोड़कर एक दूसरे का हाथ पकड़े चले आ रहे थे । आगे या पीछे से कोई कार या ट्रक आ जाता तो...

मनोरमा : (लजाकर) ओह, मम्मी, वह तो...

उषा : और फिर जब रमेश आगे निकल गया, तो तुमने बिना दायें-बायें देखे जल्दी से साइकिल को सड़क पर मोड़ा और...

मनोरमा : लेकिन मम्मी, पहले दायें देखो, फिर बायें देखो और फिर दायें देखो, यह ड्रिल तो पैदल चलने वालों के लिए है ।

उषा : मनोरमा, तुम अठारह साल की हो गई हो, कालिज में पढ़ती हो, लेकिन तुम्हें इतनी समझ नहीं कि सड़क पर जो खतरा पैदल चलने वालों के लिए हो सकता है, वही साइकिल वालों के लिये भी हो सकता है । खैर, कल से तुम साइकिल पर नहीं जाओगी ।

मनोरमा : तो मम्मी, क्या मैं पैदल...?

उषा : मनोरमा, मुझसे बेकार बहस न करो । पप्पू की चिन्ता से मैं मरी जा रही हूँ । इस घर में चिन्ता करने के लिए सिर्फ मैं ही तो हूँ ।

मनोरमा : मम्मी, मैंने तो कहा है कि मैं जाकर उसे ढूँढ लाती हूँ ।

उषा : कहाँ जाकर ढूँढेगी ?

(अन्दर से फिर कड़कड़ा सुनाई देता है ।)

मनोरमा : अम्मी, डैडी के साथ खाना कौन खा रहा है ?

उषा : कोई मिस्टर गुप्ता है ।

मनोरमा : वही न जो अपनी कार बेचना चाहते हैं ? नीचे शायद उन्ही की कार खड़ी है । बिल्कुल नई जान पड़ती है । मैं अभी जाकर डैडी से कहती हूँ कि...

(तभी अन्दर से मोटूराम नौकर आता है । आवाज पतली और नाक में बोलता है ।)

मोटूराम : (आकर) बबी जी, बाबूजी पूछ रहे हैं कि...

उषा : (खोसकर) क्या पूछ रहे हैं तेरे बाबूजी ? पप्पू के न आने से मेरी जान पर बनी है और उन्हें...

मोटूराम : ठीक है ! ठीक है !!

उषा : (गुस्से से) क्या ? पप्पू स्कूल से नहीं आया और मैं चिन्ता से मरी जा रही हूँ और तू कहता है यह ठीक है ।

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, पप्पू अभी स्कूल से नहीं आया...

उषा : (गुस्से से) बदतमीज जा, दफा हो जा ।

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, तो यह लीजिए ! (जेब से एक कागज निकालकर देता है ।)

उषा : यह क्या है ?

मोटूराम : मेरा स्तीफा !

उषा : (घबराकर) स्तीफा ?

मनोरमा : मोटूराम, तुम हमें छोड़कर चले जाओगे ? नहीं, कभी नहीं । डैडी तो तुम्हारे सिवा किसी और के हाथ का खाना ही नहीं खाते । और मुझे भी...

उषा : अपने इसी चटोरेपन के कारण ही तो तुम लोगों ने इसे इतना सिर पर चढ़ा रखा है । एम० ए० पास क्लर्कों से ज्यादा इस यहाँ तनखाह मिलती है और यह फिर भी जेब में स्तीफा डाले रहता है...

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, आपको मेरा यहाँ रहना बुरा लगता है तो मैं अभी जाता हूँ ।

(सीढ़ियों व ले दरवाजे की ओर कदम बढ़ाता है ।)

मनोरमा : (उसे रोकते हुए) नहीं मोटूराम, तुम नहीं जा सकते ।

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, लेकिन बीबी जी जैसे बाबू जी को डांटती है, वैसे मुझे भी क्यों डांटती है ?

उषा : हे भगवान, यह नौकर नहीं, घर का मालिक है, मालिक ।

मोटूराम : ठीक है, ठीक है ।

उषा : (डांटकर) क्या ठीक है ?

मोटूराम : आपने फिर मुझे डांटा ?

मनोरमा : मोटूराम, तुम कुछ समझते नहीं । मम्मी आज बहुत परेशान है । पप्पू अभी तक स्कूल से नहीं आया ।

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, पप्पू स्कूल से नहीं आया, तो क्या मुझे चिन्ता नहीं ? अभी-अभी मैंने बाबूजी से कहा था कि पप्पू स्कूल से अभी तक नहीं आया । उन्होंने कहा कि बीबी जी से जाकर पूछो...

उषा : हाँ, वह खाना छोड़कर कैसे आ सकते थे ! लड़का अभी तक स्कूल से नहीं आया, उनकी बला से ।

(ड्राइनिंग रूम से बाबू शिवशंकर भटनागर बाँया हाथ पट्टी से गले में लटकाये, लंगड़ाते हुए आते हैं ।)

भटनागर : (आते हुए) क्या पप्पू अभी तक स्कूल से नहीं आया ? (हाथ की घड़ी देखकर) अरे, सवा दो बज गये और पप्पू...

उषा : शुक्र है, आपको पप्पू का खयाल तो आया !

भटनागर : अरे भई, मुझे तो अभी मोटूराम ने बताया । मैंने इसे तुमसे पूछने के लिये भेजा । यह नहीं लौटा, तो मैं खाना छोड़कर—जरा सोचो मोटूराम का बनाया खाना छोड़कर—खुद तुमसे पूछने चला आया । लेकिन सवाल तो यह है कि पप्पू अबतक घर

क्यों नहीं पहुंचा ? शायद स्कूल में...

उषा : स्कूल में वह नहीं है, मैंने पता लगा लिया है। मुझे तो डर है कि पप्पू कहीं रास्ता न भूल गया हो।

भटनागर: वाह, पप्पू रास्ता कैसे भूल सकता है ? पिछले छैं महीनों से वह स्कूल अकेला जाता है, अकेला आता है। क्यों मनोरमा ?

मनोरमा : हां डैडी, सीधा रास्ता है। स्कूल से पार्क पार करके अस्पताल वाले चौराहे पर और फिर यह सीधी सड़क...

भटनागर: अरे मोटूराम, जा गुप्ता बाबू से पूछ कि कुछ और तो नहीं चाहिये। और मनोरमा, तुम जरा उनके पास जाकर बैठो। अकेले ही खाना खा रहे है।

(मोटूराम और मनोरमा अन्दर डाइनिंग रूम में जाते हैं।)

मोटूराम के बनाये खाने की मि० गुप्ता भी बहुत प्रशंसा कर रहे थे। पता नहीं, कम्बख्त के हाथों में क्या जादू है कि...

उषा : (चिढ़कर) आपकी इन्हीं बातों से तो मुए का सिर फिर गया है। इतनी तनखाह पा रहा हूं, फिर भी हरदम स्तीफा देने को तैयार रहता है।

भटनागर: (घबराकर) आज फिर उसने...?

उषा : हां, मैंने डांटा, तो जाने को तैयार हो गया।

भटनागर: (घबराकर) फिर कैसे रुका ?

उषा : मैंने तो रोका नहीं। मैं तो चाहती हूं कि इस मोटू ने कल जाना हो तो आज जाय। मुझा मेरी सौत बनकर इस घर में बैठा है।...

भटनागर: (घिघियाते हुए) उषा, मैं तुम्हें सौ बार कह चुका हूं कि मोटूराम को कभी डांटा न करो। तुम्हारी डांट खाने के लिए मैं जो हूं। तुम नहीं जानती, ऐसा जादूगर-रसोइया दिया

लेकर ढूँढ़ने से भी नहीं मिल सकता ।

उषा : (खीझकर) आपको रसोइये का इतना खयाल है, लेकिन अपना लड़का खो गया है, उसकी कोई चिन्ता नहीं ।

भटनागर: वाह, चिन्ता क्यों नहीं । मोटूराम का बनाया खाना छोड़कर चला आया हूँ । पता नहीं, यह पप्पू कहां रह गया आज !

उषा : मैं लाख बार कह चुकी हूँ कि पप्पू को किसी ऐसे स्कूल में दाखिल कराइये, जहां की बस उसे घर से ले जाय और फिर घर में ही छोड़ जाय । लेकिन आप तो मिस मक्खन-टोस्ट...

भटनागर: अरे भई, मक्खन-टोस्ट नहीं, मिस मैकनटोश कहो ।

नषा : नहीं, मैं तो उस चुड़ैल को मक्खन-टोस्ट ही कहूंगी । मैंने अभी अभी उस भुलसी से फोन पर पप्पू के बारे में पूछा, तो बोली — “आपका लड़का अगर नहीं पहुंचा है, तो मैं क्या कर सकती हूँ ।”

भटनागर: हां, ठीक ही तो उसने कहा ? वह आखिर...

उषा : हां, आप तो उसकी वकालत करेंगे ही । और आप यह जान कर खुश होंगे कि उसे भी आपकी बहुत चिन्ता है । पूछ रही थी कि मि० बाटानगर का क्या हाल है ? अगर मेरे सामने होती, तो मैं उसका सारा मक्खन-टोस्ट निकाल कर रख देती । उसे मेरे लड़के की नहीं, मेरे पति की चिन्ता है ।

भटनागर: उषा, तुम्हें तो बेकार का वहम हो गया है । ज़रा आधुनिक ढंग की औरत है । हर किसी से हंस कर बोलती है, लेकिन उसका यह मतलब थोड़े ही है कि...

उषा (खीझ कर) अच्छा, अच्छा, आप यह मक्खन-टोस्ट-पुराण छोड़िये और लड़के की चिन्ता कीजिये ।

भटनागर: भई, लड़के की ही तो चिन्ता कर रहा हूँ । मि० गुप्ता से कार का सौदा तय हो गया है ।

उषा : यह मि० गुप्ता है कौन ? पहले तो कभी इन्हें देखा नहीं ।

भटनागर: मेरी भी इनसे पहली बार मुलाकात हुई है । हमारे शहर में यह किसी विदेशी बीमा कंपनी के एजेंट है । अचानक इनका किसी दूसरी जगह तबादला हो गया है, इसलिये यह अपनी कार बेचना चाहते हैं ।

उषा : लेकिन इनको पता कैसे चला कि आप कार खरीदना चाहते हैं ? आप तो डेढ़ महीने से घर से नहीं निकले ।

भट० : परसों मेरा वह मित्र खन्ना आया था न, उसमे मैंने जिक्र किया था कार का । वह कही मि० गुप्ता से टकरा गया और इन्हें मेरे पास भेज दिया । कार तो खरीदनी ही है । घर बैठे-बिठाये अच्छी सैकण्ड हैंड मिल जाय तो क्या बुरा है ! कार खरीद लेने पर मुझे दफ्तर जाने का आराम तो होगा ही, पप्पू को भी पैदल स्कूल नहीं जाना पड़ेगा । कार में मैं खुद उसे स्कूल छोड़ आया करूंगा और दोपहर को लंच के लिये आते समय उसे स्कूल से ले आया करूंगा ।

उषा : वाहवा, उस मिस मक्खन-टोस्ट के दो बार दर्शन करने का आपने खूब रास्ता निकाला ! आप कान खोल कर सुन लीजिये । अगर कार खरीद ली गई, तो मैं उसके लिए एक ड्राइवर रखूंगी ।

भटनागर: अरे भई, ड्राइवर रखने की क्या जरूरत है, मैं खुद जो ड्राइव करना जानता हूं ।

उषा : मोटर-साइकल के एक्सीडेंट के बाद आपकी ड्राइवरी पर मुझे कोई भरोसा नहीं रहा । आप ४० मील से कम रफ्तार से तो ड्राइव कर ही नहीं सकते । आप तो उन लोगों में से हैं, जिनके लिये ट्रैफिक वालों को आसमान पर लाल-हरी बत्तियां लगवानी चाहिये ।

भटनागर:(हंसते हुए) नहीं उषा, मोटर-साइकिल के एक्सीडेंट से

मुझे काफी सबक मिला है। कार को मैं बड़ी होशियारी और सावधानी से चलाऊंगा।

उषा : कार का सौदा कितने में हो रहा है ?

भटनागर: कार बिल्कुल नई है, मुश्किल से चार साढ़े चार सौ मील चली है। मैंने छह हजार कह दिये हैं।

उषा : तो मैं छह हजार की चीज आपके रहम पर नहीं छोड़ सकती। उसकी संभाल के लिये ड्राइवर रखा ही जायगा।

भटनागर: उषा, तुम तो हर बात में हठ ठान लेती हो। जरा सोचो तो, ड्राइवर की तनख्वाह के लिये घर के बजट में गुंजाइश कहां है ?

उषा : तो ड्राइवर न सही, मैं आपको कार अकेले नहीं चलाने दूंगी। साथ वाली सीट पर हमेशा मैं बैठा करूंगी।

भटनागर: (हंसते हुए) वाह उषा, गोया तुम सवेरे दफ्तर भी मेरे साथ जाया करोगी !

उषा : क्यों नहीं। मेरे साथ रहने से न तो आप स्पीड बीस मील से ज्यादा बढ़ा सकेंगे, न ट्रैफिक के सिगनलों की अवहेलना कर सकेंगे, न कार को सड़क के खंभों और ट्रैफिक-आइलैंड्स से बगलगीर होने देंगे, न स्पीड के नशे में पैदल चलने वालों को कीड़े-मकोड़े समझेंगे, न मुझे जल्दी ही अपने बीमे की रकम दिलाने की कोशिश करेंगे, ...

भटनागर: बस बस उषा, मैं समझ गया। तुम मेरे साथ कार में बैठोगी और पग पग पर मुझे डांटोगी—(उषा की नकल उतारते हुए) “कहां उड़े जा रहे हो ? सावधानी से चलाओ ट्रैफिक के सिपाही के इशारे को देखो। अंधे हो, देखते नहीं आगे से ट्रक आ रहा है। तुम्हें कभी कार चलानी भी आयेगी ! स्पीडोमीटर की सुई कहां जा रही है ?” यों तुम्हारी रनिंग-

कमेण्टरी चलती रहेगी और घबराहट में कार का एक्सीडेंट न होता हो, तो भी होके रहेगा ।

(तभी अचानक डाइनिंग रूम से मि० गुप्ता रुमाब से मुंह पोंछता हुआ आता है ।)

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) अरे भई, भटनागर साहब, यह कैसा एक्सीडेंट होके रहेगा, यानी कि...

भटनागर: (चौककर) क्षमा कीजिये मि० गुप्ता, मैं खाना बीच में ही छोड़कर चला आया ।

मि०गुप्ता: खैर, कोई बात नहीं, यानी कि आपकी लड़की मनोरमा से मुझे सब मालूम हो गया है ।

भटनागर: जी हाँ, छोटा लड़का अभी तक स्कूल से नहीं लौटा ।

मि०गुप्ता: आप लोग बेकार ही चिन्ता कर रहे हैं, यानी कि परेशान होने की कोई बात ही नहीं । बच्चा है, कहीं खेल-तमाशा देखने लग गया होगा, यानी कि...

उषा : नहीं जी, हमारा पप्पू तो स्कूल से सीधा घर आता है ।

भटनागर: हाँ, इसी लिये चिन्ता हो रही है । ढाई बजने को हुए और वह...

मि०गुप्ता: अजी, आ जायगा, यानी कि आप चिन्ता न कीजिये । स्कूल से आता हुआ अपने किसी सहपाठी के साथ उसके घर चला गया होगा । अच्छा, तो अब मतलब की बात की जाय, यानी कि...(लोके पर बैठता है ।)

भटनागर: (उसके पास बैठते हुए) हां, हां, हमारा आपका सौदा तो तय हो ही चुका है ।

मि०गुप्ता: छै हजार बहुत कम हैं, मि० भटनागर, यानी कि साढ़े नौ हजार की मेरी खरीद है ।

भटनागर: लेकिन आप इसे काफी चला भी चुके हैं ।

मि०गुप्ता: कहां चला चुका हूं ? बिल्कुल नई है, यानी कि नई से भी

अच्छी हालत में है। नीचे चलकर आप देख लीजिये।

भटनागर: अभी चलता हूं नीचे। ट्राई भी तो करनी होगी।

मि०गुप्ता: शॉक से ट्राई कीजिये।

उषा : लेकिन आप इस हालत में...?

भटनागर: भई, मेरा दायां हाथ तो बिल्कुल ठीक है।

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) और अब तो एक हाथ से कार ड्राइव करने का फैशन-सा हो गया है।

उषा : मैं तो इन्हें कभी एक हाथ से ड्राइव न करने दूँ।

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) बहन जी, मैं इनकी बात थोड़े ही कर रहा हूँ? ये तो विवाहित हैं और विवाहित मर्द हमेशा दोनों हाथों से ड्राइव करते हैं; पर जब कोई मर्द अपनी प्रेमिका को साथ वाली सीट पर बैठाकर ड्राइव करता है, तो स्टीयरिंग ह्वील के हिस्से में एक ही हाथ आता है, यानी कि ..

(कहकहा।)

भटनागर: (हंसते हुए) गुप्ता साहब, खूब कही आपने। आज दुनिया में कारों के ७५ प्रतिशत एक्सीडेंट इसी प्रेम-लीला के कारण होते हैं।

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) आपने वह अमेरिकन चुटकुला तो सुना ही होगा ?

भटनागर: क्या ?

मि०गुप्ता: यानी कि कार में विवाह का प्रस्ताव और अस्पताल में विवाह-संस्कार। (दोनों ठहाका मारकर हंसते हैं।)

मोटूराम : (आकर) बाबू जी, कॉफी यही ले आऊँ ?

भटनागर: हां मोटूराम, यही काफी ले आ।

मोटूराम : ठीक है, ठीक है। (जाता है।)

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) यह आपका नौकर भी कार का ही नमूना है यानी कि...

भटनागर: (हंसते हुए) कार नहीं, ट्रक कहिये । (कहकहा ।) इसकी खातिर मुझे इस फ्लैट के सभी दरवाजे चौड़े करवाने पड़े हैं । (दोनों फिर ठहाका मारकर हंसते हैं । उषा इस हंसी में शरीक नहीं होती, बल्कि खीझ उठती है ।)

उषा : (खीझकर) मनोरमा, मनोरमा !

मनोरमा : (आकर, क्या है, मम्मी ।

उषा : क्या कर रही थी ?

मनोरमा : खाना खा रही थी ।

भटनागर: उषा, तुमने भी तो अभी तक खाना नहीं खाया ।

उषा : सबको खाने की चिन्ता है, लेकिन किसी को पप्पू का ध्यान नहीं... ।

भटनागर: (घबराकर) अरे हां, पप्पू अभी तक नहीं आया ।

मि०गुप्ता: आप लोग बेकार ही चिन्ता कर रहे हैं, यानी कि...

उषा : (अनसुनी करते हुए) मनोरमा, तुम्हारे डैंडो तो जा नहीं सकते

भटनागर: अरे भई, कहां जाना होगा, मुझे बताओ न ?

उषा : (अनसुनी करते हुए) तो मनोरमा, तुम रमेश को साथ लेकर पप्पू को रास्ते में देखते हुए उस के स्कूल तक हो आओ ।

भटनागर: हां मनोरमा, जल्दी से साइकिल पर जाओ ।

उषा : नहीं, मनोरमा, साइकिल पर नहीं जा सकती ।

भटनागर: क्यों ?

मनोरमा : नहीं मम्मी, मैं दाये बायें देख कर बड़ी सावधानी स साइकिल चलाऊंगी, हमेशा सड़क के बाईं ओर रहूंगी, चौराहे पर सिपाही के इशारे पर दाये बाये देख कर मुड़ूंगी और...

उषा : सरकस-साइक्लिंग नहीं करोगी ।

मनोरमा : नहीं करूंगी, मम्मी ।

भटनागर: भई, यह सरकस-साइक्लिंग क्या चीज है ?

सड़क पर

१५६

उषा : हाथ-पांव तुड़वाने के बाद भी आपको सरकस-साइकिलिंग का अर्थ मालूम नहीं हुआ ?

भटनागर: (हंसते हुए) ओह, अब मालूम हुआ !

उषा : तो जल्दी से जाओ साइकिल पर, मनोरमा । रमेश को साथ ले जाना ।

मनोरमा: (जल्दी से सीढ़ियों की ओर जाते हुए) अच्छा, मम्मी । (जाती है ।)

मि०गुप्ता: सड़कों पर जो एकसीडेण्ट होते हैं, यानी कि कीमती कारें तबाह होती हैं, उनका कारण पैदल चलने वाले तो हैं ही, यह साइकिल वाले भी कम नहीं । मैं पिछले चौदह वर्षों से यानी कि लगातार १४ वर्षों से कार चला रहा हूं । मेरा तो यह अनुभव है कि अगर पैदल और साइकिल वाले सड़क पर चलने के नियमों का पालन करें, तो कभी इतने एकसीडेण्ट न हों ।

(मोदूराम ट्रे में कॉफी लेकर आता है ।)

भटनागर: उषा, जरा कॉफी तो बना दो ।

(उषा एक कुर्सी पर बैठकर दो प्यालों में कॉफी बनाती है ।

मोदूराम एक तरफ खड़ा हो जाता है ।)

मि०गुप्ता: क्या आप कॉफी नहीं पी रहीं, यानी कि...

उषा : जी नहीं । (दोनों को कॉफी के प्याले देती है ।)

भटनागर: उषा, तुमने तो अभी खाना भी नहीं खाया ।

उषा : मुझे भूख नहीं ।

मोदूराम: ठीक है, ठीक है, बीबीजी पप्पू को खाना खिला कर ही खुद खाया करती है । पप्पू अभी तक स्कूल से नहीं आया, तो इन्होंने भी खाना नहीं खाया ।

मि०गुप्ता: (कॉफी पीते हुए) मिसेज भटनागर, आप तो बेकार ही चिन्ता कर रही हैं, यानी कि चिन्ता करने की कोई बात ही नहीं,

पप्पू बच्चा है, स्कूल से आते हुए किसी खेल-तमाशे में लग गया होगा, यानी कि कहीं रुक गया होगा। बस आता ही होगा। उसे ढूँढने के लिये मनोरमा तो गई है। हां, तो मैं एक्सीडेण्टों यानी कि दुर्घटनाओं की बात कर रहा था। सड़क के किनारे खेलने वाले छोटे २ बच्चे भी कार वालों के लिये परेशानी का कारण होते हैं, यानी कि सड़क के किनारे फुटबाल या क्रिकेट खेल रहे हैं। गेंद सड़क पर लुढ़की और नन्हे मियां भी उसके पीछे सड़क पर लुढ़क पड़े। कार वाला जरा भी ब्रेक लगाने से चूका कि....

उषा : (चौंककर, घबराकर) क्या ?

मि०गुप्ता: यानी कि एक्सीडेण्ट। इस तरह दुनिया में रोज सैकड़ों बच्चे कार के नीचे आकर मर जाते हैं।

उषा : (सहमकर) मर जाते हैं ?

मि०गुप्ता: भारत जैसे अधिक आबादी वाले देश में तो इन एक्सीडेण्टों को भी फेमिली-प्लानिंग-प्रोग्राम का एक अंग समझा जा सकता है, यानी कि...

उषा : (सहमकर) क्या कह रहे हैं आप ?

भटनागर: लेकिन मैं समझता हूँ कि सारा दोष मां-बाप और स्कूल वालों का होता है। वे बच्चों को सड़क पर सावधानी से चलने के नियम ही नहीं बताते।

उषा : खैर, मैंने तो अपने पप्पू को सब बता रखा है कि सड़क पार करते समय क्या सावधानी बरतनी चाहिए, किन नियमों का पालन करना चाहिए।

भटनागर: अरे भई, यह कर्ब-ड्रिल तो उसे मैंने ही सिखलाई थी। सड़क पार करने से पहले रुक कर पहले दायें देखो, फिर बायें देखो, फिर दुबारा दायें देखो। अगर सड़क पर कोई कार या तांगा आदि न आ रहा हो, तो सड़क पार करो। जब मनोरमा

छोटी थी, तो...

मि०गुप्ता: हाँ, बच्चों को यह सब बातें बतानी चाहियें, यानी कि समझानी चाहियें। मैं तो कहता हूँ, सड़क पर चलने के नियमों का ज्ञान बच्चे की पढ़ाई का अंग होना चाहिये।

उपा : मैंने तो अपने पप्पू को ट्रैफिक के इशारे भी बता रखे हैं।

मि०गुप्ता: यह आपने बहुत अच्छा किया, यानी कि आपके लड़के को सड़क पर कभी खतरा नहीं होगा। खैर, बच्चे तो आखिर बच्चे ठहरे, ये जो बड़ी उम्र के लोग सड़क पर पैदल चलते हैं, कार वालों का तो उनके मारे नाक में दम रहता है, यानी कि कार चलाना मुश्किल हो जाता है सड़क पर। उनके लिये सड़क के दाये-बायें पटरियाँ बनी हैं, चौराहों के पास सड़क पार करने के लिये सफेद निशान बने हैं, उनकी सहायता के लिये सिपाही हैं, लेकिन वे तो मुँह उठाकर सड़क के बीच चलेंगे, यानी कि एकदम अन्धे और बहरे होकर, यानी कि जैसे बाग में सैर कर रहे हों, मेले में घूम रहे हों। मैं आपको कल ही का किस्सा सुनाता हूँ। दूर से मैंने देखा कि एक बेहद मोटा आदमी..

भटनागर: हँसते हुए हमारे मोटूराम से ज्यादा मोटा तो नहीं होगा।

मोटूराम: ठीक है, ठीक है।

मि०गुप्ता: हाँ, मोटूराम जितना ही वह मोटा था। उसे एकाएक सड़क पार करने की सूझी, यानी कि मेरी कार के पहुंचते पहुंचते वह बीच सड़क में रोड-ब्लॉक बनकर खड़ा हो गया।

उपा : (चौंककर) तो वह कार के नीचे आ गया ?

मि०गुप्ता: नहीं। वह आगे आकर गिरा ही था, कि मैंने ब्रेक लगाई, यानी कि वह बाल-बाल बच गया। मैंने नीचे उत्तर कर उसे उठाया तो उलटा, मुझ पर बरस पड़ा, यानी कि कहने लगा, “मैं सड़क पार कर रहा था, तो तुम रुके क्यों नहीं ?”

मैने कहा, “श्रीमान जी, आप तो अपने इस पहाड़ सरीखे शरीर को लेकर बीच सड़क में खड़े थे ।” वह बोला, “तो तुम अपनी कार को मेरे दायें या बायें से निकाल कर ले जा सकते थे ।” उसकी बात पर मुझे बजाय गुस्से के हँसी आ गई, यानी कि मैंने कहा, “हुजूर, आपके दाये या बाये चक्कर काटकर जाने से पता है मेरा कितना पेट्रोल खर्च होता !”

(सब हँस पड़ते हैं ।)

भटनागर: (हँसते हुए) मोटूराम, कभी तुझ से किसी कार वाले ने ऐसी बात तो नहीं कही ?

मोटूराम : ठीक है, ठीक है ! बाबूजी, ऐसी बात मुझ से भी कोई कार वाला कह सकता है । लेकिन मैंने देखा है कि कार वाले किसी को चित करके बात करने के लिये रुकते कम ही है ।

उषा : सड़क पर पैदल चलने के नियम मैंने मोटूराम को भी बता रक्खे हैं । इसे तो दिन में कई बार बाजार से सौदा-सुल्फ लाने के लिये जाना पड़ता है ।

भटनागर: हां मोटूराम, तू जरा सावधानी से बाजार जाया कर । तुझे कुछ हो गया, तो मुझे सारी उम्र भूखा ही रहना होगा ।

मि०गुप्ता: (हँसते हुए) हां, हाँ, रसोई का ऐसा जादूगर मिलना मुश्किल है, यानी कि ..

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, बाबू जी, सड़क पर कारों, बसों और ट्रकों से खतरा है, इसलिये जब मैं बाजार जाता हूँ, तो मैं यह नोटबुक और पैसिल हाथ में ही लिये रहता हूँ । (जेब से नोटबुक और पैसिल निकाल कर दिखाता है ।)

मि०गुप्ता: (हैरान-सा) क्यों मोटूराम, तू यह नोट-बुक और पैसिल हाथ में ही क्यों लिये रहता है ? यानी कि...?

मोटूराम : भगवान न करे, अगर कोई मोटर या ट्रक मेरे ऊपर से

गुजर जाय, तो मैं तुरन्त उसका नम्बर नोट कर सकता हूँ ।

(कहकहा ।)

भटनागर: (हंसते हुए) वाह मोटूराम, तेरी दूरदर्शिता का भी जवाब नहीं ।

मोटूराम : ठीक है ठीक है, कार वालों को किसी की जान से अपना पेट्रोल ज्यादा प्यारा होता है न ।

(कॉल-बैल बजती है ।)

उषा : (खुशी से चौंककर, भागकर सीढ़ियों वाला दरवाजा खोलते हुए) मेरा पप्पू आ गया ! मेरा पप्पू आ गया !

(दरवाजे की ओर मि० भटनागर और मोटूराम भी लपकते हैं ।)

भटनागर: आ गया, बेटे ।

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, पप्पू राजा आ गया! पप्पू राजा आ गया !

मि० गुप्ता: मैंने कहा था न कि यानी कि लड़का आपका खोया नहीं, और यह लीजिये वह आ गया ।

(दरवाजा खुलने पर पप्पू की बजाय खाकी कपड़ों में एक नौजवान दिखाई देता है। सब उसे हैरानी से ! देखते हैं।

उषा के चेहरे पर निराशा ।)

उषा : (रुंधे कंठ से) हाय, मेरा पप्पू नहीं आया । (यह कहती हुई निराश उषा खिड़की पर जाकर नीचे सड़क की ओर देखने लगती है । मोटूराम कॉफी के बर्तन उठाकर अन्दर चला जाता है ।)

भटनागर: (नौजवान से) तुम कौन हो ?

ड्राइवर : जी, मैं ड्राइवर हूँ ।

भटनागर: (चौंककर) ड्राइवर ? (कुछ सोचकर) मि० गुप्ता, यह शायद आपका...?

मि० गुप्ता: नहीं मि० भटनागर, यह मेरा ड्राइवर नहीं, यानी कि मैं अपनी कार को खुद ही ड्राइव करता हूँ ।

भटनागर: तो फिर यह...?

ड्राइवर : मि० शिवशंकर भटनागर आप ही हैं न ?

भटनागर: हां, मैं ही हूँ शिवशंकर भटनागर । किसने भेजा है तुम्हें ?

ड्राइवर : रमेश बाबू और उनके साथ एक लड़की थी...हां, मनोरमा जी, उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है । अस्पताल वाले चौराहे की तरफ जाते हुए वे मुझे मिले थे ।

उषा : (पलटकर, उत्सुकता से) तो तुम मेरे पप्पू के बारे में खबर लेकर आये हो न । कहाँ है पप्पू ?

भटनागर: पप्पू को तुमने कहाँ देखा था ?

ड्राइवर : (अनसुनी करते हुए) रमेश बाबू और मनोरमा जी ने यह चिट्ठी आपके नाम दी है । (भटनागर को चिट्ठी देता है ।)

उषा : जल्दी पढ़िये चिट्ठी, पप्पू ही के बारे में होगी ।
(सब उत्सुकता से भटनागर की ओर देखते हैं । भटनागर चिट्ठी पढ़ता है ।)

भटनागर: (निराशा से) नहीं भई, पप्पू के बारे में नहीं । ड्राइवर तुम जा सकते हो ।

ड्राइवर : लेकिन श्रीमान जी...।

उषा : (जल्दी से चिट्ठी लेकर) क्या लिखा है इस चिट्ठी में ?

भटनागर: अरे भई, कुछ नहीं । यह ड्राइवर रमेश की जान-पहचान का है । कुछ समय से बेकार है । अभी रमेश को मनोरमा से मालूम हुआ कि हम कार खरीद कर रहे हैं । रमेश और मनोरमा जब पप्पू की खोज में जा रहे थे, तो यह रास्ते में मिल गया । उन्होंने इसे मेरे पास भेज दिया ।

मि० गुप्ता: तो इसे आप रख लीजिये न, मि० भटनागर ! कार तो आप खरीद ही रहे हैं, यानी कि सौदा तो...

भटनागर: सो तो ठीक है, लेकिन कार मैं खुद ड्राइव करना जानता हूँ। और अभी अभी उषा से यह फैसला भी हो गया था कि ड्राइवर नहीं रखवा जायगा।

उषा : नहीं, मैंने अन्तिम रूप से फैसला नहीं किया था। इस हालत में तो आप ड्राइव नहीं कर सकते। अगर कार लेनी है, तो ड्राइवर रखना ही होगा। (ड्राइवर से) पहले तुम कहां काम करते थे ?

भटनागर: लेकिन, उषा...!

ड्राइवर : रमेश बाबू के दोस्त मि० साहनी के यहां।

उषा : वहां से नौकरी क्यों छोड़ी ?

ड्राइवर : वे बे-कार हो गये, तो मैं भी बेकार हो गया।

भटनागर: क्या मतलब ?

ड्राइवर : उनकी कार भगवान को प्यारी हो गई...।

भटनागर: प्यारी हो गई ? क्या मतलब...?

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) अजी, मतलब स्पष्ट है, यानी कि कार का किसी एक्सीडेंट में रामनाम-सत हो गया होगा।

उषा : (चौंककर) कैसे ?

ड्राइवर : एक दिन मिसेज साहनी को अकेले खुद ही कार ड्राइव करने की सूझी। मुझे घर में छोड़कर वह कार लेकर चल दीं। रास्ते में ब्रेक खराब हो गई। फौरन वह घर की ओर लौटीं, ६० मील की स्पीड से।

भटनागर: अरे भई, ब्रेक खराब हो जाने के बाद मिसेज साहनी को इतनी स्पीड से कार चलाने की क्या जरूरत थी ?

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) उनका खयाल होगा कि रास्ते में दुर्घटना होने से पहले ही वह जल्दी से घर पहुंच जायें। (सब हंसते हैं।)

ड्राइवर : जी हां, कुछ ऐसी ही बात थी। इसी जल्दी में उन्होंने तीन राह चलतों को परलोक का टिकट दिया, एक मोड़ पर कार

बेकाबू हो गई, और पेड़ को अपनी ब्रोक समझ कर ऐसे टकराई कि चकनाचूर हो गई ।

मि०गुप्ता: (हसते हुए) अब समझ में आया कि भगवान ने इंसानों की इस दुनिया में पेड़ क्यों उगाये हैं ।

उषा : ओह ! मिसेज साहनी का क्या हुआ ?

ड्राइवर : वे बच गई हैं, लेकिन संसार को मुँह दिखाने लायक नहीं रहीं ।

भटनागर: इसी लिये तो मैं कहता हूँ कि औरतों को स्टीयरिंग-व्हील से दूर ही रहना चाहिये ।

उषा : वाह, मर्द तो जैसे सभी अच्छे ड्राइवर होते हैं। मैं इस खिड़की से दिन भर सड़क के ट्रैफिक को देखती रहती हूँ । हर पुरुष ड्राइवर यों कार चलाता है, जैसे हवा में उड़कर वह हवाई जहाजों की किसी रेस में हिस्सा ले रहा हो । कारों, ट्रकों और बसों की तेज रफ्तारी को देखकर कभी कभी मैं सोचा करती हूँ कि वह दिन दूर नहीं, जब मजिस्ट्रेट अपराधी-कार वाले से कहेगा, “तुम अभी अभी अमुक बादल की गलत दिशा में ड्राइव कर रहे थे । तुम्हें पचास रुपये जुर्माना किया जाता है ।”

मि०गुप्ता: (हँसते हुए) और वह कार वाला मजिस्ट्रेट के हाथ में सौ रुपये रख देगा, यानी कि पचास रुपये ज्यादा ।

भटनागर: ५० रुपये ज्यादा क्यों ?

मि०गुप्ता: जितनी तेजी में वह आया होगा, उतनी ही तेजी से वह घर जाना चाहेगा । (कड़कता ।)

उषा : (ड्राइवर से) क्या तुम भी इसी तरह तेज ड्राइव करते हो ?

ड्राइवर : नहीं बीबी जी, मैं तो यह मानता हूँ कि तेज रफ्तार, खतरा हजार, कम रफ्तार, सुख है हजार । आज तक मैंने जिस भी कार को चलाया है, उसका कभी एक्सीडेंट नहीं हुआ ।

आप मेरे सर्टिफिकेट देख सकती हैं ।

मि० गुप्ता : खैर, सर्टिफिकेट भी देख लिये जायेंगे । कार को अच्छी तरह संभालना तो जानते हो ? यानी कि...

ड्राइवर : बाबूजी, कार की संभाल मैं उतनी ही करता हूं, जितनी अपनी बीवी की ।

भटनागर : (हंसते हुए) यह बीवी और कार की तुलना भी खूब रही ।

मि० गुप्ता : खैर, बहुत गलत भी नहीं, यानी कि (कहकहा) कुछ मर्द ऐसे भी हैं जो कार को बीवी पर तरजीह देते हैं ।

भटनागर : उनमें से एक आप हैं । (कहकहा) ।

उषा : (खीझकर) यह कारों और बीवियों का मुकाबला बाद में होता रहेगा, पहले इस ड्राइवर को...

भटनागर : लेकिन उषा, ड्राइवर तो हमें चाहिये नहीं ।

उषा : नहीं, ड्राइवर रक्खा जायगा । कार चलाने की आपकी योग्यता पर मुझे कोई विश्वास नहीं । और मैं समझती हूं, यह ड्राइवर हमारे लिये ठीक रहेगा । (ड्राइवर से) तुम्हारा नाम क्या है ?

ड्राइवर : प्रीतम ।

उषा : प्रीतम ? (सकपकाकर) ओह, यह नाम तो...खैर, हम लोग तुम्हें ड्राइवर कहकर ही पुकारा करेंगे । मि० गुप्ता, आप जरा इस ड्राइवर की योग्यता की जांच करके देखिये ।

मि० गुप्ता : क्यों भई, तुम ट्रेफिक के सब सिगनल्ज तो अच्छी तरह समझते हो न, यानी कि...?

ड्राइवर : वाह साहब, यह भी आपने खूब सवाल किया । मैं दस वर्षों से ड्राइवरी कर रहा हूं और आज तक एक भी बार मेरा चालान नहीं हुआ । सर्टिफिकेट देख लीजिये ।

मि० गुप्ता : (हंसते हुए) चालान वाले सर्टिफिकेट तुम मुझे काहे कं दिखाओगे, यानी कि...खैर, एक बात बताओ ?

ड्राइवर : प्रछिये ।

मि०गुप्ता: तुम्हारी कार के आगे एक दूसरी कार जा रही है...!

ड्राइवर : (जल्दी से) मैं उस के आगे जाने की कभी कोशिश नहीं करूंगा ।

उषा : बस, ऐसा ही ड्राइवर मुझे चाहिये ।

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) मेरा सवाल तो पूरा हुआ नहीं, यानी कि...हां, तो ड्राइवर, मैं यह पूछ रहा था कि तुम्हारी कार के आगे एक दूसरी कार जा रही है, उसका ड्राइवर चौराहे के पास पहुंचते ही अपना दायां बाजू बाहर निकाल कर यों घुमाता है, यानी कि यों...(अपना बाजू घुमा कर दिखाता है) तो इसका तुम क्या मतलब समझोगे ?

ड्राइवर : अगर तो अगली कार का ड्राइवर मर्द हुआ, तो मैं समझूँ कि वह बाईं ओर घूम रहा है, लेकिन अगर ड्राइवर औरत हुई, तो कुछ नहीं कह सकता ।

भटनागर: (हंसते हुए) क्यों ?

ड्राइवर : मेरा अनुभव यह है कि औरत-ड्राइवर एक सैकण्ड में अपना इरादा बदल कर बजाय बाईं ओर के दाईं ओर घूम सकती है या सीधी सिपाही के ऊपर से जा सकती है । (कहकहा ।)

भटनागर: (हंसते हुए) उषा, मैंने कहा था न कि औरतों को...

उषा : (डाँटकर) आप चुप रहिये । पुलिस की रिपोर्ट से पता चलेगा कि दुनिया की आबादी कम करके अस्पतालों और परलोक की आबादी बढ़ाने का काम अधिकतर मर्द-ड्राइवर ही करते हैं ।

मि०गुप्ता: खैर, भटनागर साहब, यह ड्राइवर काफी समझदार जान पड़ता है, इसे आप नौकर रख ही लीजिये, यानी कि...

भटनागर: अगर आपकी और उषा की यही राय है, तो मैं कौन होता हूँ इन्कार करने वाला ।

मि०गुप्ता: तो अब कार के सौदे की भी आखिरी बात हो जाय, यानी कि...

भटनागर: मैंने तो छै हजार कह दिये हैं...

उषा : पहले कार की ट्राई तो हो जाय। संयोग से यह ड्राइवर आ गया है। (भटनागर से) इसे साथ लेकर आप नीचे जाइये और कार को चला कर अच्छी तरह जांच-पड़ताल कर लीजिये।

मि०गुप्ता: मुझे कोई आपत्ति नहीं, लेकिन जरा जल्दी...

भटनागर: बस, चल ही रहे हैं। कार के सब कल-पुर्जे ठीक हैं न ?

मि०गुप्ता: बिल्कुल नई कार है, यानी कि...

उषा : (हंसते हुए) स्पीड वाला मीटर ठीक काम कर रहा है न ?

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) वाह, मिसेज भटनागर, आपने भी क्या बात पूछी !

उषा : (हंसते हुए) बात यह है कि मैं अपनी कार को ज्यादा तेज नहीं चलने दूंगी। इनकी आदत तो...

भटनागर: (हंसते हुए) उषा, लगता है तुम्हें श्रीवास्तव की कार का ध्यान आ गया। उनके स्पीडोमीटर की सुई हमेशा ५० पर रहती है।

मि०गुप्ता: यानी कि स्पीडोमीटर खराब होगा।

भटनागर: हां, लेकिन मेरे दोस्त एकदम जीनियस हैं। उन्होंने बिना स्पीडोमीटर के कार की रफ्तार जानने का एक हिसाब बना रखा है। जब कार में लगा चाबियों का गुच्छा बजने लगता है, तो वह जान जाते हैं कि कार १५ मील प्रति घंटा की रफ्तार से जा रही है। २५ मील की स्पीड पर खिड़कियों के शीशे बजने लगते हैं और स्पीड ज्यों ही तीस मील पर पहुँची, सारी कार बजने लगती है। (सब हँसते हैं।)

मि०गुप्ता: (हंसते हुए) खैर, मेरी कार तो कबाड़ी की दूकान से नहीं आई ।

भटनागर: (हंसते हुए) वह तो मैं जानता हूँ । कार के सब कागज-पत्र तो आप साथ लाये ही होंगे ?

मि०गुप्ता: हाँ, यह रहे । (जेब से कागज निकाल कर दिखाता है ।)

भटनागर: कार का नंबर क्या है ?

मि०गुप्ता : ३३४५२ ।

भटनागर: (एक कागज पर लिखते हुए) ३३४५२ ।

उषा : आप ड्राइवर को साथ लेकर नीचे जाइये और... (टेलीफोन की घंटी बजती है ।) ठहरिये, मैं सुनती हूँ । (टेलीफोन की ओर जाते हुए) मनोरमा का होगा ।

भटनागर: ड्राइवर, तुम नीचे चलो, हम आते हैं ।

ड्राइवर : बहुत अच्छा, हुजूर ।

(ड्राइवर सीढ़ियों से नीचे उतर जाता है, दरवाजा बंद करते हुए ।)

उषा : (रिसीवर उठाकर) हैलो, मैं उषा भटनागर बोल रही हूँ । कौन सरोजिनी ? ऐं, क्या बात है, सरोजिनी बहन ? (घबराकर) क्या ? बच्चों को उठाने वाले लोगों का एक गिरोह आया हुआ है ? किसने बताया ? अच्छा । (मुर्दा-सी होकर) क्या कहूँ बहन, उसकी अब रक्षा कैसी ? (सिसकने लगती है ।) तीन बज गये और पप्पू स्कूल से लौटकर नहीं आया । हाय, ऐसे ही किसी गिरोह के हत्ये चढ़ गया होगा मेरा नाजों का पाला, मेरा फूल सा बच्चा... (रोते हुए, काँपते हाथों से रिसीवर रखकर बेदम-सी धरती पर बैठ जाती है ।)

मि०गुप्ता: (चौककर उठते हुए) मिसेज भटनागर, यानी कि.... ?

सदक पर

१७१

(मि० गुप्ता और भटनागर जल्दी से उठकर उषा के पास जाते हैं ।)

भटनागर: (घबराकर) क्या हुआ, उषा ?

उषा : (रोते हुए) हाय, वही हुआ, जिसका मुँह डर था । मेरे पप्पू को वे उठा कर ले गये ।

भटनागर: कौन ?

उषा : अभी मेरी सहेली सरोजिनी ने मुझे सावधान किया कि पप्पू को घर से बाहर न निकलने देना, शहर में बच्चों को उठाने वाला गिरोह घूम रहा है । हाय, जिसका खजाना लुट गया हो, उसे अब सावधान करने से क्या लाभ ! हाय, मैं लुट गई, बर्बाद हो गई । (रोती है ।) हाय, मेरा पप्पू !
(अन्दर से मोदूराम आता है ।)

मोदूराम : क्या हुआ पप्पू को, बीबीजी ?

उषा : (रोते हुए) होना क्या था, मेरे लाडले को, मेरे जिगर के टुकड़े को बनजारे उठा कर ले गए ।

भटनागर: (सिसकते हुए) हाय, मेरा बेटा !

मोदूराम : (सिसकते हुए) हाय, मेरा पप्पू राजा !

मि० गुप्ता: मि० भटनागर, जरा हौसले से काम लीजिये, यानी कि फौरन पुलिस को खबर करनी चाहिये, यानी कि...

भटनागर: अभी पुलिस-स्टेशन को फोन करता हूँ ।

(लंगड़ाता हुआ टेलीफोन के पास जाता है और फिर टेलीफोन डायरेक्टरी से नंबर देखकर रिसीवर उठाता है ।)

उषा : (रोते हुए) अरे, अब पुलिस को खबर करने से क्या होगा, कभी चोरी गया माल भी वापस मिलता है ?

भटनागर: (डायल घुमाकर) हैलो, क्या आप पुलिस स्टेशन से बोल रहे हैं ? मैं २१ सरजूगंज से शिवशंकर भटनागर बोल

रहा हूँ। हाँ, शिवशंकर भटनागर, २१ सरजूगंज से। मेरा लड़का पप्पू आज सवेरे मिस मैकिनटोश के स्कूल में पढ़ने गया था। छुट्टी के बाद अभी तक घर लौटकर नहीं आया। जी ? स्कूल से हम पता कर चुके हैं, वहाँ वह नहीं है। हमने सुना है कि शहर में बच्चों को उठाने वाला एक गिरोह आया हुआ है...। क्या कहा ? आपको किसी ऐसे गिरोह की खबर नहीं है ? नहीं साहब, हमें बड़े विश्वस्त सूत्र से खबर मिली है और हमारा खयाल है कि हमारे लड़के को उसी गिरोह ने ही गायब किया है। जी ? लड़के का हुलिया ? हुलिया लिख लीजिये। गोरा रंग, दायाँ गाल पर तिल, छरहरा बदन। आज वह क्या पहने हुए था ? ठहरिये, अभी बताता हूँ, (पत्नी से) उषा, आज पप्पू क्या पहन कर स्कूल गया था ?

उषा : (सिसकते हुए) सफेद कमीज।

भटनागर: (फोन पर) सफेद कमीज।

उषा : नीली नीकर।

भटनागर: (फोन पर) नीली नीकर।

उषा : नीली जुराबों पर सफेद बूट।

भटनागर: (फोन पर) नीली जुराबों पर सफेद बूट।

उषा : सिर से नंगा।

भटनागर: (फोन पर) सिर से नंगा। और हमेशा की तरह आड़ी माँग निकाले हुए। क्या आपने हुलिया नोट कर लिया ? उम्न ? यही कोई दस-ग्यारह वर्ष। हाँ हाँ, सभी उसे पप्पू कह कर पुकारते हैं। मेरा पता आपने नोट कर लिया न ? क्या कहा ? टेलीफोन नंबर ? मेरा टेलीफोन नंबर है ७३१४। हाँ हाँ, बड़ी कृपा होगी। हाँ, यह तो बहुत अच्छा

होगा । नमस्ते ।

(टेलीफोन पर हुई इस बातचीत के दौरान में मि० गुप्ता एक दो बार चौंकता है, उसके चेहरे का रंग एक दो बार बदलता है, लेकिन वह जल्दी ही अपने आपको संयत कर लेता है ।)

भटनागर: (रिसीवर रखते हुए) पुलिस इन्स्पेक्टर ने वायदा किया है कि वह अभी शहर की सभी पुलिस-चौकियों को खबर कर देंगे, शहर से जाने वाले सभी रास्तों पर नजर रखेंगे, और रेलवे पुलिस को भी इत्तिला कर देंगे, और.. और...

उषा : (सिसकते हुए) अरे, पुलिस वालों से क्या होगा ? आप खुद भी तो कुछ कीजिए ।

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, हमें खुद भी कुछ करना चाहिये । मैं जाता हूं ।

भटनागर: (घबराकर) कहाँ जा रहा है, मोटूराम ? पप्पू तो गया, अब तू भी . . . ।

मि०गुप्ता: यानी कि आप समझते हैं कि मोटूराम को भी कोई उठा कर ले जा सकता है । अरे, इसे उठाने के लिये तो क्रेन चाहिये, क्रेन ।

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, मैं पप्पू को ढूँढने जाता हूं ।

उषा : (सिसकते हुए) अरे, ठहर जा । मेरा बच्चा खो गया है और आप लोगों को मजाक सूझ रहा है । हे भगवान, कितने निर्दयी हैं ये लोग ! संसार में ममता और दया तो कहीं रह ही नहीं गई ।

भटनागर: (घिघियाते हुए) उषा !

मि०गुप्ता: मिसेज भटनागर, यों रोने-घोने से कुछ नहीं होगा, यानी कि . . .

उषा : यही तो मैं कह रही हूँ । (एकाएक उठकर) अच्छा, बाप बैठे रहे घर में अपाहिज बनकर, मैं जाती हूँ अपने लाल को जालिमों के पंजे से छुड़ाने । (सीढ़ियों की ओर जाती है ।)

भटनागर: (रोकते हुए) ठहरो उषा, मुझे एक बात सूझी है । मि० गुप्ता की कार नीचे खड़ी है, उसमें बैठकर मैं सारे शहर का चक्कर लगाता हूँ ।

उषा : म भी आपके साथ चलती हूँ ।

मि०गुप्ता: (कुछ सकपकाया-सा) लेकिन मैं तो आज रात की गाड़ी से जा रहा हूँ, यानी कि...

उषा : आप शौक से जाइये, कार तो अब हमारी हो गई ।

भटनागर: मैं अभी आपको छै हजार का चैक दे देता हूँ ।

मि०गुप्ता: छै हजार तो बहुत थोड़े हैं, मि० भटनागर, यानी कि...

उषा : ओह, इसी सौदेबाजी में समय बर्बाद हो रहा है । यहाँ एक-एक मिनट कीमती है । पता नहीं, मेरा पप्पू किस हाल में होगा ? आप कार रहने दीजिये, मैं टैक्सी लेकर जाती हूँ । मोटूराम, आ मेरे साथ ।

मि०गुप्ता: मिसेज भटनागर, आपने गलत समझा है, यानी कि कार तो अब आपकी हो गई । मैं आज रात की गाड़ी से जा रहा हूँ । और कोई गाहक कहां ढूँढ़ूंगा । लाइये, छै हजार ही दे दीजिये ।

उषा : जल्दी दीजिये चैक इन्हें, देर न कीजिये ।

मि०गुप्ता : हाँ, जल्दी लिख दीजिये, यानी कि मुझे घर जाकर अभी सामान वगैरा बांधना है, यानी कि मुझे भी बहुत जल्दी है, वरना...यानी कि...

(भटनागर मेज की दराज़ से धैक-बुक निकालकर लिखने के लिये बैठता है, तभी टैलीफोन की बंदी बजती

है । भटनागर चैक नहीं लिख पाता ।)

उषा : आप चैक लिखिये, मैं फोन सुनती । (जल्दी से रिसीवर उठाकर सुनती है ।) हाँ, हाँ, मैं २१ सरजूगंज से बोल रही हूँ । हाँ, मि० शिवशंकर भटनागर के घर से ।

भटनागर: कौन है, उषा ?

उषा : पुलिस-स्टेशन से कोई...(फोन पर) हाँ, हाँ, अपने लड़के पप्पू के खो जाने की रिपोर्ट हमने ही लिखवाई थी । जी ? हाँ, वह मिस मैकिनटोश के स्कूल से पढ़कर घर की तरफ आ रहा था...क्या कहा ? वह खोया नहीं ? तो कहाँ है मेरा पप्पू ? (घबराकर) क्या ? मेरा पप्पू बड़े अस्पताल में है...? एक्सीडेंट ? क्या ?

भटनागर : (दोनों चौककर) एक्सीडेंट ।
मोटूराम :

(उषा का रिसीवर वाला हाथ कांपने लगता है, मुँह से बात नहीं निकलती, बस, सुने ही जाती है । मि० भटनागर चैकबुक छोड़कर घबराया-सा लंगड़ाता हुआ उसके पास पहुँचता है । मोटूराम भी चिन्तित-सा आगे बढ़ता है । मि० गुप्ता के चेहरे का रंग उड़ चुका है । वह उठता है, फिर बैठता है । वह निश्चय नहीं कर पा रहा कि जाय या रुके । वह जल्दी से कार सम्बन्धी कागज उठाकर जेब में डालता है ।)

भटनागर: (घबराया-सा) पप्पू अस्पताल में है, उषा ? अरे, तुम्हारे तो हाथ-पैर काँप रहे हैं ! मैं सुनता हूँ फोन । मोटूराम, उषा को सोफे पर बैठा दे ।

(भटनागर उषा के हाथ से रिसीवर लेकर सुनता है ।
मोटूराम उषा को थामे हुए सोफे पर बैठाता है ।)

भटनागर: (फोन पर) हेलो, हेलो ! अरे, टेलीफोन तो बंद हो गया ।
(रिसीवर रखता है ।)

उषा : (रुंधे गले से) पुलिस वालों ने जो कुछ बताना था, सो बता दिया । मेरा पप्पू... !

(मि० गुप्ता उठकर चलने लगता है ।)

भटनागर: मि० गुप्ता, आप कहाँ जा रहे हैं ?

मि०गुप्ता: (कुछ बबराया-सा) मुझे देर हो रही है, यानी कि आज रात की गाड़ी से जाना है न । आपने चैक भी लिखा नहीं, यानी कि...

उषा : (सिसकते हुए) भाड़ में गई कार । हमें नहीं चाहिये कार । मेरा पप्पू बच जाय तो...

भटनागर: मि० गुप्ता, जरा रुक जाइये । पप्पू के एक्सीडेंट की खबर सुनकर मेरे तो हाथ-पाँव फूल गये हैं । उषा, पुलिस वालों ने क्या बताया ?

मोटूराम : हाँ, बीबी जी, क्या बताया ?

उषा : (सिसकते हुए) हाय, क्या बताऊँ, मुझसे तो बताया भी नहीं जाता । अस्पताल वाले चौराहे पर पप्पू एक कार के नीचे आ गया और....

भटनागर: किसकी कार के नीचे आ गया ? वह कार वाला पकड़ा गया कि नहीं ?

उषा : (सिसकते हुए) अरे, यह बाद में बातें होगी, पहले हमें चलकर पप्पू को देखना चाहिये ।

भटनागर: (अधीर-सा) कहाँ है पप्पू ?

उषा : बड़े अस्पताल में । हमें फौरन वहाँ पहुँचना चाहिये ।

भटनागर: गुप्ता साहब की कार में बैठकर हम फौरन वहाँ पहुँचते हैं ।
आइये, मि० गुप्ता ।

मि०गुप्ता: मि० भटनागर, आप लोगों की विपत्ति से मुझे बहुत दुःख हो रहा है, यानी कि मैं बयान नहीं कर सकता। लेकिन मैं आप लोगों के साथ अस्पताल नहीं जा सकता, यानी कि मुझे बहुत जल्दी है...।

भटनागर: आप अस्पताल के अन्दर न जाइयेगा, हमें अस्पताल के दरवाजे पर छोड़कर..

मि०गुप्ता: लेकिन मेरा रास्ता तो वह नहीं है, यानी कि...

उषा : आप क्यों मिन्नतें कर रहे हैं ? इन्हें हमारे दुःख से क्या !
ये तो अपनी कार बेचना चाहते हैं। नीचे सड़क पर कोई टैक्सी मिल जायगी। आइये, चलें। (डठकर चलने लगती है।)

मि०गुप्ता: मि० भटनागर, मैं चलता हूँ, यानी कि...

भटनागर: लेकिन कार ?

मि०गुप्ता: कार मैं नहीं बेचूंगा, यानी कि कार मैं अपने साथ ही ले जाऊंगा, (सीढ़ियों की ओर जाते हुए) अच्छा, तो...
(कॉल-बैल बजती है। मि० गुप्ता चौंककर, डरकर पीछे हटता है।)

उषा : (चौंककर) कौन आया ?

मि०गुप्ता: (घबराकर दहलाने हुए) पु...लि...स...

भटनागर: (बूट पहनते हुए) पुलिस ? मोटूराम, देख तो।

(मोटूराम सीढ़ियों वाला दरवाजा खोलता है और २०-२५ वर्ष का नौजवान रमेश अन्दर आता है।)

उषा : (चौंककर) कौन ? रमेश ?

भटनागर: मनोरमा कहाँ है, रमेश ?

रमेश : वह पप्पू को लिये हुए आ रही है।

उषा : (चौंककर) पप्पू को लेकर ? लेकिन पप्पू तो...

रमेश : हाँ, पप्पू अस्पताल में था। हम उसे वहीं से लाये हैं। कोई

चिन्ता की बात नहीं है ।

(मि० गुप्ता खुपके से सीढ़ियों की ओर बढ़ता है । रमेश आगे बढ़कर उसका रास्ता रोकता है ।)

रमेश : कहां जा रहे हैं, श्रीमानजी ? पुलिस से तो आप बचकर निकल आये, यहाँ से आप बचकर नहीं जा सकते ।

मि० गुप्ता: (हकब्लाते हुए) क्या मतलब, यानी कि...?

(सभी अचरज से कभी रमेश और कभी मि० गुप्ता के मुँह की ओर देखते हैं ।)

रमेश : अच्छा, तो आपको मतलब समझाना होगा । जिनके बच्चे की जान लेने की कीशिश की, उन्हींके घर में आकर पनाह ली !

भटनागर: (अचरज से) क्या ?

उषा : तो क्या रमेश, इन्हीं की कार से मेरे पप्पू का एक्सीडेंट हुआ ?

मोटूराम : ठीक है, ठीक है, अब यह मेरे हाथों से बचकर नहीं जा सकता ।

मि० गुप्ता: नहीं नहीं, यानी कि...(भय के मारे उसके मुँह से बात तक नहीं निकलती ।)

रमेश : अब नहीं-नहीं करने से क्या होगा ! मैं और मनोरमा जब पप्पू को ढूँढते हुए अस्पताल वाले चौराहे पर पहुँचे, तो वहां खड़े सिपाही से मालूम हुआ कि कोई सवा बारह बजे ३३४५२ नंबर की सलेटी रंग की कार के नीचे...

भटनागर: (चौंककर) मि० गुप्ता की कार का यही तो नम्बर है । अभी अभी मुझे इन्होंने लिखवाया था ।

(मि० गुप्ता बेदम-सा सोफे पर बैठ जाता है, हाथों में मुँह छिपाकर ।)

रमेश : और वही कार नीचे खड़ी है ।

सड़क पर

१७६

उषा : हाय, तो मेरे बेटे का हथूँआ मेरे ही घर में आकर दावत उड़ाता रहा ।

रमेश : हथूँआ न कहिये, चाची जी । पप्पू बाल-बाल बच गया है । सिर्फ सिर में और बाजू में मामूली-सी चोट आई है । (सीढ़ियों पर पाँव की आहट ।) यह लीजिये, आ गई मनोरमा उसे लेकर ।

(सीढ़ियों वाला दरवाजा खुलने पर मनोरमा पप्पू को उठाये हुए दिखाई देती है । पप्पू के सिर में पट्टी बँधी है, और बँधा हुआ हाथ पट्टी से गले में लटक रहा है, उषा और मि० भटनागर लपक कर उसे पकड़ते हैं । मोटूगम भी आगे बढ़ता है ।)

उषा : (गले से जगाते हुए) आ, मेरे लाल ! मेरे लिये तो तेरा आज नया जन्म हुआ है । (मनोरमा मि० गुप्ता को धूर कर देखती है ।)

भटनागर : (प्यार से) पप्पू बेटा !

उषा : देखूँ तो क्या हुआ मेरे लाल को !

पप्पू : मम्मी, मैं बिल्कुल ठीक हूँ । मामूली चोटें आई हैं ।

मनोरमा : मामूली चोटें आई हैं ! यह क्यों नहीं बताता कि कार से टकराने के बाद तू बेहोश हो गया था ।

उषा : तो क्या मेरा पप्पू बेहोश हो गया था ? हाय, कार और कार वाले का सत्यानाश हो ! (गुप्ता को गुस्से से देखती है ।)

मनोरमा : मम्मी, संयोगवश अस्पताल की दो नर्सें चौराहे पर खड़ी थीं । वे इसे फौरन उठा कर अस्पताल में ले गईं ।

रमेश : पहले तो हमें खयाल ही नहीं आया कि कार की लपेट में आने वाला बच्चा हमारा पप्पू ही होगा । फिर हमने

सोचा, चलकर देख लेने में क्या हर्ज है ।

मनोरमा : और अस्पताल में जाकर देखा तो पप्पू की मरहम-पट्टी हो रही थी ।

पप्पू : मम्मी, मैंने तो डाक्टर से कहा था कि मेरे डंडी को फोन कर दीजिये, लेकिन...

भटनागर: बटा, मैं तो तेरी चिन्ता से मरा जा रहा था ।

उषा : पप्पू, तेरे डंडी बिल्कुल झूठ बोलते हैं । यह तो मजे से खाते रहे ।

भटनागर: उषा, ऐसा तो न कहो । और हां, उषा, तुमने तो आज खाना ही नहीं खाया । मोटूराम, जा खाना लगा इनके लिये । पप्पू भी भूखा होगा ।

पप्पू : हां डंडी, बड़े जोर की भूख लगी है । मैं तो अस्पताल से आता ही न, परन्तु जब दीदी ने बताया कि मोटूराम आज फिर स्तीफा देने लगा था, तो मैं तुरन्त भागा अस्पताल से ।

मोटूराम : ठीक हैं, ठीक हैं ।

(सब हँसते हैं । मि० गुप्ता पूर्ववत् सिर झुकाये बैठा रहता है ।)

उषा : तो बेटा बाप की तरह तुम्हें भी मोटूराम की चिन्ता थी, माँ की नहीं, जो तेरे वियोग में मरी जा रही थी ।

पप्पू : मम्मी, आप तो कभी स्तीफा देंगी नहीं, लेकिन यह...

(कहकहा ।)

भटनागर: (हँसते हुए) मोटूराम जिन्दाबाद !

उषा : (डाँटकर) ऐसी ही बातों से तो आपने नौकर का दिमाग खराब कर दिया है । मोटूराम, पप्पू को अन्दर ले जाकर खाना खिला, मैं अभी आई ।

(मोटूराम पप्पू को साथ लेकर अन्दर जाने लगता है ।)

पप्पू : (जाते-जाते रुककर) डेडी, दीदी ने बताया है कि आप कार खरीद रहे हैं ?

भटनागर: हाँ बेटा, अब तू कार में बैठकर स्कूल जाया करेगा।

पप्पू : डेडी, मैं भी कार चलाना सीखूंगा।

भटनागर: (हँसते हुए) जरूर, जरूर।

रमेश : (हँसते हुए) चाचा जी, आपने तो वही बात की।

भटनागर: क्या ?

रमेश : किसी ने किसी देवी जी से पूछा, “क्यों बहन, तुम्हारा बच्चा चलना सीख गया ?” वह बोली, “नहीं बहन, अभी तो वह कार चलाना ही सीख रहा है।” (कहकहा।)

मोटूराम : ठीक हैं ठीक हैं।

भटनागर: क्या ठीक है, मोटूराम ?

मोटूराम : अगर पप्पू राजा भी कार चलाने लगे तो मुझे घर के अन्दर भी नोट-बुक और पैसिल हाथ में रखनी होगी।

(कहकहा।)

रमेश : क्या मतलब ?

मोटूराम : ठीक हैं, ठीक हैं, आप सब बैठिये, मैं पप्पू के सकुशल घर आने और कार खरीदे जाने की खुशी में आप सबको शाही हलुआ बनाकर खिलाता हूँ। (मोटूराम पप्पू को साथ लेकर अन्दर जाता है।)

उषा : हाँ, तो अब पुलिस को खबर कर दीजिये कि...

(गुप्ता इन शब्दों पर चौंकता है और प्रार्थना भरी नजरों से मि० भटनागर और उषा की ओर देखता है।)

मि० गुप्ता: मिसेज भटनागर, मुझे आप लोगों से क्षमा मांगनी है, यानी कि आपके बच्चे की चोटों के लिये मैं ही जिम्मेदार हूँ। मैं अपने किये पर बहुत लज्जित हूँ, यानी कि....

मनोरमा : (गुस्से-से) लेकिन जब आप पप्पू को सड़क पर बेहोश

छोड़कर पीछे भागते हुए सिपाही की विसल की परवाह न करते हुए कार को तेज करके निकल भागे थे, तब आपको...?

मि० गुप्ता: बेटी, क्या बताऊँ, मैंने मि० भटनागर के पास बारह बजे पहुंचने का वायदा कर रखा था और सवा बारह हो गये थे, यानी कि मैं जल्दी में था। अगर रुकता तो और देर हो जाती, यानी कि...

उषा : तो आपको खाने पर पहुंचने की जितनी चिन्ता थी, उतनी इन्सानी जान की नहीं। आपको दंड मिलना ही चाहिये। रमेश, पुलिस-स्टेशन में फोन कर दे कि...

मि० गुप्ता: (बबराकर) नहीं-नहीं, मिसेज भटनागर...।

भटनागर: (गर्म होकर) वाह साहब, आप तो एकदम हृदय-हीन निकले। इतनी देर से हम लोग पप्पू के लिये वावेली मचा रहे थे, आपने बताया तक नहीं कि उसके घर न पहुंचने का कारण आप ही हैं।

मि० गुप्ता: मि० भटनागर, आपका यह गुस्सा बजा है, यानी कि आपको मुझ पर नाराज होना ही चाहिये। लेकिन जरा सोचिये, मुझे क्या पता था कि मेरी कार के नीचे आने वाला लड़का आपका पप्पू ही था, यानी कि....

उषा : लेकिन जब आपको पता चल गया था, तब आपने भागने की कोशिश क्यों की ?

मि० गुप्ता: मिसेज भटनागर, इसे आप मेरी नैतिक कमजोरी कह सकती हैं, यानी कि मैं डर गया था, लेकिन मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि मैंने जान-बूझकर...

रमेश : श्रीमान जी, कोई भी कार, ट्रक या बस वाला जान-बूझकर सड़क पर लोगों का शिकार नहीं खेलता, लेकिन यह

जरूर है कि स्टीयरिंग व्हील को हाथ में लेते ही वह अपने आपको हवाई दुनिया का वासी और पैदल चलते लोगों को कीड़े-मकोड़े समझने लगता है ।

भटनागर: रमेश, तुम ठीक कह रहे हो । शुक्र है कि हमारा पप्पू सही-सलामत हमें मिल गया ।

उषा : लेकिन इन गुप्ता साहब ने तो अपनी तरफ से कोई कसर नहीं उठा रखी । अपनी लापरवाही का इन्हें दंड भुगतना ही होगा ।

रमेश : हां चाची, कानून इन्हें कभी मुआफ नहीं कर सकता ।

भटनागर: अरे भई, इस किस्से को अब छोड़ो भी । मि० गुप्ता अपने किये पर लज्जित है । बस, यह काफी है । क्यों उषा ?

उषा : हां, आगे के लिये यह प्रण करें कि ऐसी असावधानी से कभी कार नहीं चलायेंगे । हमारे बच्चे की तो भगवान ने रक्षा कर ही दी ।

रमेश : लेकिन, चाची....!

भटनागर: रमेश, खत्म करो इस मामले को यहीं । अभी मोटूराम शाही हलुआ बनाकर लाता है । (झोठों पर जुबान फेरता है । मि० गुप्ता एकाएक डठता है ।) अरे गुप्ता साहब, कहाँ चले ?

मि०गुप्ता: (टेलीफोन की ओर जाते हुए) कहीं नहीं ।

(उषा, मनोरमा, रमेश आदि सभी लोग हैरानी से गुप्ता की ओर देखते हैं ।)

मि०गुप्ता: (रिसीवर उठाकर) मि० भटनागर, पुलिस-स्टेशन का क्या नम्बर है ? यानी कि ..

भटनागर: क्यों, क्या बात है ?

मि०गुप्ता: खैर, छोट्टिये, मैं डायरेक्टरी में पुलिस-स्टेशन का फोन

नम्बर खुद ही देख लेता हूँ, यानी कि...(डायरेक्टरी खोलता है और नम्बर देखकर डायल घुमाता है ।)

भटनागर: लेकिन गुप्ता साहब, हमने तो आपको...

मि० गुप्ता: (फोनपर) हैलो ! क्या आप पुलिस-स्टेशन से बोल रहे हैं ? मैं भवानीप्रसाद गुप्ता हूँ । देखिये, कोई सवा बारह बजे अस्पताल वाले चौराहे पर मि० शिवशंकर भटनागर का लड़का पप्पू कार के नीचे आ गया था, यानी कि एक्सीडेंट हुआ था । हाँ, हाँ, वही । तो वह मेरी ही लापरवाही से मेरी ही कार के नीचे आया था । हाँ, हाँ, ३३४५२ मेरी ही कार का नम्बर है, यानी कि... क्या ? मैं इस समय बाबू शिवशंकर भटनागर के मकान २१ सरजूगंज में हूँ, यहीं मेरी कार खड़ी है । क्या ? जी, मैं अपने अपराध के लिये हर तरह की सजा भुगतने को तैयार हूँ, यानी कि...

(भटनागर, उषा, रमेश, मनोरमा हैरान-से, आवाक्-से मि० गुप्ता को देखते रहते हैं और पर्दा गिरता है ।)

समाप्त

